NOT FOR SALE

गुरु पूर्णिमा विशेषांक

जुलाई 2000

मूल्य : 18/-

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

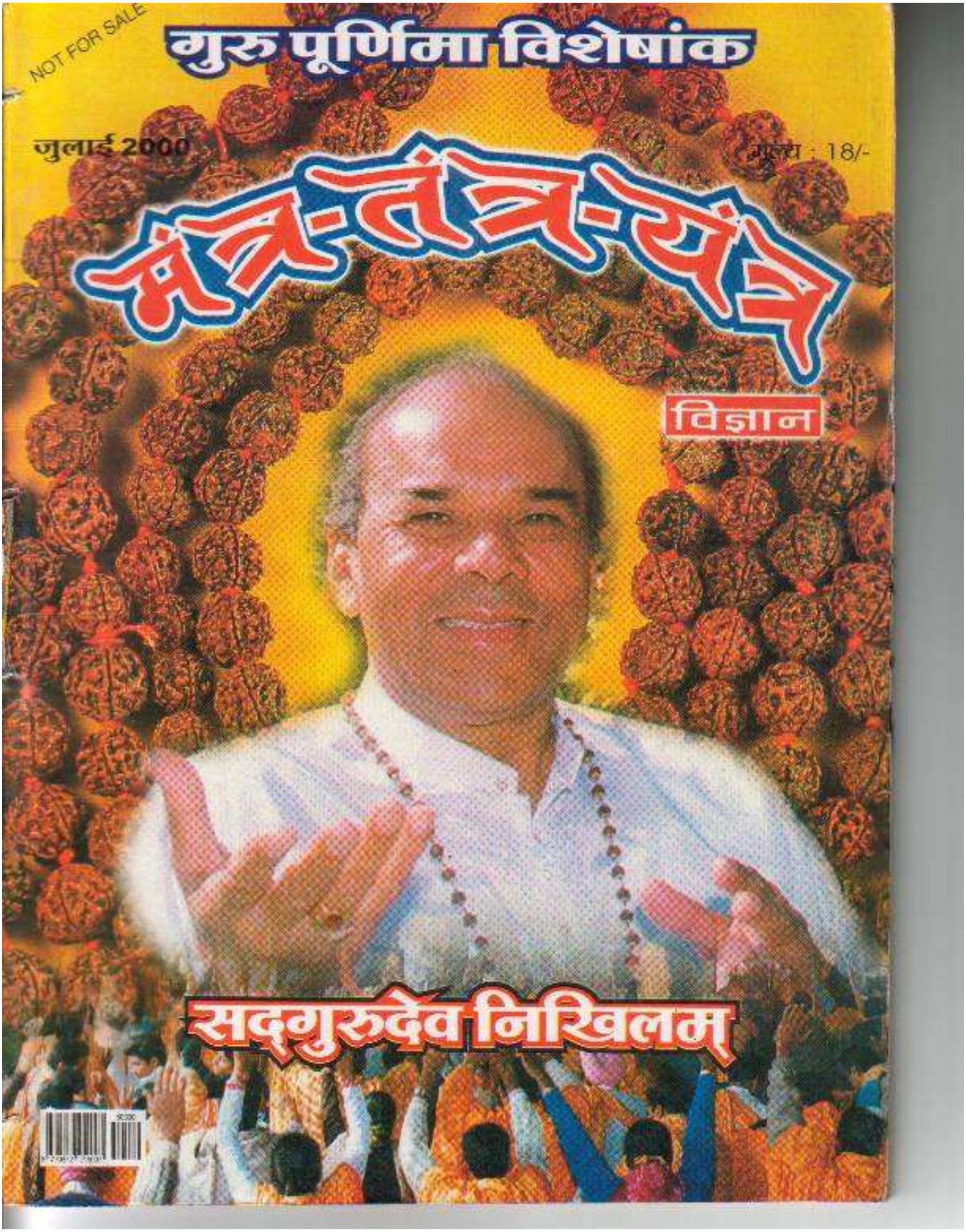

COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES
FIND ALL AT HTTPS://DSC.GG/DHARMA
Made with
By
Avinash/Shashi
[creator of
hinduism
server]
KAPWING

आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति, प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

आत्म-प्रकाश

॥ ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ॥

सद्गुरुदेव

सद्गुरु प्रवचन 5
गुरु वाणी 44

स्तम्भ

शिष्य धर्म 43
स्वास्थ्य सरिता 55
आपके पत्र 56
नक्षत्रों की वाणी 73
साधक साक्षी 58
मैं समय हूं 62
वराहमिहीर 63
इस मास दिल्ली में 80
एक दृष्टि में 86

वर्ष 20 अंक 7
जुलाई 2000 पृष्ठ 88

साधना

गुरु पूर्णिमा पूजन 21
विश्वामित्र लक्ष्मी साधना 27
षोडश योगिनी साधना 37
कृष्णं वन्दे जगद् गुरुं 46
पुरुषोत्तम साधना 47
आकर्षण मन्मथ साधना 48
सम्मोहन केशव साधना 48
इच्छापूर्ति साधना 49
मधुसूदन प्रयोग 49
बालगोपाल प्रयोग 50
देवेश प्रयोग 50
जनार्दन प्रयोग 50
हृषिकेश साधना 51
योगेश्वर साधना 51
महाबाहु प्रयोग 52
रक्षेश्वर साधना 64
सूर्य संक्रांति साधना 75
राहु साधना 82

आयुर्वेद

आयुर्वेद सुधा 60

विशेष

गुरु पूर्णिमा आह्वान 25
कृष्ण पूजन 30
सूर्य नमस्कार 67

विवेचन

गुरुः आराध्यदेव 23
आवश्यक तीन सूत्र 66
केनोपनिषद सार 70

स्तोत्र शक्ति

लक्ष्मी सूक्तम 33

प्रेरक संस्थापक
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी)

प्रधान सम्पादक
श्री नन्दकिशोर श्रीमाली

कार्यवाहक सम्पादक एवं संयोजक
श्री कैलाशचन्द्र श्रीमाली

व्यवस्थापक
श्री अरविन्द श्रीमाली

संपादन सलाहकार मंडल
डॉ० राम चैतन्य शास्त्री, श्री गुरु सेवक श्रीवास्तव, श्री रमेश पाटिल, श्री एस.के. मिथा, श्री आर.सी.सिंह, श्री गंगाधर महापात्र, श्री वसंत पाटिल, श्री सतीश मिथा (बम्बई), श्री एम. आर. वशिष्ठ, श्री सुधीर वेनोवेर, श्री विजय शास्त्री (हरियाणा), श्री कृष्णा गोड़ा (बेंगलोर), डॉ० एस. के. पीताल (नेपाल),

प्रकाशक एवं स्वामित्व
श्री कैलाशचन्द्र श्रीमाली
द्वारा
नीरू आर्ट प्रिन्टर्स
10/2, DLF, इंडस्ट्रियल एरिया, मोती नगर, नई दिल्ली से मुद्रित तथा
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर से प्रकाशित।

मूल्य (भारत में)
एक प्रति : 18/-
वार्षिक : 195/-

:: सम्पर्क ::
सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन: 011-7182249, टेली फैक्स : 011-7196730
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी जोधपुर-342001 (राज०) फोन 0291-432203 टेलीफैक्स : 0291-432010
WWW address – http/www.siddhashram.org E-mail add. – mtyv@siddhashram.org

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस 'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जाए, तो उसे संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु-संत होते हैं, अतः उनके पते के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में १९५/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें, जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी या संन्यासी लेखकों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

प्रार्थना

गुरौ सिद्धि गुरौ पूर्णं शक्तिपीठस्यथैव च।
यस्य साधक सौभाग्य पूर्णं सिद्धि न संशयः॥

गुरु ही सिद्धि है, गुरु ही पूर्ण है और जहां गुरु का निवास है, साधक के लिए वही शक्ति पीठ है। यदि ऐसे अवसर को प्राप्त कर साधक गुरु के समीप बैठ कर साधनाएं सम्पन्न करता है, तो वह निश्चय ही सौभाग्यशाली है और साधनाएं सम्पन्न करने पर वह पूर्ण सिद्ध बनता ही है, इसमें कोई संशय नहीं है।

❋ आखिरी सत्य ❋

एक बार सुकरात अपने शिष्यों को ज्ञान दे रहे थे और उनकी जिज्ञासाओं का समाधान भी कर रहे थे। जब वे अपनी बात समाप्त कर चुके, तो उन्होंने अपने शिष्यों से कहा – यदि किसी के मन में अब भी कोई संशय या प्रश्न शेष हो, तो वह पूछ सकता है।

यह सुन कर एक शिष्य ने, जो उनके पास काफी समय से रह रहा था और अपने आपको काफी ज्ञानवान भी समझने लग गया था, उसने कहा – गुरुजी! आप मुझे बताइये, कि चांद में धब्बा क्यों है? मैं यह भी जानना चाहता हूं, कि दीपक के नीचे अंधेरा क्यों होता है?

जब सुकरात ने इन दोनों प्रश्नों को सुना, तो वे अत्यधिक व्यथित हो गए और दुःखी मन से कहा – तुम्हें मेरे पास रहते इतना समय हो गया, लेकिन अभी भी तुम ज्ञान की पहली सीढ़ी पर अटके हुए हो।

यह सुन कर वह शिष्य अत्यन्त दुःखी हुआ, उसे ऐसी किसी टिप्पणी की अपेक्षा नहीं थी। वह अपने आपको काफी ज्ञानवान मानता था, अतः इससे उसके अंह को भी ठेस पहुंची।

उसने सुकरात से कहा – मैं इतने समय से आप से ज्ञान अर्जित कर रहा हूं, फिर भी आपने इन शब्दों से मुझे अत्यन्त दुःख पहुंचा है।

सुकरात ने जवाब दिया – मुझे भी तुम्हारे सवाल से बहुत दुःख पहुंचा है। काश! कि तुमने पूछा होता, कि चांद में चांदनी क्यों है? दीपक में इतनी रोशनी क्यों है?

– फिर मैं तुम्हें जीवन के अनन्त रहस्यों में से कुछ मोती चुन कर देता, फिर मैं तुम्हें बताता, कि जीवन क्या होता है? जीवन का अर्थ क्या है?

– क्योंकि जब तुम किसी की बुराइयों पर ध्यान देते हो, बुराइयों पर चिंतन करते हो, तो जाने अनजाने में ही उन बुराइयों के कुछ अंश अपने अन्दर उतार लेते हो और फलस्वरूप तुम्हारे अन्दर बुराइयां बढ़ती जाती हैं . . . और जब तुम किसी की अच्छाइयों में वृद्धि देते हो, अच्छाइयों का चिंतन करते हो, तो फिर तुम्हारे अन्दर भी अच्छाइयों में वृद्धि होती जाती है।

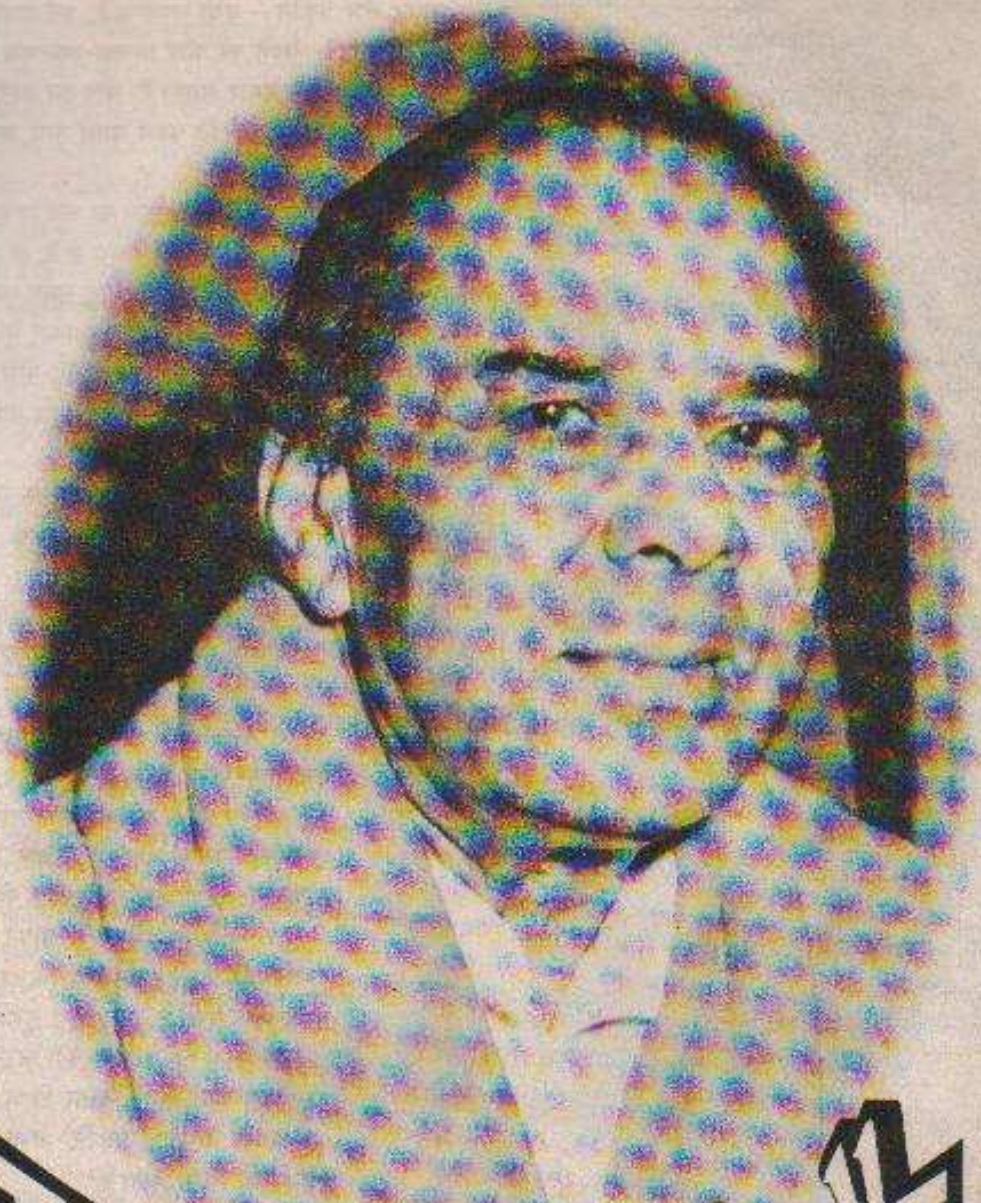

मानव से देवत्व की ओर

मानव और प्रकृति – क्या सम्बन्ध है, इन दोनों के बीच? क्या प्रकृति का मानव-जीवन पर कोई प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष प्रभाव है? इस प्रकार के अनेकों प्रश्न हमारे सामने हैं, और इन प्रश्नों का उत्तर ज्ञात करने के लिए आवश्यक है, कि पहले जाना जाय, प्रकृति कहते किसे हैं।

अगर आप समझते हैं, कि प्रकृति का अर्थ मात्र पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, पर्वत, नदी, सागर अथवा हिमालय ही है, तो आप गलत सोचते हैं, क्योंकि ये सब प्रकृति नहीं, अपितु सर्वत्र व्याप्त परब्रह्म की प्राणश्चेतना के विभिन्न स्वरूप हैं। जिस प्रकार प्रत्येक मानव इस प्राणश्चेतना से पूरित है, उसी प्रकार पेड़-पौधे, पशु और यहां तक कि पत्थर और हिमालय जैसे ऊंचे पर्वत भी इस प्राणश्चेतना से ही अभिभूत हैं।

प्रकृति के वास्तविक स्वरूप को पहली बार स्पष्ट किया था "आद्य शंकराचार्य" ने, जब उनके समक्ष यही प्रश्न रखे गये –

– क्या प्रकृति और साधक एक हैं?

– क्या इन दोनों में कोई भेद है?

– क्या इनमें कोई गहरा सम्बन्ध है?

भगवतपाद आद्य शंकराचार्य ने अपने ग्रंथ 'शंकरभाष्य' में उल्लेख किया है, कि प्रकृति से तात्पर्य है – नैतिक, आध्यात्मिक तथा मानवीय मूल्य। जीवन के विचार, चिंतन तथा धारणा को ही प्रकृति की संज्ञा दी गई है।

दैनिक जीवन में आपने किसी को जरूर कहते हुए सुना होगा, कि उसकी प्रकृति अच्छी नहीं है, इसलिए तुमको उससे बोलचाल एवं मित्रता नहीं करनी चाहिए, परन्तु कभी आपने विचार किया, कि किसी व्यक्ति के लिए 'प्रकृति' शब्द का प्रयोग क्यों किया जाता है?

मान लो मैं तुमसे कहूं – "तुमको इस व्यक्ति से मिलना चाहिए, इसकी प्रकृति अच्छी है, यह समझदार है, व्यर्थ किसी से लड़ता भी नहीं, परन्तु बाहर जो पान वाला है, उसकी प्रकृति सर्वथा विपरीत है। साधना के माध्यम से हमने जो स्तर प्राप्त किया है, वह उस स्तर से काफी नीचे है।"

यहां प्रकृति का तात्पर्य पेड़-पौधे नहीं, अपितु इस शब्द का गूढ़ अर्थ है, कि जीवन को आप किस रूप में लेते हैं।

मानव जाति को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। पहले हैं वे व्यक्ति, जो हमेशा निद्रा में डूबे रहते हैं। अधिकांश मनुष्य इसी प्रकृति के हैं, तुम में से भी अधिकतर चौबीस घंटे नींद में डूबे रहते हैं। तुम चलते हो, खाते हो, देखते हो, परन्तु ये सभी कार्य एक निद्रावस्था में ही करते रहते हो . . . ऐसा मैं इसलिए कह रहा हूं, क्योंकि तुमको ज्ञात ही नहीं, और न ही तुम में यह जानने की इच्छा ही है कि भविष्य में तुम्हारे जीवन में क्या घटित होने वाला है?

– क्या है जीवन का उद्देश्य?

– क्या है जीवन का महत्व?

– क्या है जीवन का वास्तविक चिंतन?

इन प्रश्नों पर हम कभी विचार ही नहीं करते।

व्यक्ति जीवन-पथ पर चलता रहता है, और उसके समीप से हजारों लोग गुजरते रहते हैं, परन्तु वह एक निद्रा में अपनी राह चलता रहता है, बिना यह जाने, कि इस पथ पर उसके हम सफर कौन हैं।

मनुष्य राक्षस वृत्तियों से इतना प्रभावित हो जाता है, कि उसे इस बात का भी भान नहीं रहता, कि किससे कैसा व्यवहार करना चाहिए, उसके क्या आदर्श होने चाहिए, क्या विचार होने चाहिए?

इस प्रकार के जीवन को शास्त्रों में 'भ्रम' तथा 'माया' कहा गया है, और '**दुर्गा सप्तशती**' में कहा गया है –

या देवी सर्वभूतेषु निद्रा रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥

सम्पूर्ण मानव जाति माया के आवरण में आबद्ध सुप्तावस्था में स्थिर है। इसी कारण सभी निराधार उद्देश्यों को ही पूर्ण करने की होड़ में लगे हैं, ऐसा जीवन वास्तव में लक्ष्यहीन है, तथा पूर्णतः माया से आबद्ध है।

इसलिए धन और निद्रा दोनों को ही माया कहा गया है। इस संसार में व्यक्ति के विचार उसके स्वार्थ के ही प्रतिबिम्ब हैं, और इसी कारणवश जीवन के वास्तविक चिंतन को वह पकड़ नहीं पाता, नहीं जान पाता, कि मानव-जीवन का क्या तथा कितना महत्व है।

जरा विचार करें – ''क्या हमारे जीवन का लक्ष्य, उद्देश्य निद्रा में लीन रहना ही है?''

बिना उद्देश्य के, बिना किसी चिंतन के हम एक जीवन के बाद दूसरा जीवन भ्रम के वशीभूत हो व्यतीत कर देते हैं, परन्तु जिस क्षण हम अपने-आप को माया से परे करते हैं, तो प्रकृति से जुड़ जाते हैं, जितना हम सांसारिक भ्रमों से दूर होते जाते हैं, उतना ही अपने को प्रकृति के निकट पाते हैं . . . और यही मार्ग है तंत्र का।

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

'ईश्वर' को भी प्रकृति का वास्तविक स्वरूप बताया गया है, क्योंकि वह माया से परे है। इसी कारण ईश्वर सान्निध्य प्राप्त करने का अर्थ है – भ्रमों से, माया से मुक्ति। इसका तात्पर्य यह, कि 'माया' तथा 'प्रकृति' दो भिन्न-भिन्न शब्द हैं।

जहां भी माया है, वहां 'मीन' है, मीन का अर्थ है – अहं और घमंड। ऐसे चिंतन के वशीभूत हो व्यक्ति सोचता है, कि वही सबसे शक्तिशाली है . . . कौन मेरा क्या बिगाड़ सकता है।

वह सोचता है . . . ''कुछ भी तो मेरे लिए सम्भव नहीं . . . जिस दिन मेरे पास धन आ जायेगा, उस दिन देखूंगा, कि कौन मेरे सामने टिक पाता है . . . आज मेरे पास कुछ नहीं है, तो क्या? कभी न कभी तो मैं अवश्य ही सभी कुछ प्राप्त कर लूंगा।''

तुम अपने-आप को झूठी सांत्वना देते हो, कि आज तुम्हारे पास सुख नहीं है, परन्तु एक दिन ऐसा आयेगा, जब तुम अवश्य ही समृद्धि प्राप्त कर लोगे। यदि कोई व्यक्ति अपनी स्त्री से संतुष्ट नहीं हो पाता, तो वह पर-स्त्री से सुख की आकांक्षा करता है, और अगर वह भी उसे सुख नहीं दे पाती, तो वह वेश्या के पास चला जाता है।

मात्र कुछ क्षणों के विषय-सुख के लिए वह इतना नीचे गिर जाता है . . . और इस प्रकार का निम्न जीवन जीते हुए वह मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, क्योंकि वह सुखों को खोजता है माया में।

माया से रहित जीवन की ओर पहला कदम है मन में यह विचार उठना, कि मुझे कहीं शांति से जाकर बैठना चाहिए। एक ध्यान कक्ष बनाया ही इसलिए जाता है, कि उसमें बैठे व्यक्ति तक कोई शोर, कोलाहल न पहुंचे, तथा वहां शांति से बैठ कर व्यक्ति कुछ क्षण चिंतन कर सके – वह कौन है और क्यों है? इतना सोचना, मात्र भी माया से एक इंच परे हटना है, क्योंकि इसी अवस्था में यह ज्ञात होता है, कि तंत्र का लक्ष्य और जीवन का उद्देश्य है – तीसरे नेत्र का खुलना तथा छठी इंद्रिय का जागरण, जो व्यक्ति इस चिंतन को प्राप्त नहीं करता, वह सदैव मायाजाल में ही फंसा रहता है। इसी कारण व्यक्ति तब तक साधक, पूजक, तांत्रिक नहीं बन सकता, जब तक कि वह प्रकृति से एकात्मयता नहीं स्थापित कर लेता।

साधक बनने की ओर पहला कदम है – अपनी सम्पूर्ण वृत्तियों का त्याग। वह इसलिए, क्योंकि शास्त्रों में कहा गया है – शिष्य बनने की प्रक्रिया मृत्यु के समान है . . . मृत्यु! . . . अहं की मृत्यु, वासनाओं की मृत्यु तथा घमंड की मृत्यु।

'तैत्तरियोपनिषद' में कहा गया है – ''जिस क्षण व्यक्ति अपने वास्तविक स्वरूप को जानने का प्रयत्न

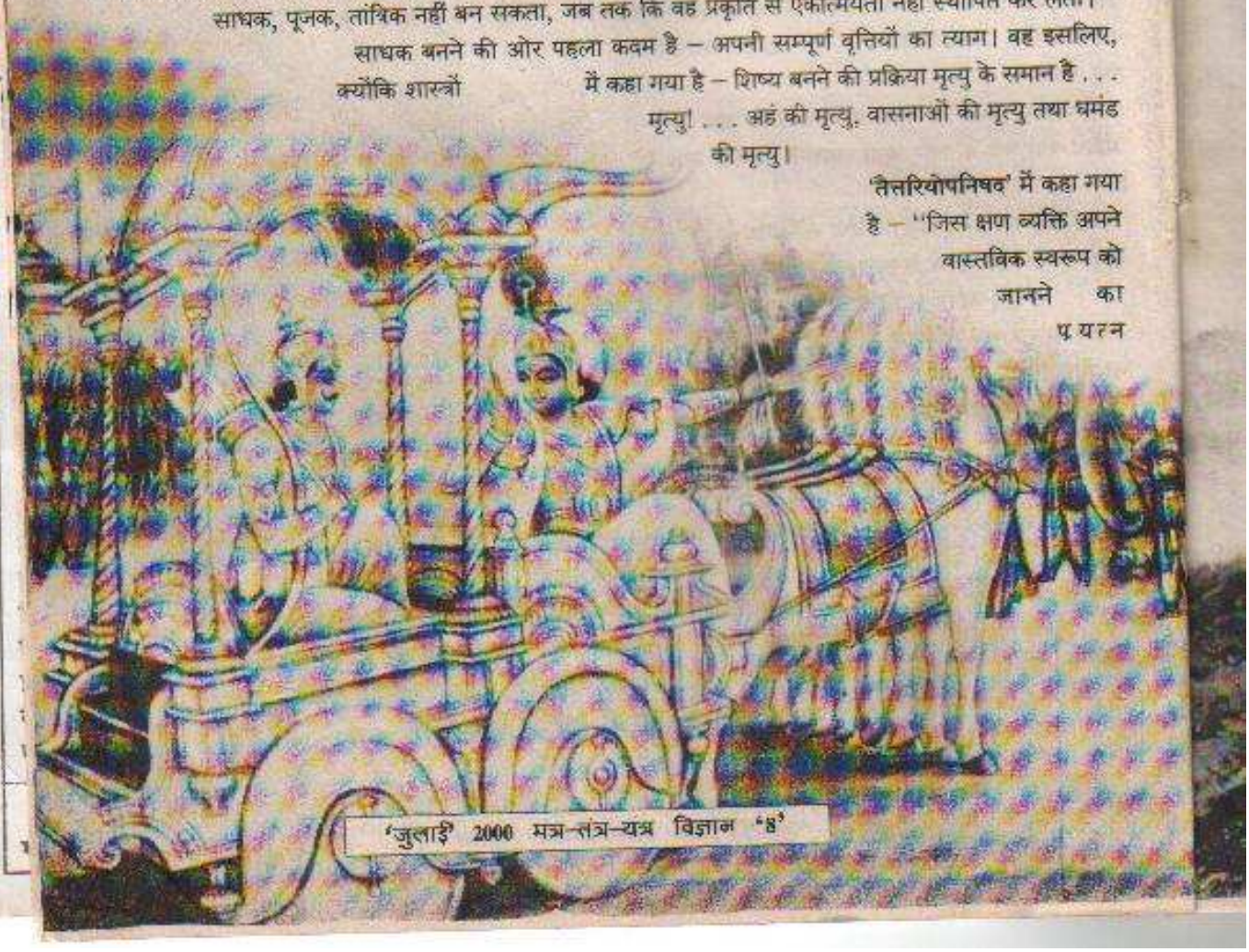

करने लगता है, उसी क्षण वह माया से दूर होना प्रारम्भ कर देता है, यही तरीका है प्रकृति से एकरूप होने का, अपना सही स्वरूप जानने के लिए बाह्यः किसी से सहायता की आवश्यकता नहीं।''

नींद और मृत्यु एक दूसरे के प्रतिरूप ही हैं। मृत्यु चिर निद्रा ही तो है, परन्तु मृत्यु से पूर्व जीवित रहते हुए भी हम इस निद्रा में लीन रहते हैं, और अपनी कल्पनाओं के जाल में खोये-खोये जीवन यों ही बिता देते हैं।

मानव अपना पूर्ण जीवन छल, झूठ, पाप के दल-दल में व्यतीत कर देता है, और जब वह जीवन के अंतिम क्षणों में पहुंचता है, तब उसे पश्चाताप होता है, कि उसने अपना पूरा जीवन नष्ट कर दिया तथा अपने-आप को कभी पहिचानने का प्रयत्न नहीं किया, तभी उसे एहसास होता है, कि पत्नी, बच्चे, धन-दौलत . . . कुछ भी तो उसका नहीं!!

एक बार किसी ने मुझसे पूछा – ''साधक का प्रकृति से क्या सम्बन्ध है?''

इसका उत्तर है – ''बिना प्रकृति से एकरूप हुए व्यक्ति साधक नहीं बन सकता, और जब तक तुम सांसारिक मायाजाल से दूर नहीं हो जाते, तब तक प्रकृति के निकट नहीं पहुंच सकते। सामान्यतः मानव के पास उसकी कल्पनाओं के अतिरिक्त कुछ और नहीं होता, और वास्तव में माया ही हमारी कल्पनाओं का आधार है।''

गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं – ''अर्जुन ! जब तुम अपनी अंतः प्रज्ञा जाग्रत कर स्थितप्रज्ञ हो जाओगे, तो तुम्हारे सभी भय दूर हो जायेंगे, तब तुम जान सकोगे, कि तुम्हारे सामने कुछ नहीं है, और जो भी तुम्हारे समक्ष खड़े हैं, उनसे तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं है, तभी तुम यह युद्ध कर सकोगे, जीत सकोगे।''

तुम्हारे सामने भी एक युद्ध है – जीवन का युद्ध। इस युद्ध में अट्ठानवे प्रतिशत लोग हार जाते हैं, क्योंकि उनके साथ कृष्ण जैसा कोई व्यक्तित्व नहीं, जो उन्हें मार्गदर्शन दे सके, गीता के उपदेश दे सके।

श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं – ''अपना गांडीव उठाओ।''

– ''कैसे उठाऊं गांडीव ? कैसे चलाऊं बाण? मेरे सामने मेरे पितामह खड़े हैं, जिन्होंने बचपन से मुझे अपनी गोद में उठाया है।''

– ''गोद में उठाया है, तो क्या? ये वास्तव में तेरे पितामह नहीं। इस जीवन से पहले ये एक सौ पच्चीस बार तेरे पितामह बन चुके हैं, पच्चीस बार तेरे बेटे बने होंगे, पच्चीस बार तेरे पिता . . . पच्चीस बार शत्रु . . . अगर यह युद्ध तुम्हें जीतना है, तो स्थितप्रज्ञ बनना होगा, और अगर हारना ही है, तो तुम्हारी इच्छा।''

मैं भी तुम्हें यही तथ्य समझा रहा हूं, कि यह जीवन महाभारत के युद्ध के समान है, हजारों शत्रु तुमसे युद्ध करने में तल्लीन हैं, इन सबको तुम्हें पराजित करना है। आशा है मेरे शब्दों के गूढ़ अर्थ को तुम समझ पा रहे होगे।

जीवन के इस युद्ध में तुम्हें इसी जन्म में विजय प्राप्त करनी होगी – जिस क्षण यह विचार तुम्हारे मस्तिष्क में स्थान पा लेगा, तुम इस युद्ध में विजय हासिल करने की क्षमता प्राप्त कर लोगे।

ये सब सगे-सम्बन्धी, धन-

दौलत, ऐश्वर्य और सुख मात्र भ्रम है। अपने चारों और तुम जिस मृगमरीचिका को देखते हो, उससे तुम्हें कोई लाभ नहीं होने वाला। अधिकतर व्यक्ति निद्रावस्था में ही स्वप्न देखते हैं, परन्तु तुम तो जागते हुए भी दिवास्वप्नों में खोये रहते हो। ये स्वप्न, ये कल्पनायें कभी सत्य नहीं हो सकतीं। अगर ऐसा होता, तो आज विश्व के हर व्यक्ति के पास कार होती, जबकि वास्तविकता यह है, कि एक अरब लोगों में केवल पचास लाख गाड़ियां हैं, तो क्या यह मात्र स्वप्न नहीं, कि तुम दो-दो कारों की कामना कर रहे हो?

– इसलिए मैं कहता हूं, कि तुम जागते हुए भी सो रहे हो।

– तुम्हारी दो आंखें अवश्य खुली हैं, परन्तु तीसरी आंख अर्थात दिव्य चक्षु बंद है। जब भी तुम कुछ क्षण खाली होते हो, तो स्वप्न लोक में खो जाते हो। हजारों-लाखों मनुष्य इस प्रकार दिवास्वप्नों में खोकर अपना जीवन व्यतीत करते हैं।

अमेरिका में व्यक्ति बीस बार विवाह करता है और हर बार तलाक लेता है। वह सोचता है, कि अगली बार अवश्य ही उसे वैवाहिक सुख प्राप्त होगा, परन्तु सत्य यह है, कि अगर उसे सुख की ही आकांक्षा थी, तो पहले विवाह द्वारा ही प्राप्त कर लेता। जिसे वह असली सुख समझता है, वह मात्र उसकी कल्पना है।

इसी प्रकार तुम भी अपना जीवन भ्रम में जी कर व्यर्थ व्यतीत कर रहे हो, इस प्रकार के जीवन में कोई नवीनता नहीं है, इस अवस्था में पहुंचने के लिए कोई विशेष प्रयत्न, कोई परिश्रम नहीं करना पड़ता, क्योंकि भ्रम तो मात्र कल्पना का [illegible] है।

मानव शरीर की जलाने के बाद केवल एक मुट्ठी राख बचती है, यही तुम्हारे शरीर का असली मूल्य है।

जिस प्रकार का चिंतन अभी तुम्हारे मन में चल रहा है, वह तुम्हें निरन्तर मृत्यु की ओर धकेल रहा है।

जब तुम यह जानोगे, कि तुम्हें जीवन के उस पथ पर चलना है, जो कि प्रकृति, ईश्वर, ब्रह्म की ओर ले जाता है, तब तुम्हारे जीवन से माया का आवरण अपने-आप ही हट जायेगा . . . और जितना अधिक तुम प्रकृति के समीप जाओगे, उतने ही तुम साधक बन पाओगे, इसीलिए प्रकृति और साधक को समानार्थक बताया गया है।

अगर तुम समझते हो, कि आरामदायक मखमल के गद्दे पर बैठ तुम ईश्वर के नाम का जाप कर सकोगे, तो तुम्हारा यह सोचना गलत है, तुम ऐसा अवश्य कर सकते हो, परन्तु इससे तुम्हें लाभ क्या होगा?

जब तुम सांसारिक सुखों से विमुक्त होकर, प्रकृति से एकरूपता स्थापित कर लोगे, तभी ब्रह्म से साक्षात्कार कर पाओगे, और तभी तुम जान पाओगे, कि जीवन वास्तव में क्या है।

बुद्ध भी अपने पुत्र, पत्नी, परिवार का त्याग कर ही दिव्यता का बोध प्राप्त कर सके थे। तभी उनकी छठी इंद्रिय, उनका सहस्रार जाग्रत हुआ और उन्होंने इस परम सत्य को जाना।

– मनुष्य प्रकृति के साथ एकात्मकता स्थापित कर सकता है।

– अपने शरीर में ही प्रकृति को उतार सकता है।

जब उन्हें दिव्य ज्ञान, बुद्धत्व की प्राप्ति हुई, तब अपने राज्य में वापिस लौटे और वे सबसे पहले अपने महल में पहुंचे। साधारण वस्त्र पहने जब उन्होंने अपने महल में प्रवेश किया, तो सामने अपनी पत्नी यशोधरा तथा अपने पुत्र राहुल को पाया।

यशोधरा ने कहा – "तुम आ गये सिद्धार्थ बहुत हर्ष हुआ, आओ मेरे पास बैठो।"

बुद्ध ने कहा – "कौन सिद्धार्थ?"

– "मैं तो एक भिक्षुक हूं तथा भिक्षा मांगने आया हूं। मैं आया हूं यह देखने के लिए, कि मेरे मन में तुम्हारे प्रति अभी भी कोई भाव तो नहीं। मैं जानना चाहता हूं, कि मैंने कितना अपने-आप को समझा है, कितना मैं अंदर उतरा हूं। अगर मैंने सत्य को जाना है, अगर मैंने अंतः प्रज्ञा को पूर्ण जाग्रत किया है, तो मेरे मन में यह भाव नहीं आयेगा, कि तुम मेरी पत्नी हो। एक दिन तो मृत्यु के साथ यह भाव समाप्त होना ही है, तो क्यों न मैं इसे अभी, इसी क्षण समाप्त कर दूं।"

मैं समझता हूं, कि बुद्ध प्रकृति और यशोधरा माया स्वरूपा थीं। दोनों एक-दूसरे के सामने खड़े थे, परन्तु बुद्ध की स्थित प्रज्ञता

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

पर उसका कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं हुआ।

उन्होंने सोचा – "इन भावनाओं का एक न एक दिन तो अंत होना ही है। आज नहीं, तो बीस वर्ष बाद मेरी मृत्यु होगी तथा मेरे शरीर को अग्नि में समर्पित होना ही पड़ेगा, तब यशोधरा और राहुल दोनों रोयेंगे और दुःखी होंगे। यह तो एक दिन होगा ही, तो क्यों न मैं इन सांसारिक बंधनों को आज से ही समाप्त कर दूं।"

बुद्ध ने वास्तव में ज्ञान चक्षुओं को खोल कर अपना जीवन व्यतीत किया। जो व्यक्ति ऐसी जाग्रत अवस्था में नहीं है, वह मायाजाल में जकड़ा रहता है, परन्तु जिस क्षण वह अपनी आत्मा जाग्रत करने की क्रिया प्रारम्भ करता है, जिस क्षण वह साधना के मार्ग को चुनता है, उसका वास्तविक निर्मल स्वरूप स्पष्ट होकर उभरता है।

ठीक इसी प्रकार तुम भी अपनी असली प्राकृतिक छवि को जाग्रत कर सकते हो, और यही छवि तो ब्रह्म की है, जिसका साक्षात्कार कर तुम अखण्ड आनन्द और शांति प्राप्त कर सकते हो। इस प्रकार तुम अपने लक्ष्य, ज्ञान एवं बुद्धत्व को प्राप्त कर सकते हो, और यह सत्य है, कि हर कोई बुद्ध बन सकता है।

परन्तु ऐसा चिंतन प्राप्त करने के बाद भी हो सकता है, कि तुम श्मशान में पहुंच जाओ, मृत्यु कोई नई चीज नहीं है। जो हमेशा निद्रावस्था में जीते हैं, मृत्यु तो उनकी भी होती है, इसलिए आत्म-जागरण के बारे में सोचने मात्र से कुछ नहीं होगा। तंत्र और छठी इंद्रिय के बारे में पढ़ने मात्र से तुम आत्म-साक्षात्कार नहीं कर पाओगे, उसे प्राप्त करने के लिए तो तुमको ही कुछ करना होगा।

मैं समझता हूं, कि जब तुम कहते हो, कि तुम योगी अथवा साधक हो, तो यह मात्र प्रवंचना है। तुम अगर कहते हो, कि तुम शिष्य हो, तो तुम्हें ज्ञात होना चाहिए, कि साधक से अगली अवस्था शिष्य बनने की है। शिष्य बनने के लिए यह आवश्यक है, कि तुम्हें ठोकर लगे, क्योंकि ऐसा होने पर ही तुम्हारी तंद्रा भंग होगी, ठोकर लगने पर ही तुम सचेत होओगे, पर यह नहीं कहा जा सकता, कि जीवन में कब तुम्हें यह ठोकर लगे।

अर्जुन को चालीस साल की उम्र तक ठोकर नहीं लगी, परन्तु इक्तालीसवें वर्ष कृष्ण ने उसे झकझोरा – "जो ये सांसारिक बंधन तुम देख रहे हो, ये सब मिथ्या हैं। तुम्हें अपने

सम्बन्धियों को मारना ही पड़ेगा, इनकी मृत्यु तो निश्चित है ही, तुम नहीं मारोगे, तो कोई और मारेगा।''

बुद्ध को भी ठोकर लगी। एक दिन वह अपने नगर में अपने रथ से गुजर रहे थे, तो उन्होंने एक हृष्ट-पुष्ट जवान व्यक्ति को देखा। कुछ देर बाद उन्होंने एक और आदमी को देखा, जो बिल्कुल असहाय, कमजोर तथा वृद्ध था।

सिद्धार्थ ने सारथी से पूछा – ''यह कौन है?''

सारथी ने कहा – ''यह एक वृद्ध व्यक्ति है।''

सिद्धार्थ ने कभी भी ऐसा कमजोर, बूढ़ा व्यक्ति नहीं देखा था। उन्होंने इक्कीस साल की उम्र तक अपना पूरा जीवन अपने महल के ऐश्वर्य और सुख में व्यतीत किया था। यह पहला अवसर था, जबकि वे अपने महल से बाहर आये थे।

आश्चर्य से भरे स्वर में उन्होंने फिर प्रश्न किया – ''वृद्ध से तुम्हारा क्या तात्पर्य है?''

सारथी बोला – ''उम्र की अधिकता तथा रोगों से शरीर ढलने के कारण व्यक्ति वृद्ध हो जाता है . . . जो भी युवा है, वह एक न एक दिन अवश्य वृद्ध होगा।''

''तो क्या मैं भी बूढ़ा हो जाऊंगा?'' – सिद्धार्थ ने हतप्रभ हो पूछा।

– ''अवश्य।''

रथ आगे बढ़ चला और कुछ ही दूरी पर कुछ लोग एक शव को कंधों पर उठाये लिए जा रहे थे।

सिद्धार्थ ने पूछा – ''यह क्या है?''

सारथी बोला – '' कोई मर गया है, उसी का शरीर है यह।''

– ''इसे कहां ले जा रहे हैं?''

– ''जलाने के लिए।''

– ''क्यों?''

–'' क्योंकि यह बूढ़ा हो गया था और अब मर गया है।''

सिद्धार्थ ने आश्चर्य से पूछा – ''तो क्या मरने के बाद व्यक्ति को जला देते हैं?''

– ''हां! जला देते हैं, और कोई तरीका है ही नहीं।''

– '' जब मैं मर जाऊंगा . . . तो?''

–'' तो क्या? सांसारिक परम्परा के अनुसार आपकी देह को भी जला देंगे।''

बुद्ध को ठोकर लगी। उसी क्षण उन्होंने प्रतिज्ञा की – ''मैं इस प्रकार नहीं मरूंगा, मैं अपने जीवन को यों ही व्यर्थ नहीं जाने दूंगा, मैं जीवित रहूंगा, जाग्रत अवस्था प्राप्त करूंगा तथा सबको प्राप्त कराऊंगा।''

उस एक ठोकर से ही बुद्ध को चेतना प्राप्त हुई और उसी का परिणाम है, कि आज भी संसार के इक्कीस देशों में बौद्ध धर्म जीवित है तथा बुद्धत्व अमर है, और यह सब हुआ केवल एक व्यक्ति के प्रयासों से, जिसे ठोकर लगी और जिसने जाग्रत अवस्था को प्राप्त किया।

इस अवस्था को प्राप्त करने का एकमात्र उपाय है, गुरु द्वारा कठोर परीक्षा। हो सकता है, कि तुम्हें जीवन में ठोकर लगे . . . और गुरु चाहते हैं, कि ऐसा शीघ्र ही हो, क्योंकि तभी शिष्य पहिचान पायेगा, कि उसके जीवन का वास्तविक लक्ष्य, वास्तविक उद्देश्य है – कुण्डलिनी जागरण।

गुरु चाहते हैं, कि शिष्य दिव्यता के इस मार्ग पर अग्रसर हो . . . और तुम इस पथ पर पहुंचोगे, तो तुम्हें अपने-आप एहसास होगा, तुम्हें संतोष होगा, कि तुम इस पथ पर खड़े तो हो, औरों को तो इस पथ का ज्ञान भी नहीं। इस पथ पर बुढ़ापा तुम्हें तंग नहीं करेगा, मृत्यु तुम्हारे निकट आने का साहस नहीं करेगी, तथा तुम्हारा जीवन श्मशान में जाकर खाक नहीं हो जायेगा। इस क्रिया, इस पथ को तंत्र कहते हैं, जिसकी सहायता से मनुष्य प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित कर एकात्मय हो जाता है।

– और जब वह प्रकृति के मूल स्वरूप को जान लेता है, तब वह साधक बन जाता है, तब वह शिव बन जाता है . . . और सद्गुरु ऐसा ही शिष्य को आशीर्वाद देते हैं, जिससे वह सही अर्थों में साधक बन सके, प्रकृतिमय बन सके, शीघ्र ही उसको ठोकर लगे और वह जाग्रतावस्था प्राप्त करे।

गुरु ही सफलता का स्रोत

इस संदर्भ में एक और प्रश्न उभर कर सामने आता है। यह तो हम जान ही गये, कि साधक और प्रकृति एक हैं, किन्तु –

भौतिक जगत में रहते हुए हम किस प्रकार प्रकृति को आत्मसात कर सकते हैं?

इस प्रश्न का उत्तर '**वायु पुराण**' से प्राप्त किया जा सकता है। मैंने तुम्हें बताया, कि तुम निद्रावस्था में ही पड़े रहते हो। तुम्हारे सभी क्रियाकलाप इसी अवस्था में चलते रहते हैं – ठीक उसी व्यक्ति की भांति, जो कि एक स्वप्न को सत्य मान कर उसमें भाग लेता है।

स्वप्न में व्यक्ति देखता है, कि वह उड़ रहा है, कभी कुछ कर रहा है, तो कभी कुछ। प्रतिदिन वह नया स्वप्न देखता है, और कभी तो इतना भयानक, कि उसका सारा शरीर पसीना-पसीना हो जाता है, और अचानक वह डर के मारे चीख पड़ता है . . . जब स्वप्न लोक एक मिथ्या जगत है, तो फिर तुम्हारा शरीर उससे प्रभावित क्यों होता है?

पर प्रभाव तो अवश्य होता है, क्योंकि जैसे ही तुम आंखें खोलते हो, तो पाते हो, कि तुम्हारा शरीर कांप रहा है और तुम्हारे कपड़े पसीने में भीगे हुए हैं। इसका तात्पर्य यह है, कि स्वप्न अच्छा हो या बुरा, तुम अवश्य ही उसमें भाग लेते हो, और अगर मैं तुमसे पूछूं, कि तुम क्यों इतने परेशान हो, तो तुम कहोगे, कि तुम सो रहे थे और तुमने एक स्वप्न देखा . . . यही तो मैं तुम्हें कह रहा हूं, कि तुम इस क्षण भी सो रहे हो और स्वप्न लोक में खोये हो।

उपरोक्त प्रश्न आध्यात्मिक और भौतिक जगत की भिन्नता पर आधारित है, कहा गया है –

॥ जागर्ति ये तत् जगत् ॥

अर्थात, "जाग्रत व्यक्ति ही जगत में रह सकता है।" जगत् का अर्थ है – दुनिया, इसका एक और अर्थ है – जाग्रत अवस्था। इससे तात्पर्य यह है, कि निद्रा में लीन व्यक्ति जगत में नहीं रह सकता।

इस दुनिया के लिए एक और शब्द है – 'संसार'। संसार शब्द दो शब्दों के संयोग से बना है – सम+सार, इसका अर्थ है, कि जो अवस्था मेरी प्रकृति के अनुरूप है, वही संसार है। अगर मैं कामुक हूं, तो सुन्दर स्त्री को देखना मुझे अच्छा लगेगा, चूंकि स्त्री सौन्दर्य मेरी प्रकृति के अनुरूप है, इसीलिए वही मेरे लिए संसार है। संसार में चार भी वस्तुएं हो सकती हैं, परन्तु व्यक्ति को उसी में असंतुष्टता अनुभव होती है, जो कि उसकी प्रकृति के समरूप है, इसलिए उसे मात्र उसी वस्तु में सार की

अनुभूति होती है। इस प्रकार 'सम' यानि अनुकूलता, तथा 'सार' यानि पूर्णता मिलकर उस व्यक्ति के लिए संसार बनते हैं।

परन्तु यहां मैंने संसार शब्द का नहीं, अपितु 'जगत' शब्द का प्रयोग किया है। दोनों का शाब्दिक अर्थ दुनिया ही है, परन्तु संसार – भ्रम, माया, निद्रा की अवस्था है, तथा जगत – जाग्रत अवस्था का परिसूचक है।

तुम अभी संसार में हो और मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं, कि तुम्हें ठोकर लगे, जिससे कि इस निद्रावस्था से तुम जाग सको . . . और ठोकर तुम्हें तभी लगेगी, जब तुम्हारी कोई अत्यंत प्रिय वस्तु तुम से दूर हो जायेगी, मिट जायेगी . . . तभी तुम्हें सत्यता का आभास होगा।

मैंने अभी बुद्ध के जीवन की एक घटना का उल्लेख किया। जब वे पहली बार महल से गये . . . तो संसार में वे लिप्त थे, परन्तु लौटे तो जगत में थे।

दूसरे शब्दों में पहले तो वे स्वप्न में माया के अभीभूत हो जीते रहे, परन्तु बाद में वे जाग गये और उन्होंने यह दूसरी अवस्था तब प्राप्त की, जब उन्हें ठोकर लगी। बीस वर्ष तक वे निद्रावस्था में थे, और जब उन्हें ठोकर लगी, तो उन्हें एहसास हुआ, कि वे एक मृगमरीचिका के पीछे दौड़ रहे हैं। उसी क्षण उन्होंने अपने पुत्र, अपनी पत्नी और सभी भौतिक सुखों का परित्याग कर दिया।

उनके पास क्या सुन्दर पत्नी, अद्वितीय धन-वैभव, मान-सम्मान सब कुछ था। अप्रत्यक्ष में उनके पास वह सब कुछ था, जो कि एक व्यक्ति की इच्छा होती है, पर ज्यों ही सत्य उनके सामने उजागर हुआ, उन्होंने उसी क्षण सब कुछ त्याग दिया। उन्हें ठोकर लगी और वे निद्रा से जाग गये, जबकि हम लोगों को तो अभी तक

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

अपने जीवन में ठोकर भी नहीं लगी।

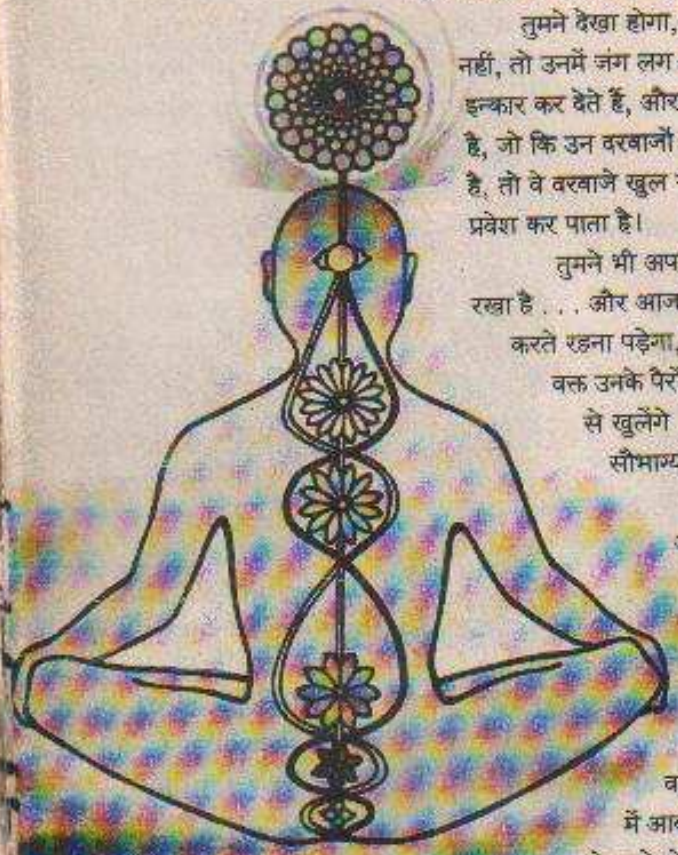

तुमने देखा होगा, कि दरवाजों एवं खिड़कियों को अगर कई सालों तक खोलें नहीं, तो उनमें जंग लग जाता है, और फिर कितना ही जोर लगायें, पर वे खुलने से इन्कार कर देते हैं, और तब एक बहुत ही शक्तिशाली व्यक्ति की आवश्यकता पड़ती है, जो कि उन दरवाजों पर लगातार चोट कर सके, और जब धीरे-धीरे जंग छूटता है, तो वे दरवाजे खुल जाते हैं और हवा का एक शीतल एवं सुगन्धित झोंका उनमें प्रवेश कर पाता है।

तुमने भी अपनी आत्मा के द्वारों को पिछले पन्द्रह बीस सालों से बंद कर रखा है . . . और आज उनमें जंग लग गया है। गुरु को निरन्तर इन पर पाद-प्रहार करते रहना पड़ेगा, वे जानते हैं, कि ये द्वार बहुत मजबूत हैं, और उन्हें खोलते वक्त उनके पैरों में चोट लग सकती है। उन्हें पता है, कि ये बड़ी ही मुश्किल से खुलेंगे . . . पर फिर भी अगर वे सफल रहे, तो उनका . . . मेरा सौभाग्य ही होगा।

पता नहीं जब तुम्हारी आत्मा के द्वार खुलेंगे, तो तुम अपने-आप को गौरवान्वित अनुभव करोगे अथवा नहीं, पर निश्चय ही वह क्षण गुरु के लिए स्वर्णिम क्षण होगा, जब तुम अपनी निद्रा से जाग जाओगे, क्योंकि गुरु के जीवन का एकमात्र लक्ष्य अपने शिष्यों को सत्य से परिचित करवाना होता है।

निश्चित ही इस गहरी निद्रा से उठकर तुम वास्तविक आनन्द को अनुभव कर सकोगे। इस समय तुम माया में आबद्ध हो, और जब भी तुम्हें कोई स्वप्न दिखाता है, तो तुम खुश हो जाते हो। अगर गुरु तुमसे कहें – "चिंता न करो, आने वाला समय अत्यंत अनुकूल है, मैं तुम्हें आर्शीवाद देता हूं . . ." तुम इन शब्दों को सुनकर अत्यंत प्रसन्न हो जाते हो।

अगर तुम गुरु के पास जाओ और कहो – "मेरी पत्नी अत्यधिक बीमार है।"

स्वाभाविक है गुरु यही कहेंगे – "चिंता की कोई बात नहीं, वह जल्दी ही ठीक हो जायेगी।"

वे यह नहीं कह सकते, कि वह मर जायेगी, क्योंकि वे जानते हैं, तुम क्या सुनना चाहते हो।

हालांकि गुरु तुम्हें झटका दे सकते हैं और तुम्हें इस गूढ़ निद्रा से जगा सकते हैं, पर अगर वे ऐसा करते हैं, तो तुम उनके पास नहीं जाओगे। तुम कहोगे कि ये गुरु तो बेकार हैं, और इनके पास जाने से कोई लाभ नहीं, क्योंकि अगर हम उनके सामने कुछ परेशानी रखेंगे, तो वे कहेंगे, कि तुम और बीमार हो जाओगे।

– और यह सत्य भी हो सकता है, हो सकता है, कि तुम अगले पांच साल तुम बीमार रहो, पर तुम सत्य के गरल को

सहन नहीं कर पाते, और जैसे ही गुरु सत्य कहेगा, तो तुम बोलोगे – "गुरु जी! ऐसे अशुभ वचन न बोलिये . . ." और फिर तुम उनके पास कभी नहीं जाओगे।

इसलिए गुरु को विवश हो कहना पड़ता है – "सब ठीक हो जायेगा"

उनको ये शब्द इसलिए कहने पड़ते हैं, क्योंकि **तुम लोगों को भ्रम में रहने की आदत सी हो गई है, तुम में सत्य को झेलने की क्षमता नहीं है, तुम ठोकरों की चोट को सहन नहीं कर सकते। केवल वह व्यक्ति जो हर संघर्ष, हर स्थिति सहर्ष स्वीकार करता है, जो दृढ़ संकल्पयुक्त होता है, वही इन ठोकरों की चोट को झेल पाता है।**

ऐसा व्यक्ति हर प्रकार की मुसीबतें झेल सकता है, और दूसरों के जीवन को तब्दील करने की क्षमता भी रखता है, समस्त ब्रह्माण्ड उसके कदमों तले रहता है, और राजा भी ऐसे संन्यासी के समक्ष सिर झुकाता है।

राजा कहता है, कि वह उसकी हर इच्छा पूरी करने को तैयार है, पर संन्यासी उत्तर देता है – "हटो! मेरे पांव छोड़ो, तुम मुझे क्या दे सकते हो?"

केवल एक वास्तविक संन्यासी, योगी ही ऐसा कह सकता है, तुम नहीं। वह इसलिए, क्योंकि तुम अभी इस लायक नहीं। केवल वह व्यक्ति जिसने अपनी आत्मा को पहिचान लिया, जिसने अपने तीसरे नेत्र को जाग्रत कर लिया, वही समस्त ऐश्वर्य त्याग कर भी पूर्ण आनन्दमय रह सकता है।

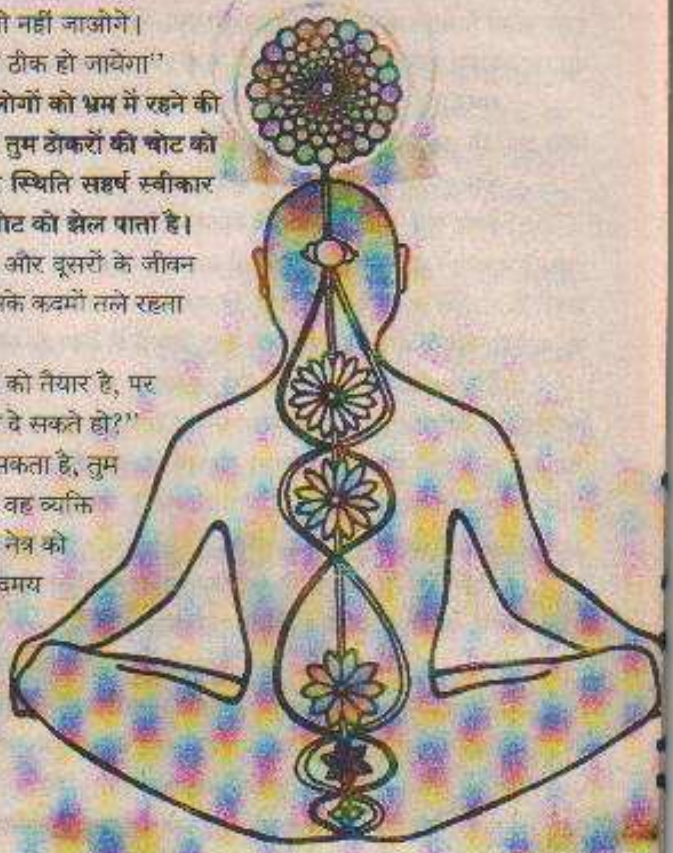

मैंने कहा, कि तुम स्वयं नींद से नहीं उठ सकते। सभी महान पुरुष, चाहे वह तुलसी हों, सूर हों, बुद्ध हों अथवा महावीर हों, सभी ने पहले कठिनाइयां झेलीं और ठोकर खाई . . . पर ठोकर खाने के बाद वे और मजबूत होकर उठे। वे भी हमारी तरह सामान्य मनुष्य ही थे। वे कोई जन्म से ही महान नहीं थे, असल में तुम में और बुद्ध में कोई अंतर नहीं। शायद तुम भी एक दिन उन जितनी ऊंचाइयों को छू पाओ . . . पर इसके लिए पहले तुम्हें बहुत सी परेशानियां झेलनी पड़ेंगी।

यदि गुरु तुम्हारी परीक्षा लेने हेतु तुम्हें परेशानियों एवं कठिनाइयों में झोंकता है, और अगर तुम्हें यह सब कुछ बुरा लगता है, तो यकीन मानो तुमसे दुर्भाग्यशाली तो कोई है ही नहीं, क्योंकि पहले तो गुरु प्राप्त होना ही बहुत कठिन है – तुम्हें धूर्त साधु, धोखेबाज और चालबाज बहुत मिल जायेंगे, पर वे गुरु नहीं हो सकते। गुरु तो वास्तव में वे हैं, जो शिष्यों को ठोकर मारकर उन्हें नींद से जगाते हैं, जो समाज की रूढ़ियों पर बिजली बन कर टूटते हैं, जो शिष्य को बताते हैं, कि जिस तरह का जीवन वह जी रहा है, वह आत्मसाक्षात्कार का सही पथ नहीं है।

तुम साधना करते हो,

आध्यात्मिक साहित्य पढ़ते हो, गुरु में विश्वास रखते हो, गुरु का मार्गदर्शन और समीप्यता निरन्तर प्राप्त करते हो, तुम में और दूसरे लोगों में बहुत अंतर है। उन्हें यह भी पता नहीं, कि वे कहां खड़े हैं, जबकि तुमने अपना पथ चुन भी लिया। जहां तुम इस पथ पर अग्रसर होने को तत्पर हो, वहीं वे नींद में ही कहीं भी चले जा रहे हैं, ठीक एक फेंके हुए दिशाहीन पत्थर की तरह।

अगर तुम इस पथ पर बढ़ ही चुके हो, तो तुम्हें निरन्तर आगे ही बढ़ना है। गुरु हरदम तुम्हारे पीछे खड़े रहेंगे . . . और जिस क्षण भी तुम रुकोगे, वे तुम्हें आगे धकेल देंगे और प्रेरित करते रहेंगे।

और गुरु तुमसे पूछेंगे – ''क्या मैं तुम्हें आगे धकेलता रहूं?''

अगर तुम उनके धक्कों को सहन नहीं कर सकते, तो वे रुक जायेंगे। अगर तुम सोते हुए ही अपनी सारी जिन्दगी बिता देना चाहते हो, तो गुरु के प्रयासों का कोई लाभ नहीं होगा, और तब वे भी घर में बैठ कर, आराम से कोई पुस्तक पढ़ सकते हैं . . . पर वास्तविकता यह है, कि गुरु को अपने शिष्यों के बीच में बैठकर ही वास्तविक आनन्द आता है। उनके जीवन का कर्त्तव्य, लक्ष्य और आकांक्षा सब कुछ शिष्यों के लिए ही समर्पित होता है।

मैंने एक बार कहा था, कि बुद्ध, कृष्ण के कई सौ सालों बाद उत्पन्न हुए थे। अगर हम ध्यान से देखें, तो पायेंगे कि पच्चीस सौ वर्षों को एक चक्र निरन्तर चलता रहता है। कृष्ण और बुद्ध के समय में भी इतने ही वर्षों का अंतर था, और आज जब बुद्ध को गुजरे हुए ठीक पच्चीस सौ वर्ष हो चुके हैं, तो चैतन्यता की एक नई लहर, एक नया व्यक्तित्व इस संसार में उभरेगा। तुम्हारे जीवन का असली सौभाग्य तब है, जब तुम उन्हें पहिचान सको, उन्हें गुरु रूप में पा सको, क्योंकि तभी तुम अपने जीवन को प्रकाशयुक्त बना सकोगे।

अगर कोई तुम्हारे सामने हाथ फैलाता है, तो वे गुरु हो ही नहीं सकते, गुरु तो वे होते हैं, जो कि शिष्यों को परेशानियां देकर, उनकी परीक्षा लेते हैं। कबीर ने एक जगह कहा है –

गुरु कुम्हार शिष कुम्भ है, गढ़ि काढ़े खोट।
भीतरि भीतरि सहजि करि, बाहरि बाहरि चोट॥

जिस प्रकार से एक कुम्हार बाहर से चोट करता हुआ एवं अन्दर से सहारा देता हुआ मटका तैयार करता है, ठीक उसी प्रकार गुरु भी शिष्य को अपना आध्यात्मिक बल देकर, उसे कठोर परीक्षाओं में से गुजारता है, ताकि शिष्य अत्यधिक उच्च स्तर तक पहुंच सके, क्योंकि जब तक मिट्टी को इन सब परेशानियों से नहीं गुजारा जाता, वह शीतल एवं मधुर जल का कलश नहीं बन सकती, वह मिट्टी का लौंदा ही रहती है . . . और तुम भी अभी मिट्टी के लौंदे ही हो।

अगर तुम में प्रहार सहन करने की क्षमता है, तो तुम निश्चय ही दीपक अथवा कलश बन जाओगे, अगर नहीं, तो तुम्हारा शरीर एक दिन अपनी पहिचान भुला देगा और मिट्टी में ही मिल जायेगा।

समस्त चराचर विश्व पंच तत्वों से ही निर्मित हुआ है – भू, जल, अग्नि, वायु, आकाश। भू तत्व का अर्थ है – मिट्टी, और मिट्टी में मिल जाना ही हर व्यक्ति की नियति है।

असल में तुम जो कुछ भी अपने शरीर में देखते हो, वह बाहरी और भौतिक संसार का ही प्रतिबिम्ब मात्र है। जैसा कि मैं पहले भी कह चुका हूं, कि हर व्यक्ति केवल वही देखना पसंद करता है, जो कि उसकी प्रकृति से मेल खाता है। एक कामी

पुरुष केवल सुन्दर स्त्रियों को ही देखना पसंद करता है, वह और किसी चीज में दिलचस्पी लेता ही नहीं। इसी तरह एक लालची दुकानदार ग्राहकों को लूटने पर प्रसन्न होता है, क्योंकि उसकी खुशी धन में ही निहित है।

वायु पुराण में स्पष्ट शब्दों में उल्लेखित है – प्रत्येक व्यक्ति, चाहे वह पांच साल का हो अथवा अस्सी साल का, तब तक एक मिट्टी का लौंदा है, जब तक कि एक कुम्हार उसे दीपक अथवा कलश न बना दे, और एक अनुभवी कुम्हार को ही पता होता है, कि यह मिट्टी कैसी है और कितना प्रहार सहन कर सकती है, उसे पता है, कि रेत से कलश नहीं बनाया जा सकता।

मानव मात्र एक मिट्टी का लौंदा है, तभी तो जब विश्वामित्र ने त्रिशंकु को स्वर्ग में ले जाना चाहा, तो इन्द्र ने उसे रोक दिया।

इन्द्र ने कहा – "मानव अपने बाह्य शरीर के साथ स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकता, क्योंकि वह मिट्टी है . . . और उसमें मल की दुर्गन्धि के अलावा कुछ नहीं है।"

यह वास्तविकता है, क्योंकि अगर हम मानव शरीर को चीर फाड़ कर देखें, तो हमें अन्दर मांस, मल, मूत्र, मज्जा के सिवा कुछ नहीं मिलेगा। इस शरीर में और कुछ है भी क्या? जब ऐसा है, तो हम इस शरीर के लिए क्यों इतने चिंतातुर रहते हैं, क्यों इस शरीर के सौन्दर्य के मद में डूबे रहते हैं? अगर तुम्हें कोई शक है, तो एक लाश के पास कुछ घंटे उपरान्त जा कर देखो, तुमको उसमें से दुर्गंध आती हुई प्रतीत होगी, या एक दिन स्नान नहीं करो, तब भी यही स्थिति हो जायेगी – फिर तुम्हारे शरीर में ऐसा क्या है, जिस पर तुम इतना घमण्ड करते हो?

इसलिए मैं कहता हूं, कि तुम जो कुछ भी देखते हो, देखने की इच्छा करते हो, और जिन वस्तुओं को देखकर तुम प्रसन्न हो जाते हो, उन सबका तुम्हारे जीवन में कोई महत्व नहीं है। इस समय सिर्फ तुम वही देखना पसन्द करते हो, जो तुम देखना चाहते हो, अगर मैं कोशिश करके तुम्हें नींद से जगा कर जीवन का वास्तविक आनन्द बताना भी चाहूं, तब भी तुम उसे महसूस नहीं कर सकते . . . और वह इसलिए, क्योंकि अभी तुम में वह पात्रता नहीं आई है।

वास्तविक आनन्द को प्राप्त करने के लिए तुम्हें अध्यात्म में प्रवेश करना ही पड़ेगा, और आध्यात्मिक जगत तक तभी पहुंचोगे, जब भौतिक जगत की सीमाएं लांघ जाओगे।

इस लांघने का अर्थ है – "पापों को शरीर से समाप्त करना, कुण्डलिनी जागरण द्वारा।"

यह शक्ति तुम्हारे शरीर में ही विद्यमान है सुप्तावस्था में, और इसी शक्ति को जाग्रत करना 'कुण्डलिनी जागरण' कहलाता है। व्यक्ति आध्यात्मिक जगत में केवल कुण्डलिनी की सहायता से ही प्रवेश कर सकता है। इसी जागरण क्रिया का एक अंश है – तृतीय नेत्र अथवा आज्ञा चक्र का खुलना। कुण्डलिनी, सहस्रार यानि मस्तिष्क में जाकर अवस्थित होती है, और इसी को छठी इंद्रिय जागरण कहा जाता है। इस शक्ति का जागरण केवल गुरु-कृपा द्वारा ही सम्भव है, तथा इसके लिए अनेकों कड़ी परीक्षाओं से गुजरना पड़ता है।

तब व्यक्ति न केवल आध्यात्मिक उत्थान की ही ओर अग्रसर होता है, अपितु उन अठारह सिद्धियों को भी प्राप्त कर लेता है, जिनका उल्लेख शास्त्रों में मिलता है। मैं तुम्हें यही आशीर्वाद प्रदान करता हूं, बस केवल आज इतना ही–

– सद्गुरुदेव डा. नारायण दत्त श्रीमाली जी

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में समाहित है।

गौरवशाली हिन्दी मासिक पत्रिका

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान की

वार्षिक सदस्यता

इस पत्रिका की वार्षिक सदस्यता को प्राप्त कर आप पायेंगे

अद्वितीय और विशिष्ट उपहार

तीव्र प्रभावयुक्त आत्म यंत्र

सभी प्रकार की क्रियाएं मानव सिर्फ सफलता प्राप्त करने के लिए ही करता है। इस कार्य में सभी साधना सहायक हों और उन सबका उसे मनचाहा लाभ हो यही प्रत्येक व्यक्ति चाहता है। परन्तु जब स्वयं अपना मन ही उदास, हताश या निराश हो, स्वयं हम यदि उत्साहहीन हों, हमारे ही अन्दर यदि हीनभावना भर गई हो, तो ऐसे में एकाग्रता हो ही नहीं सकती। उत्साह और एकागता के अभाव में व्यक्ति के मन में उदासी या हीनभावना इतने प्रबल रूप से अधिकार जमा लेती है, कि व्यक्ति किसी भी कार्य में सफल नहीं हो पाता है। तब वह बात-बात में झुंझलाने लगता है, उसके प्रत्येक निर्णय गलत बैठते हैं और ऐसे में भीषण विपत्तियां उसे घेर लेती हैं। मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान पत्रिका ने इन परेशानियों का सटीक उपाय खोजकर विशिष्ट रवि-पुष्य एवं अमृत सिद्धि योग में तीव्र प्रभावयुक्त आत्म यंत्र तैयार कराए हैं। आप स्वयं इस दैवी शक्ति युक्त यंत्र की विलक्षणता अनुभव करेंगे तथा मन में उमंग, उत्साह, पूर्ण यौवन, रस, आनन्द, प्रसन्नता एवं सफलता का वातावरण बनेगा।

इस यंत्र को प्राप्त कर पूजा की जगह स्थापित कर लें, किसी भी दिन नित्य प्रातः काल मात्र ५ बार 'ॐ ऐं ब्रह्माण्ड तेजसे नमः' मंत्र का जप करें ३० दिन बाद किसी पवित्र जलधारा में विसर्जित कर दें या मंदिर में चढ़ा दें।

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को बनाकर ही प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका के सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं। आप पत्रिका में प्रकाशित पोस्टकार्ड नं ४ को स्पष्ट अक्षरों में भरकर हमारे पास भेज दें, शेष कार्य हम स्वयं करेंगे।

वार्षिक सदस्यता शुल्क – 195/- डाक खर्च अतिरिक्त 30/- Annual Subscription 195/- + 30/-postage

सम्पर्क : **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान**, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर – ३४२००१, (राज.)
Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimali Marg, High Court Colony, Jodhpur-342001, (Raj.), India
Phone : 0291-432209 Fax-0291-432010

गुरु पूर्णिमा साधना

साधना विधि

प्रातः सूर्योदय के पूर्व ही स्नान आदि नित्य क्रियाओं से निवृत्त हो लें, स्वच्छ धुले हुए वस्त्र पहनें, पूर्व या उत्तर की ओर मुख करके पवित्र आसन पर बैठें, शुद्ध और शान्त होकर पहले ५ मिनट तक भगवत् पाद गुरुदेव निखिल के सन्यासी स्वरूप का आज्ञा चक्र पर ध्यान करें। सामने चौकी (बाजोट) पर पीला या लाल वस्त्र बिछाकर गुरु चित्र स्थापित करें। घी का दीपक तथा अगरबत्ती जला लें। जब तक साधना करें, दीप और अगरबत्ती जलते रहने चाहिएं।

अपने सामने थाली में सभी सामग्री **निखिल सौभाग्य सिद्धि यंत्र, निखिल चैतन्य माला, सिद्धाश्रम स्वरूप दर्शन गुटिका, सिद्धाश्रम वर्णित निखिलेश्वर शिवलिंग, निखिल ज्योति रत्न** रखें। उन पर पानी का छींटा दें और अपने दाहिने हाथ से सामग्रियों को स्पर्श करते हुए निम्न संदर्भ को पढ़ें –

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं हं हंसः प्राणा इह प्राणाः।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं हं हंसः जीव इह स्थितः।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं हं हंसः वाङ् मनः श्रोत्र चक्षुः जिह्वा घ्राण पाणि पाद पायूपस्थानि सर्वेन्द्रियाणि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु।

संकल्प

दाहिने हाथ में जल लें और संकल्प करें –

ॐ विष्णु र्विष्णु र्विष्णुः श्री मद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य कलियुगे कलिप्रथम चरणे जम्बूद्वीपे पुण्यक्षेत्रे अमुकमासे (आषाढ़ मास गुरु पूर्णिमा) अमुक गोत्रः (अपना गौत्र) अमुक शर्माऽहं (अपना नाम) गुरु प्रसाद सिद्धये गुरु पूजनं च सम्पत्स्ये।

जल भूमि पर छोड़ दें।

इसके बाद हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें –

नारायण परब्रह्म तत्वं नारायणः परः,
नारायणपरो ध्याता ध्यानं नारायणः परः।
यच्च किञ्चिज्जगत् सर्वं दृश्यते श्रूयतेऽपि यः।
अन्तर् बहिश्च तत् सर्वं व्याप्य नारायणः स्थितः।

विनियोग –

दाहिने हाथ में जल लें और निम्न मंत्र का पाठ करें –

ॐ अस्य श्री गुरुमंत्रस्य श्री नारायण ऋषिः, गायत्री छन्दः श्री निखिलेश्वरानन्द देवता, गुं बीजम्, नमः शक्तिः, श्री गुरुप्रसाद सिद्धये जपे विनियोगः

जल भूमि पर छोड़ दें।

ऋष्यादि न्यास : –

दाहिने हाथ की उंगलियों से निम्न अंगों का स्पर्श करें –

ॐ नारायण ऋषये नमः शिरसि (सिर का स्पर्श करें)
ॐ गायत्री छन्दसे नमः मुखे (मुख का स्पर्श)
ॐ निखिलेश्वर देवतायै नमः हृदि
(हृदय का स्पर्श करें)
ॐ गुं बीजाय नमः पादयोः (पैरों का स्पर्श करें)
ॐ नमः शक्तये नमः सर्वांगे
(सभी अंगों का स्पर्श करें)

कर न्यास –

ॐ गां अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ गीं तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ गूं मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ गैं अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ गौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ गः करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।

अंगन्यास –

ॐ गां हृदयाय नमः

ॐ गीं शिरसे स्वाहा।

ॐ गूं शिखायै वषट्।

ॐ गैं कवचाय हुम्

ॐ गौं नेत्रत्रयाय वौषट्

ॐ गः अस्त्राय फट्।

इसके बाद गुरु चित्र को स्नान करावें, गंध, अक्षत, धूप, दीप और पुष्प से पूजा करें।

गुरु चित्र के सामने कपड़े पर चावलों से त्रिकोण बनाकर ऊपर के कोण के ऊपर लाल रंग से **निं** बीज लिखें दाहिने कोण में हरे रंग से **खिं** बीज तथा बायें कोण में पीले रंग से **लं** बीज लिखें। निखिल चैतन्य माला का गोल आसन बनाकर त्रिकोण यंत्र के बीच रखें। उसमें यंत्र को स्थापित करें, गुटिका को **लं** बीज के ऊपर और मुद्रिका को **खिं** बीज के ऊपर स्थापित करें। फिर निम्न निखिल बीजावली का उच्चारण करते हुए अपने विभिन्न अंगों पर दायें हाथ से स्पर्श करें।

ॐ निं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं नमः

स चैतन्यं सद्गुरुं निखिलेश्वरानन्दं हृदये स्थापयामि नमः (हृदय पर हाथ रखें)।

ॐ निं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं नमः सदीर्घं सद्गुरुं निखिलेश्वरानन्दं ललाटे स्थापयामि नमः (मस्तक पर हाथ रखें)।

ॐ निं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं नमः सशक्तिकं सद्गुरुं निखिलेश्वरानन्दं शिरसि स्थापयामि नमः (सिर पर हाथ रखें)।

ॐ निं इदं गंगा जल स्नानं समर्पयामि श्री गुरवे नमः।

गंगाजल न हो तो शुद्ध जल से सामग्री पर जल छिड़कें।

ॐ निं इदं गंधं समर्पयामि श्री गुरवे नमः।

केशर या कुंकुम से तिलक करें।

ॐ निं अक्षतान् समर्पयामि श्री गुरवे नमः।

अक्षत (चावल) चढ़ावें।

ॐ निं धूपं समर्पयामि श्री गुरवे नमः।

दीपक दिखावें।

ॐ निं इदं सोपकरणं नैवेद्यं निवेदयामि श्री गुरवे नमः।

नैवेद्य समर्पित करें।

इसके बाद कुंकुम और अक्षत मिलाकर निम्न मंत्र बोलते हुए सभी सामग्री पर चढ़ावें।

ॐ भूः पुरुषाय पुरुषरूपाय नारायणाय नमो नमः।

ॐ भुवः पुरुषाय पुरुषरूपाय निखिलेश्वराय नमो नमः।

ॐ स्वः पुरुषाय पुरुषरूपाय अपराजिताय नमो नमः।

ॐ महः पुरुषाय पुरुषरूपाय अमृताय नमो नमः।

ॐ जनः पुरुषाय पुरुषरूपाय अमोघाय नमो नमः।

ॐ तपः पुरुषाय पुरुषरूपाय आदि पुरुषाय नमो नमः।

ॐ आनन्दाय पुरुषाय पुरुषरूपाय ऋतम्भराय नमो नमः।

ॐ उत्तारणाय पुरुषाय पुरुषरूपाय उत्तमीयाय नमो नमः।

ॐ कलाधराय पुरुषाय पुरुषरूपाय कालान्तकाय नमो नमः।

ॐ कालेश्वराय पुरुषाय पुरुषरूपाय कार्येश्वराय नमो नमः।

ॐ गुणाकाराय पुरुषाय पुरुषरूपाय गुरुत्तमाय नमो नमः।

इसके बाद निम्न मंत्र का नित्य ३ माला मंत्र जप करें—

॥ ॐ निं निखिलेश्वराय सौभाग्यं देहि दापय ॐ नमः॥

यंत्र के नीचे से निखिल चैतन्य माला निकाल कर मंत्र जप करें, बाद में उसे पूजा स्थान में पुनः स्थापित करें, इसके बाद गुरु आरती और प्रसाद वितरण करें। यह तीन दिन की साधना है —१४ जुलाई से १६ जुलाई तक। यदि आप सामूहिक पूजन अपनी शाखाओं में करते हैं तो भोज आदि का भी प्रबन्ध कर सकते हैं। साधना समाप्ति के बाद निखिल ज्योति रत्न की मुद्रिका बनाकर दायें हाथ की किसी भी उंगली में पहन लें। शेष सामग्री को सवा महीने बाद नदी तालाब, कुंए या समुद्र में विसर्जित कर दें। इस साधना से निश्चित रूप से साधकों को लाभ होगा ही। कई अनुभव भी होंगे उन्हें लिखकर गुरुधाम जोधपुर प्रेषित करें और यदि आप चाहें तो अपनी डायरी में लिखें।

यह गुरु पर्व की साधना आपके लिए है, गुरु से प्रेम करने वालों के लिए कृतज्ञता और समर्पण का अद्भुत तथा अप्रतिम संगम है।

–जयतु जयतु जयगुरुदेव

हे गुरुदेव

आप तो मेरे आराध्य देव आत्म रूप ही हो

शिष्य के पास केवल और केवल श्रद्धा, भक्ति, समर्पण और निष्ठा ही मूल पूंजी है केवल इस पूंजी के सहारे शिष्य अपने आत्मघट में प्रकाशपुंज गुरु को स्थापित कर आलोकित कर सकता है। गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर गुरु और शिष्य सम्बन्धों के, गुरु शिष्य मिलन की विशेष व्याख्या करता हुआ यह सारगर्भित वचनामृत

पहाड़ की जमीन फोड़ कर नदी जब पहाड़ की घाटी से निकली तो उसने यह किसी से नहीं पूछा समुद्र कहां है और मैं किस मार्ग से उसके पास पहुचूं। नदी ने उद्भव अर्थात जन्म से ही यह सोच लिया था कि मुझे समुद्र से जा मिलना है जोश से मतवाली ये नदी कूदती फांदती छलांग भरती बस चल पड़ी, उसके हृदय में तो एक अनन्त समाया हुआ था, उसके दिल ने कहा – 'तू चल पड़, पूछ मत, पृथ्वी के चारों ओर समुद्र ही समुद्र है।' और वह दौड़ पड़ी, चल पड़ी पत्थर उसे देखकर हंसते थे। वे बड़े-बड़े पत्थर उसके रास्ते में जा बैठे, उसका मार्ग रोकने के लिए, उसे अपने प्रिय से ना मिलने देने के लिए कैसा कड़ा पत्थर था, कलेजा था लेकिन वे तो आखिर पत्थर थे उनमें कलेजा कहां से होगा। लेकिन नदी दीवानी थी। जो पत्थर उसके मार्ग में बाधा डाले पड़े थे उनसे भी वह बिना प्यार से मिले, बिना गले लगाए आगे न बढ़ी, प्यार भरे हृदय में घृणा कहां? जिन पत्थरों ने उसे ठोकरें दीं उनके प्रति भी नदी ने प्रेम अर्पित किया, अपने स्नेह स्पर्श से उनका तापहरण किया, अपने प्यार से उनकी विषमता हरी और उन्हें सुडौल बनाया। जो पत्थर उसे दीवानी कहते थे हंसते थे वे वहीं पड़े रहे और प्रेम भरी मस्ती से भरी नदी हजारों मील दूर चलकर समुद्र में जा मिली, जिसके मिलने के लिए वह पागल थी उससे मिलन प्राप्त कर ही वह पूर्ण सुख को पा सकी।

साधना पथ में गुरु से मिलन में ऐसा ही समर्पण निष्ठा, विश्वास, प्रवाह हृदय में आवश्यक है। इस पथ पर जो चला उसे संसार रूपी पत्थरों ने दीवाना कहा, पागल कहा, मूर्ख कहा लेकिन सच्चा शिष्य यदि उन्हीं बातों पर विचार कर कर के रुक जाए तो वह शिष्य नहीं, वह तो एक साधारण सांसारिक कीड़ा बन जाता है। शिष्य वह शक्ति है जिसमें एक उद्दाम वेग होता है अपने हृदय से उठी हुई एक प्रेरणा ज्योति होती है शाश्वत ज्योति होती है, संसारी पत्थररूपी मनुष्य शिष्य के इस प्रभाव को कुछ समय के लिए तो रोक सकते हैं लेकिन यदि मन में ललक, गति नदी जैसी है तो आखिर पत्थरों को ही गोल होना पड़ेगा।

नदी से पूछा भी गया कि तुम्हें इतनी सारी मुसीबतें उठा कर समुद्र से मिलने में क्या आनन्द आता है, तुम मीठे पानी सी भरी और समुद्र खारे पानी से भरा, तुम भी उसमें जाकर अपनी मिठास खो देती हो और तुम्हारे, जैसा बहाव भी नहीं है फिर क्या बात है, नदी ने कहा कि समुद्र मेरा प्रिय है,

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

मेरा इष्ट है मेरे जीवन का लक्ष्य है, मुझे उससे मिलना है तो बस मिलना ही है। इसलिए मैं संसार की और बातों की परवाह नहीं करती अपना मार्ग स्वयं बनाकर उस कष्ट पूर्ण मार्ग पर चलकर भी अपने प्रिय समुद्र को प्राप्त कर ही लूंगी।

जो अपने आप को शिष्य कहता है उसका एक ही कर्त्तव्य है गुरु से मिलना, जो गुरु से नहीं मिल सकता वह शिष्य संसार में परिवार, स्वजन, मित्र, मिथ्या, आडम्बर रूपी पत्थरों के कारण रुक गया है। हृदय में प्रवाह हो, देह में प्राण हो, शरीर में श्वास हो तो संसार की कोई भी शक्ति शिष्य को गुरु से मिलने के लिए नहीं रोक सकती।

गुरु तो शाश्वत होते हैं।

गुरु एक ब्रह्मांडीय शक्ति का नाम है, एक शाश्वत शक्ति है हर जन्म में माता-पिता अलग हो सकते है माता-पिता अलग होंगे तो भाई-बहन भी अलग हो सकते है, हर जीवन में मित्र अलग हो सकते हैं, कभी बंगाल में जन्म ले सकते हो तो कभी मद्रास में, यह चक्र चलता रह सकता है। लेकिन जिस जन्म में भी रहोगे गुरु एक ही होंगे। किस जन्म में आप पहचान सकोगे कि मेरे कौन वास्तविक गुरु हैं? गुरु का तात्पर्य ही यही है आपके जीवन का वह समुद्र जहां आप को पूर्ण रूप से विलीन हो जाना है। एक बार विलीन हो जाने के बाद फिर समुद्र से नदी नहीं निकलती है, क्योंकि वहां आकर वह पूर्ण हो जाती है। समुद्र उसे अपने जैसा ही बना देता है। गुरु भी शिष्य को अपने ज्ञान सागर में एकाकार कर अपने जैसा बना देते है। यह वह महान क्रिया है जो कोई और सम्पन्न कर ही नहीं सकता।

शंकराचार्य ने **'शतश्लोकी'** के पहले श्लोक में ही सदगुरु का वर्णन करते हुए लिखा है –

दृष्टान्तो नैव दृष्टस्त्रिभुवनजठरे सद्गुरोर्ज्ञानदातुः
स्पर्शश्चेत्तत्र कल्प्यः स नयति यदहो स्वर्णतामश्मसारम्।
न स्पर्शत्वं तथापि श्रितचरणयुगे सद्गुरुः स्वीयशिष्ये
स्वीयं साम्यं विधत्ते भवति निरुपमस्तेन वा लौकिकोऽपि ॥

इस त्रिभुवन में ज्ञानदाता सदगुरु के लिये देने योग्य कोई दृष्टान्त ही नहीं दिखता। उन्हें पारस मणि उपमा दें तो यह भी ठीक नहीं जंचती, कारण, पारस लोहे को सोना तो बना देता है पर पारस नहीं बनाता। परन्तु सदगुरु चरण युगल का आश्रय लेने वाले शिष्य को सदगुरु निज साम्यता ही दे डालते हैं। इसलिये सदगुरु की कोई उपमा नहीं।

जब तक शिष्य गुरु को भगवान के रूप में नहीं देख पाते, उनसे प्रवाहित होने वाले भगवत ज्ञान को स्वीकार नहीं कर पाते और जब तक उनकी प्रत्येक क्रिया शिष्य को लीला रूप में नहीं मालूम पड़ती तब तक शिष्य का गुरुकरण नहीं हुआ जब तक गुरु, गुरु नहीं हुए तब तक चाहे जो कुछ समझ लीजिये लेकिन एक बार साधक से शिष्य बनकर गुरु रूप में मान लेने के पश्चात उन्हें अपने आराध्य के रूप में ही समझना चाहिए। गुरु तो भगवान का ही स्वरूप है, भगवान शंकर ने स्वयं कहा है कि

आदिनाथो महादेवि महाकालो हि यः स्मृतः।
गुरुः स एव देवेशि सर्वमंत्रेषु नापरः ॥
शैवे शाक्ते वैष्णवे च गाणपत्ये तथैन्द्रवे।
महाशैवे च सौरे च स गुरुर्नात्र संशयः ॥
मंत्रवक्ता स एव स्यान्नापरः परमेश्वरि।

मंत्र दान के समय और उसके पश्चात जो गुरु मनुष्य के रूप में एक स्वरूप प्रगट है वह शिष्य की एक कल्पना है, उस शरीर में स्थित ज्ञान ही शिष्य के लिए परमात्मा स्वरूप गुरु है, इन गुरु की शरण और उनके कर कमलों की छत्र छाया पाकर शिष्य धन्य-धन्य हो जाता है।

क्या गुरु का भी ऋण होता है ?

शिष्य तो अपने गुरु का ऋण कभी भी उतार नहीं सकता है, अपने माता-पिता का ऋण उतार सकता है, अपने स्वजनों का ऋण उतार सकता है क्योंकि उनसे उसके देहगत सम्बन्ध हैं लेकिन जिनसे आत्मा का सम्बन्ध है वे ही तो सदगुरु हैं और जो जन्म जन्म से उसके गुरु हैं उनका ऋण भला कैसे उतर सकता है? गुरु द्वारा प्रदत ज्ञान दीक्षा, शक्तिपात, चेतना गुरु की कृपा है लेकिन शिष्य केवल निठुला होकर बैठा ही रहे, अपने हृदय के भावों को प्रकट ही नहीं करे तो वह शिष्य कहलाने का भी अधिकारी नहीं है। गुरु ने शिष्य को एक संचारी भाव दिया है, उस संचारी भाव को प्रकट करना उसका कर्तव्य है और वह भाव प्रकट करने का दिवस है गुरु पूर्णिमा।

गुरु पूर्णिमा न तो कोई अवतरण दिवस है न निर्वाण दिवस और न ही दीक्षा दिवस। गुरु पूर्णिमा तो एक ऐसा शाश्वत दिवस है जिस दिन वह अपने आराध्य गुरुदेव के प्रति कृतज्ञ धन्य-धन्य होते हुए उनके श्री चरणों में पहुंचता है। वर्ष भर में उसके जीवन में जो भी दुःख संताप आये हैं अथवा जो भी आह्लाद और प्रसन्नता के क्षण आये हैं उन सबको उनके श्रीचरणों में प्रकट करने के लिए पहुंच जाता है और केवल एक ही निवेदन होता है **'गोविन्दं त्वदिय वस्तु तुभ्यं समर्पयामि'** हे मेरे आराध्य गुरुदेव, मैं जैसा भी हूं और जो भी मुझे इस संसार में प्राप्त हो रहा है वह आपकी कृपा से ही प्राप्त हो रहा है, उसे आपको ही समर्पित कर रहा हूं। तेरा तुझको अर्पण क्या लागे मेरा!

याद करो सद्गुरुदेव के इन वचनों को

गुरु पूर्णिमा आह्वान में

यह पर्व सही अर्थों में गुरु का पर्व है ही नहीं, यह तो शिष्य पर्व है, इसे शिष्य पूर्णिमा कहा जाता है, क्योंकि यह शिष्य के जीवन का एक अन्तरंग और महत्वपूर्ण क्षण है, यह उसके लिए उत्सव का आयोजन है, यह मन की प्रसन्नता को व्यक्त करने का त्यौहार है, यह एक ऐसा पर्व है, जो जीवन की प्रफुल्लता, मधुरता और समर्पण के पथ पर गुरु के चरण चिन्ह अंकित कर अपने आप को सौभाग्यशाली मानता है।

यदि तुम मेरे आत्मीय हो, मेरे प्राणों के घनीभूत हो, मेरे जीवन का रस और चेतना हो तो यह निश्चय ही तुम्हारे लिए उत्सव, आनन्द और सौभाग्य का पर्व है, क्योंकि शिष्य अपने जीवन की पूर्णता तभी पा सकता है, जब वह गुरु ऋण से उऋण हो जाय, मां ने तो केवल तुम्हारी देह को जन्म दिया, पर मैंने उस देह को संस्कारित किया है, उसमें प्राणश्चेतना जाग्रत की है, उस तेज तपती हुई धूप में वासन्ती बहार का झोंका प्रवाहित किया है, मैंने तपते हुए भूखण्ड पर आनन्द के अमिट अक्षर लिखने की प्रक्रिया की है, और मैंने तुम्हें पुत्र शब्द से भी आत्मीय प्राण शब्द से सम्बोधित किया है।

और यह गुरु के द्वारा ही संभव हो सका है, यह इस जीवन का ही नहीं, कई-कई जन्मों का लेखा-जोखा है, मैं तुम्हारे इस जन्म का साक्षीभूत गुरु ही नहीं हूं, अपितु पिछले पच्चीस जन्मों का लेखा-जोखा, हिसाब किताब मेरे पास है, और हर बार मैंने तुम्हें आवाज दी है, और तुमने अनसुनी कर दी है, हर बार तुम्हारे प्राणों की चौखट पर दस्तक दी है, और हर बार तुम किवाड़ बन्द कर के बैठ गये हो, हर बार मैंने तुम्हें झकझोरने का, जाग्रत करने का चैतन्यता प्रदान करने का प्रयास किया है, और हर बार तुमने अपना मुंह गृहस्थ और समाज की झुरभुरी रेत में छिपाकर अनदेखा, अनसुना कर दिया है।

पर यह कब तक चलेगा, कितने-कितने जन्मों तक तुम्हारी यह चुप्पी, तुम्हारी यह कायरता, तुम्हारी यह बुजदिली मुझे पीड़ा पहुंचाती रहेगी, कब तक मैं गला फाड़-फाड़ कर आवाजें देता रहूंगा और तुम अनसुनी करते रहोगे, कब तक मैं तुम्हारा हाथ पकड़ कर सिद्ध योगा झील के किनारे ले जाने का प्रयास करूंगा और तुम हाथ छुड़ाकर समाज की उस विषैली वायु में सांस लेने के लिए भाग खड़े होंगे, ऐसा कब तक होगा, इस प्रकार से कब तक गुरु को पीड़ा पहुंचाते रहोगे, कब तक उसके चित्त पर अपने तेज और नुकीले नाखूनों से घाव करते रहोगे, कब तक उसके प्राणों को वेदना देते रहोगे ?

मैंने तुम्हें अपना नाम दिया है, और इससे भी बढ़ कर मैंने तुम्हें अपना पुत्र और आत्मीय कहा है, अपना गोत्र तुम्हें प्रदान किया है और अपने जीवन के रस से सींच-सींच कर तुम्हारी बेल को मुरझाने से बचाने का प्रयास किया है, तुम्हारी सूखी हुई टहनियों में रस प्रदान करने का सफलतापूर्वक प्रयास किया है, और मेरा यह प्रयत्न ही है, कि इन सूखी हुई टहनियों में फिर

नई कोपलें आवें, फिर वातावरण सौरभमय बने, मैंने अपने जीवन के प्रत्येक क्षण को इसके लिए लगाया है, अपनी जवानी को, हिमालय के पत्थरों पर घिस-घिस कर तुम्हें अमृत पिलाने का प्रयास किया है, तुम्हारे प्रत्येक जन्म में मैंने चेतना देने की कोशिश की है, और हर बार तुम्हारे मुरझाये हुए चेहरे पर एक खुशी, एक आह्लाद एक चमक प्रदान करने का प्रयास किया है।

पर यह सब कुछ यों ही नहीं हो गया, इसके लिए मुझे तुमसे भी ज्यादा परिश्रम करना पड़ा है, मैंने अपने शरीर की बाती बना कर तुम्हारे जीवन के अंधकार में रोशनी बिखेरने का प्रयत्न किया है, अपने प्राणों का दोहन कर उस अमृत जल से तुम्हारी बेल को सींचने का और हरी-भरी बनाये रखने का प्रयास किया है, तिल-तिल कर अपने आप को जलाते हुए भी, तुम्हारे चेहरे पर मुस्कराहट देने की कोशिश की है, और मेरा प्रत्येक क्षण, जीवन का प्रत्येक चिन्तन इस कार्य के लिए समर्पित हुआ है, जिससे कि मेरे मानस के राजहंस अपनी जाति को पहिचान सकें, अपने स्वरूप से परिचित हो सकें, अपने गोत्र से अभिभूत हो सकें, और मेरे हृदय के इस मान सरोवर में गहराई के साथ डुबकी लगा कर लौटते समय मोती ला सकें।

और यह हर बार हुआ है, और यह पिछले कई जन्मों से होता रहा है, क्योंकि मैंने हर क्षण तुम्हारे लिए ही प्रयत्न किया है, मेरा जीवन अपने स्वयं के लिए या परिवार के लिए नहीं है, मेरा जीवन का उद्देश्य तो शिष्यों को पूर्णता देने का प्रयास है, और इसके लिए मैंने सिद्धाश्रम जैसा आनन्ददायक और अनिर्वचनीय आश्रम छोड़ा, और तुम्हारे इन मैले-कुचैले, गलियारों में आकर बैठा, जो वायुवेग से एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए सक्षम था, उसने तुम्हारे लिए अपने आप को एक छोटे से वाहन में बन्द कर लिया, जिसका घर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड था, और किसी भी ग्रह या लोक में विचरण करता हुआ जो निरन्तर आनन्दयुक्त था, उसने तुम्हारे लिए अपने आप को एक छोटे से घर में आबद्ध कर लिया, तुम्हारे लिए वह समाज से जूझा, आलोचनाएं सुनीं, गालियां खाई, और कई प्रकार के कुतर्कों का सामना किया, यह सब क्यों? क्या जरूरत थी उसे यह सब सहन करने की, झेलने की, भुगतने की?

और मैंने ऐसा किया, मेरा प्रत्येक क्षण इस बात के लिए कृत संकल्प था, और है कि मैं तुम्हें समाज में गर्व से सिर तानकर खड़ा रहने की प्रेरणा दूं, मैं तुम्हें इस गन्दगी से भरे समाज में देवदूत बनाकर खड़ा कर सकूं, तुम्हारी आंखों में एक चमक पैदा कर सकूं, तुम्हारे पंखों में इतनी ताकत दे सकूं, कि तुम आकाश में सुदूर ऊंचाई पर बिना थके पहुंच सको, और उस ब्रह्मत्व का आनन्द ले सको, मैं तुम्हें उन इन्द्र धनुष के रंगों पर रंग बिखेरने के लिए तैयार कर सकूं, जहां विस्तृत आकाश हो जहां आनन्द का समुद्र लहलहा रहा हो, जहां प्रेम और माधुर्यता की शीतल बयार हो, जहां पूर्णता और सिद्धियां जयमाला लिये तुम्हारे गले में डालने के लिए उद्यत और उत्सुक हों।

और यह सब बराबर हो रहा है, तुमने अपने आपको पहली बार पहिचानने का प्रयत्न किया है, पहली बार यह अहसास किया है, कि तुम संसार में अकेले नहीं हो, कोई तुम्हारा रखवाला अवश्य है, जो तुम्हारे जीवन की बराबर चौकीदारी कर रहा है, कोई ऐसा व्यक्तित्व तुम्हारे जीवन में अवश्य है, जिसे अपनी चिन्ताएं, परेशानियां और समस्याएं खुशी-खुशी देकर अपने आपको हल्का कर सकते हो, और मुझे तुम जो दे रहे हो, उससे मुझे प्रसन्नता है।

क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूं, क्योंकि तुम्हारे पांव मेरे पांव के साथ आगे बढ़ रहे हैं, क्योंकि मैं तुम्हारे जीवन का ध्यान रखने वाला, तुम्हारे जीवन को आह्लाद कारक बनाने वाला और तुम्हारे जीवन के प्रत्येक क्षण का हिसाब-किताब रखने वाला साथ हूं।

मैं इन सब के लिये ही गुरु पूर्णिमा पर आवाज दे रहा हूं, क्योंकि यह तुम्हारा स्वयं का पर्व है, यदि शिष्य सही अर्थों में शिष्य है, यदि सही अर्थों में वह मेरी आत्मा का अंश है, यदि सही अर्थों में मेरी प्राणश्चेतना है, तो उसके पांव किसी भी हालत में रुक नहीं सकते, समाज उसका रास्ता रोक नहीं सकता, परिवार उसके पैरों में बेड़ियां डाल नहीं सकता, वह तो हर हालत में आगे बढ़ कर गुरु चरणों में, मुझ में एकाकार होगा ही, क्योंकि यह एकाकार होना ही जीवन की पूर्णता है, और यदि ऐसा नहीं हो सका तो वह शिष्यता ही नहीं है, वह तो कायरता है, बुजदिली है, कमजोरी है, नपुंसकता है, और मुझे विश्वास है, कि मेरे शिष्यों के साथ इस प्रकार के घिनौने शब्द नहीं जुड़ सकते।

गुरु पूर्णिमा पर्व पर पूरा गुरु परिवार आपका स्वागत करने के लिए तत्पर है, हम तीन दिन तक उस साधना की गंगा में आत्म स्नान करेंगे, उस पवित्र मार्ग पर कुछ कदम और बढ़ाएंगे जो सिद्धाश्रम की ओर जाता है, वही तो जीवन का लक्ष्य है।

विश्वामित्र प्रणीत गुरु सायुज्य लक्ष्मी साधना

सही देखा जाय तो गुरु शब्द का तात्पर्य समस्त साधनाओं का प्रारम्भ और समापन है, सभी प्रकार की साधनाएं गुरु शब्द से ही निष्पन्न होती हैं, और गुरु में ही विसर्जित हो जाती हैं, विश्वामित्र ने एक स्थान पर गोपनीय ढंग से स्वीकार किया है, कि गुरु अपने आप में समस्त ऐश्वर्य का अधिपति होता है, अतः गुरु साधना के द्वारा उस ऐश्वर्य को प्राप्त किया जा सकता है।

विश्वामित्र ने साधना क्रम को समझाते हुए बताया है कि तीन प्रकार की साधनाएं होती हैं – अधम, मध्यम तथा उत्तम।

अधम साधना

अधम उपासना उसे मानते हैं, जब यह अहसास कोई करता है, कि मैं गुरु का शिष्य हूं, मैं उनका प्रिय शिष्य हूं, और मैं गुरु साधना के द्वारा उनको प्रसन्न कर सकता हूं, या सूक्ष्म रूप में उनको देख सकता हूं, अथवा मंत्र बल से अपने स्थान पर उनका आह्वान कर उपस्थित कर सकता हूं, इस प्रकार की साधना में देहाभिमान् हो जाता है, साधक को अपनी देह पर अभिमान हो जाता है, इसीलिए ऐसी साधना को अधम साधना कहा गया है।

मध्यम साधना

इसमें साधक अपने देहाभिमान को त्याग देता है, वह आत्माभिमान करने लग जाता है, वह यह अहसास करने लगता है, कि मेरा आत्म बल प्रधान है, मैं इस आत्म बल के द्वारा गुरु को निश्चित रूप से अपने वश में कर सकता हूं, यदि गुरु और शिष्य आमने सामने हो भी जाय तो मैं अपनी आत्मा के बल से उनको सिद्ध कर सकता हूं, ऐसी स्थिति उच्च कोटि के साधकों के लिए सही नहीं है, ऐसी साधना को मध्यम साधना कहा गया है।

उत्तम साधना

उत्तम साधना या उत्तम उपासना वह कही जाती है, जिसमें अपने आपको गुरु के मन और प्राणों में विसर्जित कर देने की क्रिया होती है, साधना के प्रारम्भ में ही उसकी भावना यह होती है, कि मेरी स्थिति नगण्य है, या दूसरे शब्दों में मेरा अस्तित्व है ही नहीं, अगर मैं भोजन करता हूं तो अपने स्वाद के लिए नहीं करता अपितु गुरु की तृप्ति के लिए अथवा उनकी संतुष्टि के लिए यह कर रहा हूं, ये भोजन के ग्रास मेरे उदर में नहीं, अपितु गुरु के उदर में समाहित हो रहे हैं, इस समय कड़ी धूप है, और अवश्य ही गुरुदेव प्यासे होंगे और मैं शीतल सुस्वादु जल से उन्हें तृप्त कर रहा हूं, ऐसा चिंतन स्वाभाविक

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

रूप से उसके मन में आना चाहिए। यह चिंतन बलपूर्वक नहीं होना चाहिए, दूसरे शब्दों में कहा जाय तो वह अपने दिन भर के कार्य कलाप यह मान कर, इस चिंतन के साथ सम्पन्न करता है, कि यह कार्य गुरुदेव के लिए करना ही है, यह सब कुछ गुरुदेव का ही है, मैं तो इस पूरे कार्य या सम्पत्ति का मात्र ट्रस्टी हूं, और जो जिम्मेवारी या पारिवारिक कार्य मुझे सौंप रखे हैं, मुझे इसलिए करने हैं, क्योंकि यह सब कुछ उनका है, और उनके लिए पूर्ण जिम्मेवारी के साथ यह कार्य करते रहना है, ऐसा ही विचार साधना और उपासना के लिए होना चाहिए, और ऐसी साधना को उत्तम साधना कहा जाता है।

चामुण्डा तंत्र में स्पष्ट रूप से कहा है, कि मेरे जीवन में गुरु मुख्य है, उनके लिए मैं क्रिया कर रहा हूं, और उनकी आज्ञा से ही मैं ये साधनाएं और उपासनाएं सम्पन्न कर रहा हूं, यदि इस भाव से साधक किसी प्रकार की साधना या उपासना नहीं करता तो सब कुछ निष्फल जाता है —

पुस्तके लिखितो मंत्रो येन सुन्दरि जप्यते,
न तस्य जायते सिद्धि हानिरेव पदे-पदे।
गुरु मुख्याः क्रियाः सर्वा भुक्ति-मुक्ति फल प्रदाः
गुरु मुक्ताः क्रियाः सर्वा निष्फलाः स्युर्यतो ध्रुवम्॥

साधनाक्रम

जैसा कि मैंने ऊपर बताया कि विश्वामित्र ने एक अत्यन्त गोपनीय और दुर्लभ लक्ष्मी साधना क्रम स्पष्ट किया जिसके माध्यम से पूर्ण लक्ष्मी सिद्ध होती ही है, जब कोई साधना या देवी सिद्ध हो जाती है, तो फिर बार-बार उसकी साधना करने की जरूरत नहीं रहती, एक बार सिद्ध करने पर पूरे जीवन में वह लक्ष्मी पूर्णता के साथ साधक के शरीर में स्थापित हो जाती है, और जहां-जहां भी साधक जाता है, लक्ष्मी उसके साथ-साथ चलती रहती है, दूसरे शब्दों में कहा जाय तो दूसरे व्यक्ति या साधक लक्ष्मी के पीछे-पीछे भागते रहते हैं, जब कि ऐसी साधना में लक्ष्मी स्वयं साधक के पीछे भागती रहती है, और जहां भी साधक खड़ा होता है वहीं धन-धान्य की वर्षा होने लगती है, लक्ष्मी का स्रोत प्रवाहित होने लगता है, और सभी दृष्टियों से ऐश्वर्य प्राप्ति होने लगती है।

यह साधना केवल मात्र तीन घण्टे की है, जो कि अमावस्या की रात्रि को सम्पन्न की जाती है, रात्रि में प्रथम प्रहर के बाद किसी भी समय यह साधना सम्पन्न की जा सकती है, इसमें साधक शुद्धता के साथ स्नान कर श्वेत वस्त्र धारण कर, श्वेत आसन पर उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जाय और अपने सामने गुरु चित्र को स्थापित कर उसके समक्ष किसी पात्र में **'गुरु सायुज्य लक्ष्मी यंत्र'** को स्थापित करे दे, तत्पश्चात अपने शरीर को ही गुरु शरीर मानता हुआ अपने आपको गुरु में लीन करता हुआ, अपने आज्ञाचक्र में अर्थात दोनों भौंहों के बीच परम तत्व गुरु की स्थापना करे।

परम तत्व गुरु स्थापन

ऐं ह्रीं श्रीं अमृताम्भोनिधये नमः। रत्न द्वीपाय नमः। सन्तान-वाटिकायै नमः। हरिचन्दन-वाटिकायै नमः। पारिजात वाटिकायै नमः। पुष्परागप्राकाराय नमः। गोमेद रत्न-प्राकाराय नमः। वज्र रत्न प्राकाराय नमः। मुक्ता रत्न प्राकाराय नमः। माणिक्य रत्न प्राकाराय नमः। सहस्र स्तम्भ प्राकाराय नमः। आनन्द-वापिकायै नमः। बालातपोद्धाराय नमः। उत्तरद्वाराय नमः। पूर्व द्वाराय नमः। दक्षिणद्वाराय नमः। पश्चिम द्वाराय नमः। नाना वृक्ष महोद्यानाय नमः। कल्प वृक्ष वाटिकायै नमः। मन्दार वाटिकायै नमः। कदम्ब वन वाटिकायै नमः। पद्मराग रत्न प्राकाराय नमः। इन्द्रनील रत्न प्राकाराय नमः। वैदूर्य रत्न प्राकाराय नमः विद्रुम रत्न प्राकाराय नमः। माणिक्य मण्डपाय नमः। अमृत वापिकायै नमः। विमर्श वापिकायै नमः। चन्द्रिकोद्गाराय नमः। महा पद्माटव्यै नमः। पूर्वाम्नाय नमः। दक्षिणाम्नाय नमः। पश्चिमाम्नाय नमः। उत्तराम्नाय नमः। उत्तर-द्वाराय नमः। महासिंहासनाय नमः। विष्णुमयैक पंचपादाय नमः। ईश्वरमयैक पंचपादाय नमः हंस कूल तटिनाय नमः। कौसुम्भास्तरणाय नमः। महा-यवनिकायै नमः। रत्नद्वीप बलयाय नमः। ब्रह्म मयैक पंच पादाय नमः। रुद्र मयैक पंच पादाय नमः। सदाशिव मयैक पंच पादाय नमः। हंस तूल महोपधानाय नमः। महाविभानिकायै नमः श्री परम तत्वाय गुरुभ्यो नमः।

इस प्रकार परम तत्व गुरु को अपने आज्ञाचक्र में स्थापित करने के बाद गुरु की द्वादश कलाओं को पात्र में जल अक्षत, कुंकुम लेकर अर्घ्य दें।

ऐं ह्रीं श्रीं क्तीं अं सूर्य मण्डलाय द्वादश कलात्मने अर्घ्य पात्राय नमः।

इसके बाद गुरु उनकी प्रत्येक कला का पूजन करें, इसी प्रकार अर्घ्य, अक्षत, पुष्प आदि लेकर बारह बार जल में स्थापित करें।

द्वादश कला पूजन

ऐं ह्रीं श्रीं कं भं तपिन्यै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं खं बं विभावै नमः।

ऐं ह्रीं श्रीं जं फं धूम्रायै नमः ।
ऐं ह्रीं श्रीं घं पं विद्युधायै नमः ।
ऐं ह्रीं श्रीं डं नं बोधिन्यै नमः ।
ऐं ह्रीं श्रीं चं धं ज्वालिन्यै नमः ।
ऐं ह्रीं श्रीं गं दं शोषिण्यै नमः ।
ऐं ह्रीं श्रीं जं थं वरिण्यायै नमः ।
ऐं ह्रीं श्रीं झं तं आकर्षिण्यै नमः ।
ऐं ह्रीं श्रीं ञं णं मायायै नमः ।
ऐं ह्रीं श्रीं टं ढं विश्वस्वत्यै नमः ।
ऐं ह्रीं श्रीं ठं डं हेमप्रभायै नमः ।

उपरोक्त कला पूजन में **ऐं ह्रीं श्रीं** लक्ष्मी के बीज मंत्र है और इसी मंत्र को **'कमलगट्टा माला'** से ५ माला मंत्र जप करें।

लक्ष्मी प्राप्ति के साथ सुख, सम्मान, संतोष, तुष्टि, पुष्टि आदि भी प्राप्त होनी चाहिए तभी तो उस धन का महत्व है, तभी उस प्राप्त धन का सही उपयोग है, तभी तो जीवन में पूर्ण आनन्द और ऐश्वर्य है, इसीलिए द्वादश कला पूजन के बाद पूर्ण ऐश्वर्य के लिए अर्घ्य पात्र में जल, अक्षत, कुंकुम और पुष्प लेकर गुरु को समर्पित करें, पहले मूल समर्पण करें, फिर सोलह कलाओं में भी इसी प्रकार से अर्घ्य पात्र समर्पित करें।

ऐं ह्रीं श्रीं उं सोम मण्डलाय षोडशी कलात्मने अर्घ्य पात्राय नमः ।

अर्घ्य को समर्पित करते समय उसका जल थोड़ा थोड़ा करके सोलह बार ग्रहण करें, इसके बाद गुरु की सोलह कलाओं का अर्घ्य पूजन करें।

सोलह कला पूजन

ऐं ह्रीं श्रीं अं अमृतायै नमः ।
ऐं ह्रीं श्रीं आं मानदायै नमः ।
ऐं ह्रीं श्रीं इं तुष्ट्यै नमः ।
ऐं ह्रीं श्रीं ईं पुष्ट्यै नमः ।
ऐं ह्रीं श्रीं उं प्रीत्यै नमः ।
ऐं ह्रीं श्रीं ऊं रत्यै नमः ।
ऐं ह्रीं श्रीं ऋं शिवै नमः ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॠं सुधायै नमः ।
ऐं ह्रीं श्रीं ऌं शान्त्यै नमः ।
ऐं ह्रीं श्रीं ॡं ज्योत्स्नायै नमः ।
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं हेमवत्यै नमः ।
ऐं ह्रीं श्रीं ओं छायायै नमः ।
ऐं ह्रीं श्रीं औं पूर्णिमायै नमः ।
ऐं ह्रीं श्रीं अः विद्यायै नमः ।
ऐं ह्रीं श्रीं अः अमावस्यायै नमः ।

वास्तव में ही यह एक अद्भुत और आश्चर्यजनक गुरु लक्ष्मी पूजन है जिससे कि पूर्ण समृद्धता और ऐश्वर्य प्राप्त होता है।

इसके बाद गुरु के मूल मंत्र **ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः** की एक माला फेरें और फिर अपने शरीर में ही गुरु को समाहित मान कर सामने किसी पात्र में दीपक लगा कर बैठे-बैठे ही समर्पण आरती करें।

पूर्ण सिद्ध आरती

अत्र सर्वानन्द मये, चेन्दव चक्रे, परब्रह्म स्वरूपिणि, परापर शक्ति श्री महा गुरु देव समस्त चक्र नायके, सम्वित्ति रूप चक्र नायकाधिष्ठिते, त्रैलोक्यमोहन सर्वाशापरि पूरक सर्वसंक्षोभकारक सर्वशो भाग्यदायक सर्वार्थसाधक सर्वरक्षाकार सर्वरोगहर सर्वसिद्धिप्रद सर्वानन्दरथ चक्र समुन्मीलित समस्त प्रकट गुप्त गुप्ततर सम्प्रदाय कुल कौलिनी निगम रहस्यातिरहस्य परापर रहस्य समस्त योगिनी परिवृत श्री त्रिपुरा श्री त्रिपुरमालिनी त्रिपुरसिद्धात्रिपुराम्बा तत्तच्चक्रनायिका वलित चरण कमल श्री महा गुरु नित्यदेव सर्वचक्रेश्वर सर्वमंत्रेश्वर सर्वविद्येश्वर सर्वपीठेश्वर सर्वकामेश्वर सर्वतत्वेश्वर सर्वेश्वर त्रैलोक्यमोहिनी जगदुत्पत्ति गुरु सर्वचक्रमय तच्चक्रनायका सहिताः स मुद्रा, स सिद्धयः सायुधाः स वाहनाः स परिवाराः सर्वोपचारैः श्री परमतत्वाय गुरु परापरया सपर्यया पूजितास्तर्पिताः सन्तु ।

इसके बाद हाथ जोड़ कर क्षमा प्रार्थना सम्पन्न करें।

श्रीनाथादि गुरु त्रयं गणपतिं पीठ त्रयं भैरवं
सिद्धौघं बटुक त्रयं पद युगं दूती क्रमं मण्डलम् ।
वीरानष्ट चतुष्क षष्टि नवकं वीरावली पंचकं,
श्रीमन्मालिनि मंत्रराज सहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम् ।

इस प्रकार पूर्ण गुरु लक्ष्मी साधना साधक के लिए गुरु कृपा से लक्ष्मी वरदान है, जिससे उसके जीवन में गुरुतत्व और लक्ष्मी तत्व समाहित हो जाते हैं।

आप अपने दो मित्रों को पत्रिका सदस्य बनाएं तथा कार्ड क्र 6 पर अपने दोनों मित्र का पते लिखकर भेजें कार्ड मिलने पर रु. 438/- की वी. पी. पी. द्वारा आपको मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त 'गुरु सायुज्य लक्ष्मी यंत्र', एवं माला भेज देंगे तथा दोनों मित्रों को एक वर्ष तक नियमित रूप से पत्रिका भेजी जायेगी।

कृष्णस्तु भगवान् स्वयं
भगवान कृष्ण, षोडश कला पूर्ण अनन्त शक्ति है।

कृष्ण पूजन

जन्माष्टमी के दिन भगवान कृष्ण का विशिष्ट पूजन करना प्रत्येक साधक का कर्तव्य है पहले पूजन की सभी सामग्री एकत्र कर लें। रात्रि में पूजन प्रारम्भ करने से पहले स्नान करके पूजा कक्ष में पीला या सफेद आसन बिछाकर उत्तर या पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें। अपने सामने चौकी के ऊपर श्वेत वस्त्र बिछा दें, उस पर भगवान कृष्ण का चित्र अथवा उनकी प्रतिमा स्थापित करें। अपनी बाई ओर धूप और दीप जला लें। इसके बाद हाथ जोड़कर भगवान गणपति का स्मरण करें।

प्रार्थना

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥

संकल्प

दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करें –

ॐ विष्णु र्विष्णु र्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय परार्द्धे श्वेतवाराह कल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे अमुक मासे (महीने का नाम) अमुक तिथौ (तिथि बोलें) अमुक वासरे (दिन का नाम) अमुक गोत्रीयः (गोत्र बोले) अमुक शर्माऽहं (अपना नाम बोलें) अद्य भगवतो कृष्णस्य प्रीत्यर्थे जन्माष्टमी निमितं पूजनं करिष्ये।

जल को भूमि पर छोड़ दें।

कलश पूजन

पंचपात्र में जल भरकर अपना दायीं ओर स्थापित करें, उसमें वरुण देवता का आवाहन करें –

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु देव पूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥

इसके बाद वं वरुणाय नमः मंत्र को बोलते हुए गन्ध, अक्षत, व पुष्प को कलश में डालकर तीर्थों का आवाहन करें –

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

प्रसन्नो भव। वरदो भव। अनया पूजया वरुणाद्यावाहिता देवता प्रीयन्ताम।

पवित्रीकरण

इसके बाद पंचपात्र के जल को आचमनी से बाएं हाथ में लेकर, दायें हाथ से अपने ऊपर छिड़कते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें –

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सः बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

गुरु पूजन

दोनों हाथ जोड़कर गुरुदेव का ध्यान करें –

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् पर ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

इसके बाद गन्ध, अक्षत, पुष्प तथा धूप-दीप से पंचोपचार पूजन करें। फिर सामने चौकी पर भगवान कृष्ण का सुन्दर चित्र (प्रतिमा, विग्रह) स्थापित करें तथा षोडशोपचार पूजन करें –

ध्यान

वंशी विभूषित कराञ्च नीलदाभात्,
पीताम्बरावरुण बिम्ब फलाधरोष्ठात्।
पूर्णेन्दु सुन्दर मुखावर बिम्ब नेत्रात्,
कृष्णात् परं किमपि तत्वमहं न जाने॥
श्री कृष्णाय नमः ध्यानं समर्पयामि।

आसन

पुष्प लेकर किसी थाली में आसन के रूप में स्थापित कर लें और उस पर श्रीकृष्ण विग्रह चित्र अथवा मूर्ति स्थापित कर निम्न मंत्र का उच्चारण करें –

रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्व शान्तिकरं शुभं,
आसनं च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।
श्रीकृष्णाय नमः आसनं समर्पयामि।

पाद्य

दो आचमनी जल श्रीकृष्ण विग्रह पर चढ़ा दें –

गंगोदकं निर्मलं च सर्व सौगन्ध्य संयुतम,
पाद प्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम् ।
श्री कृष्णाय नमः पाद्यं समर्पयामि ।

अर्घ्य

किसी पात्र में जल लेकर, उसमें कुंकुम तथा अक्षत मिला कर अर्घ्य प्रदान करें –

अर्घ्यं गृहाण देवेश गन्ध पुष्पाक्षतैः सह,
करुणा कर मे देव गृहाणाऽर्घ्यं नमोऽस्तुते ।
श्री कृष्णाय नमः अर्घ्यं समर्पयामि ।

आचमनीय

आचमनी से तीन बार जल विग्रह पर चढ़ाते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें –

सर्व तीर्थ समानीतं सुगन्धि निर्मलं जलं,
आचम्यतां मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ।
श्री कृष्णाय नमः आचमनीयं समर्पयामि ।

मधुपर्क

कांसे, चांदी अथवा तांबे के पात्र में मधु, घृत, दधि मिलाकर विग्रह चढ़ावें –

इदं मधुपर्कं श्री कृष्णाय निवेदयामि नमः ।

इसके बाद पुनः आचमन कराएं।

स्नान

आचमनी से विग्रह पर जल चढ़ाते हुए निम्न मंत्र उच्चरित करें –

वृन्दावन विहारेण श्रान्ते विश्रान्ति कारकं ।
चन्द्रपुष्कर पानीयं गृहाण पुरुषोत्तम ॥
श्री कृष्णाय नमः स्नानं समर्पयामि ।

दुग्ध स्नान

ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधाः पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम् ।
श्री कृष्णाय नमः दुग्ध स्नानं समर्पयामि ।

दधि स्नान

ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः ।
सुरभि नो मुखाकरत प्रण आयू (ग्ं) षितारिषत्
श्री कृष्णाय नमः दधि स्नानं समर्पयामि ।

घृत स्नान

ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतमस्य धाम ।
अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहा कृतं वृषभवक्षि हव्यम् ॥
श्री कृष्णाय नमः घृत स्नानं समर्पयामि ।

मधु स्नान

ॐ मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः । मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव (ग्ं) रजः । मधु द्यौरस्तुनः पिता । मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमां अस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावो भवन्तु नः ।
श्री कृष्णाय नमः मधु स्नानं समर्पयामि ।

शर्करा स्नान

ॐ अपा (ग्ं) रसमुद्वयस (ग्ं) सूर्ये सन्त (ग्ं) समाहितम् । अपा (ग्ं) रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येषते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ।श्री कृष्णाय नमः शर्करा स्नानं समर्पयामि ।

पंचामृत स्नान

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः ।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित् ।
श्री कृष्णाय नमः पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि ।

इसके बाद भगवान कृष्ण के विग्रह को शुद्ध जल से स्नान कराकर पोछ लें। निम्न उपकरणों को अब विग्रह पर चढ़ावें।

वस्त्र

निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए पीला वस्त्र तथा उत्तरीय वस्त्र भगवान को पहना दें तथा उनके स्थापन निमित जो आसन है, उस पर स्थापित करें –

इदं परिधेय वस्त्रम् उत्तरीय वस्त्रं च श्रीकृष्णाय निवेदयामि नमः ।

आभूषण

हार, मुकुट मणि, कड़े आदि गहने भगवान को पहनाते हुए इस मंत्र को बोलें –

इमानि भूषणानि श्रीकृष्णाय निवेदयामि नमः ।

गन्ध

केशर, कपूर मिश्रित चन्दन लेकर भगवान कृष्ण के मस्तक पर लगावें –

इमं गन्धं श्रीकृष्णाय निवेदयामि नमः ।

अक्षत

हल्दी या कुंकुम से रंगे चावल विग्रह पर चढ़ाएं –

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

अक्षतारश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर।
श्री कृष्णाय नमः अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्प हार

सुगन्धित नाना प्रकार के पुष्प तथा पुष्प माला विग्रह पर चढ़ावें और निम्न मंत्र का उच्चारण करें –

इमानि पुष्पाणि श्रीकृष्णाय निवेदयामि नमः।

तुलसी दल

तुलसी दल पर चन्दन लगाकर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चढ़ाएं –

इदं सचन्दनं तुलसीदलं श्रीकृष्णाय निवेदयामि नमः।

धूप

निम्न मंत्र बोलते हुए धूप अर्पण करें –

इमं धूपं श्रीकृष्णाय निवेदयामि नमः।

दीप

श्रीकृष्ण को दीप दिखाएं –

इमं दीपं श्रीकृष्णाय निवेदयामि नमः।

नैवेद्य

स्वच्छ थाली में भोज्य पदार्थ,पंजीरी सजा कर भगवान के सामने रखें, साथ में एक ताम्र पात्र में जल भी रखें और निम्न मंत्र भी बोलें –

ॐ क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजन वल्लभाय स्वाहा।

इस मंत्र का उच्चारण करके निम्न मंत्र बोले

इदं नैवेद्यं श्रीकृष्णाय कल्पयामि नमः

इसके बाद इन मंत्रों से पांच बार आचमन करायें –

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा।
ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा।
ॐ समानाय स्वाहा।

फल

अनेक प्रकार के ताजे और मीठे फल थाली में सजाकर भगवान को अर्पित करें –

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव,
तेन मे सफला वाप्तिः भवेज्जन्मनि जन्मनि।

ताम्बूल

मुख शुद्धि के लिए ताम्बूल भगवान को अर्पित करें –

एतत् ताम्बूलं श्रीकृष्णाय निवेदयामि नमः।

पुष्पाञ्जलि

आरती के बाद फिर दोनों हाथ में पुष्प लेकर भगवान श्रीकृष्ण को अर्पित करें –

नाना सुगन्ध पुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च,
पुष्पाञ्जलि मया, दत्ता गृहाण परमेश्वर।
श्री कृष्णाय पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि नमः।

नमस्कार

दोनों हाथ जोड़ें –

कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने।
प्रणतक्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः॥
श्री कृष्णाय नमः।

इसके बाद निम्न मंत्र का ३ माला मंत्र जप करें –

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

विशेषार्घ्य

आचमनी में अक्षत, पुष्प एवं कुंकुम लेकर निम्न संदर्भ को बोलते हुए भगवान को अर्पित करें –

अनया पूजया श्रीकृष्णः परमात्मा देवता प्रीयन्ताम्।
ॐ तत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु।

इसके बाद अपने समस्त स्वजनों के साथ प्रसाद ग्रहण करें।

❊ आरती श्रीकृष्ण जी की ❊

आरती कुंज बिहारी की। श्री गिरधर कृष्ण मुरारी की।
गले में वैजन्ती माला। बजावै मुरली मधुर बाला।
श्रवण में कुण्डल झलकाला। नंद के आनन्द नन्दलाला।
गगन सम अंग कांति काली। राधिका चमक रही आली।
लतन मे ठाढ़े बनमाली। भ्रमर सी अलक।
कस्तूरी तिलक चंद्र सी झलक। ललित छवि श्यामा प्यारी की।
श्री गिरधर . . .

कनकमय मोर मुकुट बिलसै। देवता दरसन को तरसै।
गगन सों सुमन रासि बरसै। बजै मुरचंग।
मधुर मिरदंग ग्वालनी संग। अतुल रति गोप कुमारी की॥
श्री गिरधर . . .

जहां ते प्रकट भई गंगा। सकल मल हारिणी श्री गंगा।
स्मरन ते होत मोह भंगा। बसी सिव सीस जटा के बीच।
हरै अघ कीच। चरन छवि श्री बनवारी की।
श्री गिरधर . . .

चमकती उज्ज्वल तट रेनु। बज रही वृन्दावन बेनु।
चहूं दिसि गोपिग्वाल धेनु। हंसत मृदु मंद चांदनी चंद।
कटत भव फन्द। टेर सुन दीन दुखारी की॥
आरती कुंज बिहारी की। श्री गिरधर कृष्ण मुरारी की

सर्वस्वम् आप्यते नित्यं लक्ष्मिकामैः सुहृद्जनैः

लक्ष्मी सूक्त के पाठ से सभी सम्पदा स्वतः प्राप्त होती है।

लक्ष्मी सूक्तम्

सम्पदा, सर्वस्व, स्वास्थ्य, पवित्रता, मन की निर्मलता, धन-धान्य, पुत्र-पौत्रादि, वृद्धि एवं दीर्घायु प्राप्त होते हैं लक्ष्मी सूक्तम् के नित्य पाठ करने से

जब भी श्री सूक्त का पाठ किया जाता है, तब लक्ष्मी सूक्त का पाठ करना अनिवार्य माना गया है, मात्र श्री सूक्त का पाठ करने से पूर्ण फल की प्राप्ति नहीं होती। वैदिक काल से लेकर वर्तमान काल तक धन का महत्व कम नहीं हुआ है। चाहे कोई भी युग क्यों न हो, धन के बगैर जीवन-यापन करना असम्भव है। इसी रहस्य को ध्यान में रखते हुए हमारे पूर्वजों ने श्री सूक्त, लक्ष्मी सूक्त से सम्बन्धित पूजा-पाठ की विधि को हमें सौंपा है, ताकि उसके माध्यम से हम अपने जीवन को पूर्ण बना सकें। इस लेख में 'लक्ष्मी सूक्तम्' के मर्म का विश्लेषण किया गया है।

पद्मानने पद्मिनि पद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि।
विश्वप्रिये विश्वमनोऽनुकूले त्वत्पादपद्मं मयि सन्निधत्स्व ॥१॥

पद्मानने पद्म ऊरू पद्माक्षि पद्मसम्भवे।
तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम् ॥२॥

अश्वदायी गोदायी धनदायी महाधने।
धनं मे लभतां देवि सर्वकामांश्च देहि मे ॥३॥

पुत्र पौत्र धनं धान्यं हस्त्यश्वादि गवे रथम्।
प्रजानां भवसि माता आयुष्मंतं करोतु मे ॥४॥

धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः।
धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणं धनमश्विनौ ॥५॥

वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा।
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः ॥६॥

न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तया श्रीसूक्त जापिनाम् ॥७॥

सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगंधमाल्यशोभे।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीदमह्यम् ॥८॥

विष्णु पत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम्।
विष्णुप्रियां सखीं देवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम् ॥९॥

ॐ महालक्ष्मी च विद्महे विष्णुपत्नी च धीमहि।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥१०॥

आनंदः कर्दमः श्रीदः चिक्लीत इति विश्रुताः।
ऋषयश्च श्रियः पुत्रा मयि श्रीर्देवी देवता ॥११॥

ऋणरोगादि दारिद्र्यं पापं च अपमृत्यवः।
भयशोकमनस्तापाः नश्यंतु मम सर्वदा ॥१२॥

अर्वर्चस्यमायुष्यमारोग्यमाविधात्पवमानं महीयते।
धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥१३॥

न देवतोषणं व्यर्थं भविष्यति कदाचन! ॥१४॥

१. "कमलवत् विकसित सुन्दर मुख वाली हे लक्ष्मी! कमलवासिनि! तुम तो 'पद्मिनी' हो, कमल के समान कोमल ग्रीवा वाली हो। कमल पत्र की तरह विशाल आंखों वाली हे देवि! तुम सब की प्यारी हो, सबके मन को अनुकूलता प्रदान करने वाली हो, अपने चरण कमलों से मुझे पवित्र बना दो।" इसका तात्पर्य यह हुआ, कि लक्ष्मी हमारे घर में एक बार प्रवेश करे और कभी न जाये।

२. हे कमलमुखि! कोमलांगी देवी! तुम कमल के समान नेत्र वाली, कमल सदृश अत्यन्त कोमल, उस कमल सी कृपा दृष्टि से मुझे देखो, ताकि मैं जीवन में सुख प्राप्त करूं।

३. हे महालक्ष्मी! तुम अश्व, गाय, धन-धान्य, दौलत सब कुछ देने वाली हो। मुझे अपार धन प्रदान करो, मेरी सभी कामनाओं को पूर्ण करो – यही मेरी प्रार्थना है।

४. हे महालक्ष्मी! तुम समस्त जीवों की माता हो! तुम्हारी कृपा से मेरे घर में पुत्र, पौत्र, धन-धान्य, हाथी, गाय, रथ इत्यादि समस्त वैभव प्राप्त हो सके। मुझे दीर्घायु जीवन प्रदान करो, मां हस्ति, अश्व, जमीन, धन-धान्य यह सब होने के बावजूद भी कुछ लोग रोग ग्रस्तता के कारण इसका उपभोग नहीं कर पाते और कभी-कभी अकाल मृत्यु के शिकार भी बन जाते हैं। अगर किसी के पास अपार धन हो, लेकिन उसकी आयु अल्प हो, तो क्या प्रयोजन? इसलिए भक्त ने हस्ति, अश्व इत्यादि वैभव मांगने के बाद दीर्घायु की बात कही है।

५. सारा संसार लक्ष्मी का ही स्वरूप है। अग्नि, वायु, सूर्य, वसु, इन्द्र, बृहस्पति, वरुण, अश्विनी देवता – ये सब लक्ष्मी के ही स्वरूप हैं। इनके द्वारा भी मुझे समस्त वैभव मिले यही इस मंत्र का तात्पर्य है।

६. वह चाहे भौतिक सुख हो या आध्यात्मिक प्रगति सभी लक्ष्मी के माध्यम से ही प्राप्त होते हैं। आध्यात्मिक प्रगति का साधन यज्ञ है, साधनाओं में सिद्धि प्राप्त करने का साधन यज्ञ है, और यज्ञ लक्ष्मी (धन) के बिना संभव नहीं है। इसको हम अमृतत्व कह सकते हैं, अमृतत्व की प्राप्ति भी लक्ष्मी के माध्यम से ही संभव है। उपरोक्त मंत्र का अर्थ इस प्रकार है –

हे वैनतेय! विनता के पुत्र गरुड देव! आप सोमरस का पान करो, वृत्रासुर को समाप्त करने वाले इन्द्र देवता भी सोम पान करें। तुम दोनों मुझे अमृत प्रदान करो, जिससे मैं अजर-अमर बन सकूं।

यज्ञ का मुख्य भाग लेने वाला इन्द्र और यज्ञफल प्रदाता गरुड दोनों से निवेदन किया गया है, कि जो भी यज्ञ करें, वे उस यज्ञ में सोमपान करें, उसका फल हमें प्राप्त हो, यही इस मंत्र का अर्थ है।

७. इसी लक्ष्मी सूक्त का जो पाठ करते हैं, उनके पास क्रोध, मत्सर्य, लोभ, कुबुद्धि, कपट इत्यादि नहीं हुआ करते, वे पुण्य पुरुष सात्विकता की प्रतिमूर्ति होते हैं।

इस मंत्र में लक्ष्मी प्राप्त करने का विधान स्पष्ट रूप से बताया गया है। कभी क्रोध नहीं करना, लोभ, मत्सर्य, अपकार की भावनाओं को मन से निकाल फेंकने पर ही लक्ष्मी की कृपा मिलती है।

८. कमल में निवास करने वाली, कमल को हाथ में धारण करने वाली, शुभ्र श्वेत वस्त्र को धारण करने वाली, चंदन, इत्र आदि से सुगन्धित, पुष्प मालाओं से सुशोभित, विष्णु प्रिया, तीनों लोकों की माता, सुन्दरता की प्रतिमूर्ति हे लक्ष्मी! मुझ पर कृपा करो।

९. भगवान विष्णु की पत्नी, क्षमा रूपिणी, लक्ष्मी को मैं प्रणाम करता हूं।

१०. मैं विष्णु की पत्नी उस महालक्ष्मी का ध्यान कर रहा हूं, वह देवी मेरी बुद्धि को प्रेरित करें। महालक्ष्मी हमेशा सत्व गुण की प्रतीक मानी गई हैं। सबके मन में शुभ संकल्प जगे – यही इस मंत्र का अर्थ है।

११. आनन्द, कर्दम, श्रीद (कुबेर) और चिक्लीत ये चार लक्ष्मी के पुत्र हैं, ये सभी अपनी माता के साथ मेरे घर में वास करें।

१२. हे माते! मेरे जीवन के ऋण, रोग, दारिद्रय, पाप, अपमृत्यु, भय, शोक, मनस्ताप – ये सभी नष्ट हो जाएं। जीवन में कोई अभाव न रहे, चिन्ता न रहे, व्याकुलता न रहे, भय, रोग शोक न रहे। यही जीवन की पूर्णता है।

१३. इस लक्ष्मी सूक्त का पाठ करने से सम्पदा, वर्चस्व, दीर्घायु, स्वास्थ्य, पवित्रता, मन की निर्मलता, धन-धान्य, पुत्र पौत्रादि, वृद्धि एवं सौ वर्ष की आयु प्राप्त होती है। इस प्रकार लक्ष्मी सूक्त एक उच्चकोटि का मंत्र है, इसका प्रत्येक श्लोक देवी का स्वरूप है।

श्री सूक्त के पाठ में लक्ष्मी सूक्त को भी शामिल करना सौभाग्यदायक है। इस सूक्त के पाठ से, तथा नियमित रूप से हवन करने से, कमला महाविद्या स्वरूपिणी लक्ष्मी अवश्य प्रसन्न होंगी। जो भी पूजा-पाठ किया जाता है, उसका फल तो मिलता ही है। जितनी श्रद्धा, उतना ही फल।

१४. जगज्जननी मां कमला प्रसन्न हो जायें, तो हमारा जीवन सौभाग्यपूर्ण बन जायेगा।

दिनांक : .....जुलाई 2000

कृपया मुझे साधना के लिए निम्न सामग्री भिजवा दें, वी.पी.पी. आने पर मैं उसे छुड़ा लूंगा।

मेरा नाम : .....

ग्राम : ..... पोस्ट: .....

जिला: ..... राज्य: .....

सामग्री का नाम

1

प्रिय सम्पादक जी, दिनांक : ..... जुलाई 2000

पूज्य गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी द्वारा रचित निम्न अनमोल कृतियां वी.पी.पी. से भेजने की कृपा करें। वी.पी.पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धनराशि दे कर छुड़ा लूंगा पुस्तकों के नाम –

....

....

....

....

मेरा नाम/पता : .....

.....

नोट : 300/– से अधिक मूल्य का साहित्य एक साथ मंगाने पर 20% छूट प्रदान की जायेगी।

2

(पृष्ठ संख्या 57 पर प्रकाशित)

प्रिय सम्पादक जी, दिनांक : ..... जुलाई 2000

मुझे उपहार स्वरूप 'अखण्ड सौभाग्यवती माला' 365/– (300/– न्यौछावर तथा डाक व्यय 65/–) की वी.पी.पी. से भेजने की कृपा करें। वी.पी.पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धनराशि दे कर छुड़ा लूंगा। वी.पी.पी. छूटने पर मुझे 20 पत्रिकाएं निःशुल्क भेजी जायेंगी।

मेरा नाम : .....

पूरा पता : .....

.....

.....

.....

3

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

यदि आप अपने जीवन के शब्दकोष से असम्भव शब्द निकाल देना चाहते हैं, तो सम्पन्न करें यह साधना

षोडश योगिनी साधना

तंत्र के आदि रचयिता भगवान शिव हैं और समस्त तांत्रिक विद्याओं की रचना उन्हीं के द्वारा हुई है। बाद के विद्वानों ने शिव रचित विद्याओं में शोध कर उनमें निहित अनेक नवीन रहस्यों को खोज निकाला और अपने शिष्यों में उस ज्ञान का संचरण कर आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अमूल्य थाती के रूप में उन्हें सौंप दिया।

भगवान शिव ने पार्वती को योगिनी साधना के विषय में पूर्ण उपदेश दिया है। जब भगवान शिव से पार्वती ने पूछा, कि देवताओं के लिए तो स्वर्ग में सभी प्रकार के सुख उपलब्ध हैं, अप्सराएं नित्य उनकी सेवा करती रहती हैं, उन्हें अक्षुण्ण यौवन प्राप्त है और उनकी समस्त प्रकार की इच्छाएं पूर्ण होती हैं, जबकि पृथ्वी लोक में रहने वाले मनुष्यों की सभी इच्छाएं पूर्ण नहीं हो पातीं और वे अपनी अपूर्ण इच्छाओं के जाल में उलझे जन्म-मरण के चक्र में फंसे रहते हैं। अतः आप ऐसा उपाय बतायें, जिससे मनुष्य भी देवताओं के समान तेजस्वी और पराक्रमी बन सके और अपनी समस्त प्रकार की इच्छाओं को पूर्णता प्रदान करते हुए विजयता के पथ पर अग्रसर हो सकें।

भगवान शिव ने उत्तर दिया — योगिनी साधना ही एक मात्र ऐसा उपाय है, जिसके माध्यम से मनुष्य अपनी समस्त प्रकार की इच्छाओं को पूर्णता देते हुए भौतिक और आध्यात्मिक उपलब्धियों को प्राप्त कर सकते हैं। योगिनी साधना सम्पन्न करने से भोग व मोक्ष की प्राप्ति होती है। ये योगिनियां तत्काल फल देने वाली और समस्त प्रकार की अतृप्त इच्छाओं को पूर्ण करने वाली होती हैं।

शिव-पार्वती के इस संवाद से स्पष्ट हो जाता है, कि मानव जीवन में योगिनी साधना का महत्व क्या है। वास्तव में योगिनियां अर्द्ध देवियां हैं, देव वर्ग से इतर यक्ष, किन्नर, गंधर्व आदि योनियों के समान ही योगिनियों का महत्व है।

ये तंत्र साधनाओं की आधारभूता देवियां हैं, अपूर्व सौन्दर्य की स्वामिनी होने के साथ ही साथ इन्हें तंत्र के गोपनीय और कुछ रहस्यों का भी ज्ञान होता है। ये मात्र ही आकृष्ट ही नहीं होतीं, अपितु पूर्ण चैतन्यता से आपस एक

विशिष्ट सौन्दर्य की स्वामिनी होती हैं, जिनके रोम-प्रतिरोम में साधनात्मक बल समाया होता है और नेत्रों में समाई होती है तंत्र की प्रखरता, जो कि आधार है तांत्रिक साधनाओं का।

अत्यन्त गौर वर्ण, विद्युत आभा सा देदीप्यमान मुखमण्डल, चराचर विश्व को सम्मोहित सी करती झील सी गहरी काली आंखें और उनमें लहराती मादकता और करुणा का एक अनोखा संगम, मांसल, सुडौल, पुष्ट दूधिया बदन पर पारद भक्षण और पारद कल्प से प्राप्त चिरयौवना की अठखेलियों के फलस्वरूप सदैव षोडश वर्षीय नवयौवना के रूप में दिखाई देने वाली इन योगिनियों का साहचर्य जिसे प्राप्त हो जाता है, उसके जीवन में फिर असम्भव जैसा कोई शब्द रह ही नहीं जाता, क्योंकि दिव्य आभा से आपूरित इन अत्यन्त तेजस्वी सौन्दर्य की मल्लिकाओं के अन्दर समाई होती है तंत्र की विलक्षण तीव्रता।

यों तो सौन्दर्य साधनाओं के रूप में अप्सराओं, यक्षिणियों, किन्नरियों आदि की भी साधनाओं के विधान प्राप्त होते हैं, यह भी सत्य है, कि वे भी समस्त प्रकार के भोग प्रदान कर जीवन में आनन्द की वृष्टि करती हैं, परन्तु वे मात्र भोग प्रदान करने में ही समर्थ होती हैं, जबकि योगिनी साधना के फलस्वरूप प्राप्त होती हैं वे सौन्दर्य प्रतिमाएं, जो सहयोगिनी रूप में तंत्र की विशिष्ट क्रियाओं को सम्पन्न करने में साधक की सहायता करती हैं।

इनके सौन्दर्य में साधना की प्रखरता भी होती है और मोहन, वशीकरण, स्तम्भन, उच्चाटन आदि के साथ-साथ तंत्र की अनेक दुरूह और गोपनीय क्रियाओं में ये सहायता प्रदान करती हैं और अपने साधक को खेचरी विद्या (वायु गमन), रस सिद्धि, भूगर्भ सिद्धि, वशीकरण, शत्रु स्तम्भन, मनोकामना पूर्ति, दिव्य रसों की सिद्धि, अदृश्य होने की शक्ति, यौवन और बल की प्राप्ति आदि सिद्धियां प्रदान कर उसे पल मात्र में ही सम्पूर्ण विश्व का एक अद्वितीय व्यक्तित्व बना देने में समर्थ होती हैं।

अन्य सौन्दर्य साधनाओं की अपेक्षा योगिनी साधना सहजता और तीव्रता से सिद्ध होने वाली व अनुकूल फल प्रदान करने वाली होती है। पूर्ण मनोयोग पूर्वक श्रद्धा और विश्वास के साथ की गई साधना में योगिनियों से साक्षात्कार होता ही है।

इस साधना की प्रखरता व तेजस्विता और इससे प्राप्त होने वाली असीमित तांत्रिक शक्तियों व सिद्धियों के कारण ही इसे अत्यन्त गोपनीय कर गुरु मुख परम्परा में सीमित कर दिया गया और सामान्य जनमानस में इसके विषय में अनेक भ्रम और किंवदन्तियां फैला गई तथा क्रूरता और वीभत्सता की अनेक कहानियां को इनके साथ जोड़ दिया गया, कि वे अत्यन्त भीषण आकृति वाली होती हैं, उनकी मुख मुद्रा अत्यन्त भयंकर और नेत्र भय उत्पन्न करने वाले होते हैं, वे मनुष्यों को मार कर उनका रक्त पीती हैं . . . आदि- आदि।

जबकि वास्तविकता तो यह है, कि वे अत्यन्त सौम्य स्वरूपा और निर्मल सौन्दर्य की स्वामिनी होती हैं और सिद्ध होने पर साधक की सभी प्रकार से सहायता करती हैं।

दैहिक सौन्दर्य के साथ-साथ आन्तरिक गुणों से भी सम्पन्न ये जिस किसी को भी प्रिया रूप में प्राप्त हो जाती हैं वह स्वयं में खेचरी विद्या, रस (पारद) सिद्धि, भूगर्भ सिद्धि, वशीकरण, शत्रु स्तम्भन, अदृश्य होने की शक्ति, यौवन और बल की प्राप्ति, मनोकामना पूर्ति, दिव्य रसों की सिद्धि आदि अनेक सिद्धियों के साथ-साथ प्रखर और तेजस्वी व्यक्ति का स्वामी बन जाता है। यदि यह कहा जाय, कि योगिनी साधना सम्पन्न किये बिना तंत्र की पूर्णता नहीं प्राप्त की जा सकती, तो यह अतिशयोक्ति पूर्ण नहीं होगा।

जीवन में योगिनी साधना की पूर्ण प्रखरता केवल प्रिया रूप में ही सम्पन्न करने पर सम्भव है। प्रेमिका के रूप में सिद्ध होने पर वे प्रतिपल साधक पर प्रेम और स्नेह की वर्षा करने के साथ-साथ उसका मार्गदर्शन भी करती रहती हैं और साधक की साधनात्मक सहचरी मात्र न होकर उसके सम्पूर्ण जीवन को गति प्रदान करने में समर्थ होती हैं।

परन्तु इस प्रेम में वासना का कोई स्थान नहीं होता, तंत्र अपने आप में वासना से परे है, क्योंकि वासना अपने आप में एक अधोगामी प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से नैतिक और आध्यात्मिक पतन की क्रिया ही सम्पन्न होती है, जबकि तंत्र तो जीवन की ऊर्ध्वगामी प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से शव से शिव बनने की क्रिया सम्भव होती है और जीवन का मूल ध्येय, जीवन की पूर्णता प्राप्त होती है।

तंत्र और वासना जीवन के दो विपरीत ध्रुव हैं।

अतः वासना को दूर हटा कर ही योगिनी साधना को जीवन में स्थान दिया जा सकता है और जीवन में तंत्रमयता को उतारा जा सकता है, क्योंकि तंत्र अपने आप में भोग और मोक्ष दोनों को ही प्रदान करने वाला है, जीवन के दोनों पक्षों को साथ लेकर चलने की धारणा रखता है।

यद्यपि कुछ अनाधिकारी स्वार्थी तांत्रिकों के व्यभिचारों के फलस्वरूप मोहन, उच्चाटन आदि तांत्रिक

क्रियाओं को हेय दृष्टि से देखा जाने लगा है, लेकिन मूलतः न तो ये क्रियाएं व्याभिचार युक्त हैं और न ही इनका उद्देश्य दूषित है।

तंत्र की पूर्णता को प्राप्त करने के लिए इस प्रकार की साधनाओं में भी दक्ष होना आवश्यक है।

तांत्रिक ग्रंथों में कुल चौंसठ प्रकार की योगिनियों का विवरण प्राप्त होता है। यों तो सभी का अपना अलग महत्व है और उसी के अनुरूप उनके अलग-अलग मंत्र और साधना विधान हैं, परन्तु जो प्रथम बार इस साधना को सम्पन्न करने का विचार करते हैं, उनके लिए सभी ग्रंथों ने एक मत से सर्वप्रथम जिन षोडश योगिनियों की साधना सम्पन्न करने की आवश्यकता पर बल दिया है, वे निम्न हैं –

१. दिव्ययोगा २. महायोगा, ३. सिद्धयोगा, ४. माहेश्वरी, ५. कालरात्रि, ६. हुंकारी, ७. भुवनेश्वरी, ८. विश्वरूपा, ९. कामाक्षी, १०. हस्तिनी, ११. मंत्रयोगिनी, १२. चक्रिणी, १३. शुभ्रा, १४. शंखिनी, १५. पद्मिनी और १६. वैताली।

ये सभी योगिनियां अपने आप में दिव्य और अलौकिक क्षमताओं से युक्त होती हैं और सिद्ध होने के साथ ही अपने साधक को भी अलौकिकता, दिव्यता और अद्वितीयता प्रदान कर उसे पल भर में ही उस श्रेष्ठता पर ले जा कर खड़ा कर देती हैं, जहां पहुंचना साधक के स्व के प्रयास से असम्भव ही है।

नीचे साधक की जानकारी हेतु उपरोक्त षोडश योगिनियों का ध्यान व उनसे सम्बन्धित संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है –

दिव्य योगा

संवाचे योगविद्यां त्वां दिव्य ज्ञान समन्विते।
योगप्रभावां योगेशीं योगीन्द्र हृदयस्थिताम् ॥

दिव्य ज्ञान से सुशोभित, योगियों के हृदय में निवास करने वाली योगेश्वरी दिव्य योगा से पूर्ण योग विद्या की मैं याचना करता हूं।

इस योगिनी का साहचर्य प्राप्त करने के उपरान्त ही योग विद्या को पूर्णता से समझ कर खेचरी विद्या में पारंगत हुआ जा सकता है व जीवन में उतारा जा सकता है।

महायोगा

योगविद्या महायोगा महातेजा महेश्वरी।
मायाधारी मानरता मान-सम्मानतत्परा ॥

महायोगेश्वरी, महातेजस्वी, अनेक मायाधारी, मान-सम्मान प्रदान करने वाली महायोगा का मैं आवाहन करता हूं।

योगिनी महायोगा का स्वरूप अत्यन्त तेजस्वी है और वह अपने साधक को मान-सम्मान से सम्बन्धित अनेक सिद्धियां और पूर्ण वैभव देने में समर्थ है। इसे सिद्ध करने पर साधक चतुर्दिक, सम्पूर्ण विश्व में अपनी कीर्ति पताका फैलाने में समर्थ होता है।

सिद्ध योगा

आगच्छ सिद्धयोगे त्वां नाद बिन्दु स्वरूपिणी।
सर्वज्ञा सिद्धिदात्री च सिद्धविद्यास्वरूपिणी ॥

नाद और बिन्दुरूपा, सिद्धि देने वाली, सब कुछ जानने वाली, समस्त सिद्ध विद्याओं की प्रतिमूर्ति सिद्धयोगा को मैं आहूत करता हूं।

इस योगिनी को जीवन में उतारने के उपरान्त किसी भी साधना में असफलता का प्रश्न ही नहीं रह जाता, साथ ही साधक त्रिकालदर्शी बनने में समर्थ होता है।

माहेश्वरी

प्रणवाद्या महाविद्या महाविघ्न विनाशिनी।
मानदा योगमाता त्वां माहेश्वरी प्रचोदयात् ॥

प्रणवरूपा, सभी विद्याओं की स्वामिनी, सभी विघ्नों को दूर करने वाली, योगमाता, सभी को सम्मान दिलाने में समर्थ भगवती माहेश्वरी का मैं चिंतन करता हूं।

योगिनी माहेश्वरी की साधना के फलस्वरूप जीवन की सभी समस्याएं, विघ्न, बाधाएं आदि दूर हो जाती हैं और साधक अनेक गोपनीय विद्याओं को जानने में समर्थ होता है।

कालरात्रि

कालरूपा कलातीता त्रिकालज्ञा कुलात्मजा।
कुलकुण्डलिनी सैषा कैलाश नग भूषिता ॥

काल स्वरूपिणी, समस्त कलाओं से परे, त्रिकालज्ञ, श्रेष्ठतम कुल में उत्पन्न, कुण्डलिनी स्वरूपा, कैलाश पर्वत को अपनी दिव्यता से सुशोभित करने वाली देवी कालरात्रि का मैं आवाहन करता हूं।

इस योगिनी का आश्रय लेने पर अकाल मृत्यु, किसी गुप्त शत्रु द्वारा किये गए तांत्रिक प्रयोग आदि का निराकरण होता है और किसी के भी भूत भविष्य वर्तमान को जाना जा सकता है।

हुंकारी

हुं हुं हुंकाररूपां तां ह्रीं ह्रीं शक्तिस्वरूपिणी।
हूं हूं हूं हाकिनी चैव योगमाया समन्विता॥

हुंकार रूपिणी, सभी शक्तियों से युक्त हाकिनीरूपा, समस्त योगमाया विभूषित देवी हुंकारी का मैं आवाहन करता हूं।

योगिनी हुंकारी की साधना सिद्धि के उपरान्त साधक अकेला ही अपने शत्रु की पूरी सेना का विनाश करने में समर्थ होता है।

भुवनेश्वरी

वाग्रीश्वरी योगरूपा योगिनी सर्वमंगला।
ध्यानातीता ध्यानगम्या ध्यानज्ञा ध्यानधारिणी॥

सरस्वती स्वरूपा, योग स्वरूपिणी, सर्वमंगलमयी, ध्यानरूपा, ध्यान के द्वारा प्रतीत होने वाली योगिनी भुवनेश्वरी का मैं ध्यान करता हूं।

इस योगिनी के वरदायक प्रभावों से साधक वाक् सिद्धि प्राप्त करने में समर्थ होता है।

विश्वरूपा

विश्वेश्वरि विश्वमाता विश्वभावमयी शुभा।
विश्वरूपा च विश्वेशी विश्वसंहारकारिणी॥

समस्त विश्व का मातृवत पोषण करने वाली, विश्व की स्वामिनी, विश्व की उत्पत्ति, पालन और संहार करने वाली विश्वरूपा का आवाहन करता हूं।

इस योगिनी की साधना के उपरान्त साधक को भूगर्भ सिद्धि तथा विपुल धन-वैभव की प्राप्ति होती है और वह समस्त भौतिक सुखों को प्राप्त करने में समर्थ होता है।

साथ ही उसके अन्दर की विषय वासनाएं समाप्त हो कर ज्ञान की उत्पत्ति होती है।

कामाक्षी

कुबेर पूज्य कुलजा काश्मीरा केशवार्चिता।
कात्यायनी कार्यकरी कलादलनिवासिनी॥

कुबेर के द्वारा संपूजित, श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न, केशर से चर्चित, सभी कलाओं से पूर्ण कात्यायनी रूपा कामाक्षी का मैं चिंतन करता हूं।

इस योगिनी का पूजन सिर्फ केशर से किया जाता है। इसे सिद्ध करने पर साधक को कायाकल्प, कामदेव के समान यौवन व पौरुष तथा असीम बल की प्राप्ति होती है और उसके समस्त प्रकार के रोगों का नाश होता है।

हस्तिनी

सर्ववश्यंकरी शक्तिः सर्वसंस्तंभिनी तथा।
सर्वसंमोहिनी चैव कुञ्जरेश्वर गामिनी॥

समस्त विश्व को वश में करने वाली, सभी को स्तम्भित करने वाली, सभी को सम्मोहित करने वाली, मस्त हथिनी सी चाल चलने वाली योगिनी हस्तिनी का आवाहन करता हूं।

हस्तिनी योगिनी की साधना के फलस्वरूप साधक उच्चाटन, स्तम्भन आदि के साथ-साथ मनुष्य, पशु, पक्षी, चराचर विश्व को सम्मोहित और वशीभूत करने में सक्षम होता है।

मंत्र योगिनी

महामंत्रमयी देवी देवगन्धर्व सेविता।
योगिभिश्चैव संपूज्या मंगला च मनोहरा॥

मंत्र स्वरूप, देव-गन्धर्वों द्वारा सेवित, योगियों के द्वारा पूजित, मंगलमयी, सौन्दर्यमयी योगिनी का मैं आवाहन करता हूं।

इस योगिनी के सान्निध्य में साधक को मांत्रिक साधनाओं में शीघ्र ही पूर्ण सफलता प्राप्त होती है और वह अदृश्य होने की विद्या का ज्ञाता हो जाता है।

चक्रिणी

यशः स्वरूपिणी चक्रे योगमार्गप्रवाहिनी।
यज्ञांगी योगरूपा च योगानन्दात्म संस्तुता॥

यश प्रदान करने वाली ज्ञान तथा योगमार्ग में प्रवेश देने वाली, यज्ञ के अंगभूत योग के आनन्द से सम्भूत चक्र धारण करने वाली देवी चक्रिणी का मैं आवाहन करता हूं।

यह योगिनी योग तथा दिव्य रसों की अनेक सिद्धियां प्रदान करने में समर्थ और आनन्द प्रदान करने वाली है।

शुभ्रा

शाम्भवी सिद्धिवर सिद्धा सुषुम्नासुरनन्दिनी।
शाम्बरूपा तथा शुद्धा शरत्ति बिन्दु निवासिनी॥

शम्भुरूपा, सिद्धिमयी, अपने भक्तों को सिद्धि देने वाली, सुषुम्ना मार्ग से साधकों को प्रेरित करके आनन्द प्रदान करने वाली, समतामयी, परमशुद्धा, शक्ति बिन्दु पर निवास करने वाली देवी शुभ्रा का ध्यान करता हूं।

इस योगिनी साधना से कुण्डलिनी जाग्रत होती है, और साधक परमपद को प्राप्त करने की ओर अग्रसर होता है।

शंखिनी

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

शंखचक्रगदा हस्ता योगीन्द्रस्वान्तहारिणी।
शारदेन्दु प्रसन्नास्या शांकरी शिवभाषिणी॥

शंख चक्र तथा गदा धारण करने वाली, योगियों के हृदय को आनन्द देने वाली, शारदीय चन्द्रमा के समान प्रसन्न मुख वाली, शंकररूपा, मंगलभाषिणी देवी शंखिनी का आवाहन करता हूं।

इस योगिनी की साधना से साधक को समस्त विपत्तियों, बाधाओं, शत्रुओं आदि से पूर्ण सुरक्षा प्राप्त होती है और साधक आनन्द पूर्वक साधनाओं में सफलता की ओर अग्रसर होता है।

पद्मिनी

प्रियव्रतपरा नित्या परमप्रेम प्रदायिनी।
प्रफुल्लपद्मवदना प्रश्नधर्मनिवासिनी॥

प्रियवादिनी, प्रेम प्रदान करने वाली, खिले कमल के समान सब को ज्ञान एवं योग मार्ग में विकसित करने वाली देवी पद्मिनी का आवाहन करता हूं।

इस योगिनी की साधना से साधक पूर्ण कायाकल्प, पौरुष व अतीन्द्रीय क्षमताएं प्राप्त करते हुए साधनात्मक पूर्णता की ओर अग्रसर होता है।

वैताली

योगेश्वरी च वज्रांगी वीभूषणभूषिता।
वेदमार्गरता वेद मन्त्ररूपा वषट् क्रिया॥

योगेश्वरी, सुदृढ़ देह वाली, वीरता से परिपूर्ण, वैदिक मार्ग का अनुसरण करने वाली वेदमंत्रमयी देवी वैताली का आवाहन करता हूं।

इस योगिनी की साधना के उपरान्त साधक अत्यन्त तेजस्विता प्राप्त करता हुआ अपने समस्त शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होता है। साथ ही साथ उसे मंत्र साधनाओं में भी सफलता प्राप्त होती है।

इस साधना को कोई भी व्यक्ति, चाहे वह पुरुष हो या स्त्री, युवा हो या वृद्ध सम्पन्न कर सकता है।

इसके लिए यह आवश्यक नहीं है, कि किसी वृक्ष की मूल में बैठें या तिराहे पर बैठ कर मंत्र जप करें या रात्रि को श्मशान में जायें या नदी के किनारे आसन लगायें।

यह पूर्णतः सौम्य साधना है और इसे अपने पूजा कक्ष में बैठ कर सम्पन्न किया जा सकता है, आवश्यकता है गुरु और मंत्र के प्रति श्रद्धा और पूर्ण विश्वास की।

साधना विधान

इस साधना में विशिष्ट **'योगिनी यंत्र'** व **'योगिनी माला'** की आवश्यकता पड़ती है, जो योगिनी तंत्र के अनुसार मंत्र सिद्ध एवं प्राण प्रतिष्ठित हों।

इस साधना को किसी भी माह में शुक्रवार से प्रारम्भ किया जा सकता है।

यह ग्यारह दिवसीय साधना है।

रात्रि में नौ बजे के बाद स्नान कर, स्वच्छ पीले वस्त्र धारण कर पीले आसन पर बैठें, गुरु पीताम्बर भी ओढ़ लें।

सामने लकड़ी के बाजोट पर पीला रेशमी वस्त्र बिछाकर, उस पर गुलाब के पुष्पों पर **विशिष्ट योगिनी यंत्र** को स्थापित करें।

मानसिक गुरु पूजन कर, गुरु मंत्र की चार माला मंत्र जप करने के उपरान्त गुरुदेव से इस साधना को सम्पन्न करने की आज्ञा व इसमें पूर्ण सफलता हेतु आशीर्वाद प्राप्त करें।

फिर हाथ में जल लेकर साधना के प्रथम दिन संकल्प करें, नित्य संकल्प लेने की आवश्यकता नहीं है –

मैं अमुक गोत्र में उत्पन्न अमुक नाम का व्यक्ति, अमुक पिता का पुत्र अपने आध्यात्मिक जीवन में योगिनी का साहचर्य प्राप्त करने हेतु इस अमुक (योगिनी का नाम) योगिनी साधना को सम्पन्न कर रहा हूं, मुझे इस साधना में पूर्ण सफलता प्राप्त हो, जिससे कि मैं साधनाओं में तीव्रता के साथ आगे बढ़ कर सफलता प्राप्त कर सकूं।

यंत्र के समक्ष क्रमशः प्रत्येक योगिनी का ध्यान उच्चरित कर उसका पूजन कुंकुम, अक्षत, केशर, पुष्प, धूप-दीप व नैवेद्य से करें।

एक समय में एक ही योगिनी साधना सम्पन्न करें

अब नीचे दिये गए प्राण प्रतिष्ठामंत्र के द्वारा यंत्र में निहित चैतन्यता और ऊर्जास्विता को अपने शरीर के अंदर उतारें, जिससे कि योगिनी चेतना आपके शरीर में स्थापित हो सके और शीघ्र सफलता प्राप्त हो सके।

पहले दाहिने हाथ में जल लेकर विनियोग करें –

ॐ अस्य प्राण प्रतिष्ठा मंत्रस्य ब्रह्मविष्णु महेश्वर ऋषयः ऋग्यजुः साम छन्दांसि, क्रियामयवपुः, प्राणाख्या देवता, ऊं बीजम्, ह्रीं शक्तिः क्रों कीलकं प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।

जल भूमि पर छोड़ दें और यंत्र पर अपना दाहिना हाथ रख कर निम्न मंत्र बोलते हुए यह भावना करें, कि यंत्र की समस्त चैतन्यता धीरे-धीरे आपके अन्दर समाहित होती जा रही है –

प्राण प्रतिष्ठा मंत्र

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हंसः सोऽहं अस्य प्राणाः इह प्राणाः ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हंसः सोऽहं अस्य जीव इह स्थितः, ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हंसः सोऽहं अस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक् चक्षुः श्रोत्र जिह्वा घ्राण पाणिपादपायूपस्थानि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥

फिर **योगिनी माला** से पहले मूल षोडश योगिनी मंत्र का एक माला मंत्र जप करें, फिर जिस योगिनी विशेष को आप सिद्ध करना चाहते है उस विशेष योगिनी के मंत्र की एक माला मंत्र जप करें। इस साधना में एक समय में एक ही योगिनी साधना सिद्धि की जा सकती है एक साथ षोडश योगिनी सिद्धि करना असम्भव है। उदाहरणार्थ पहले मूल मंत्र का एक माला मंत्र जप करें, फिर दिव्ययोगा योगिनी मंत्र का एक माला मंत्र जप करें, फिर मूल मंत्र का एक माला मंत्र जप करें। इसी प्रकार प्रत्येक योगिनी से सम्बन्धित मंत्र का जप करना है। ऐसा ग्यारह दिन तक नित्य करें।

मूल षोडश योगिनी मंत्र

॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं ब्रं श्रौं धूं वं दूं क्रीं ह्रीं लूं प्रों यं शं गुं षोडश योगिन्यै नमः ॥

दिव्य योगा

॥ ॐ ऐं ऐं दिव्ये आगच्छ आगच्छ ॐ फट् ॥

महायोगा

॥ ॐ ह्रौं ग्लौं ग्लौं महायोगा सिद्धये ॐ फट् स्वाहा ॥

सिद्धयोगा

॥ ॐ ह्रीं ऐं क्रें सः आगच्छ ॐ फट् ॥

माहेश्वरी

॥ ॐ ह्रीं ह्रीं माहेश्वरि एहि एहि ॐ फट् स्वाहा ॥

कालरात्रि

॥ ॐ क्लीं क्लीं कालरात्रि सिद्धये ॐ फट् स्वाहा ॥

हुंकारी

॥ ॐ हुं हुं ह्रीं ह्रीं हूं हूं फट् ॥

भुवनेश्वरी

॥ ॐ ह्रीं ह्रीं आगच्छ भुवनेश्वरि ॐ फट् ॥

विश्वरूपा

॥ ॐ वं वं विश्वरूपे वं वं ॐ फट् ॥

कामाक्षी

॥ ॐ कं कं कामाक्षि एहि एहि ॐ फट् ॥

हस्तिनी

॥ ॐ ऐं क्लीं हस्तिगामिन्यै सिद्धये क्लीं ऐं ॐ ॥

मंत्रयोगिनी

॥ ॐ मं मंत्ररूपे एहि एहि ॐ ॥

चक्रिणी

॥ ॐ ह्रीं हूं ह्रीं चक्रेश्वर्यै सिद्धये ॐ फट् ॥

शुभा

॥ ॐ शं शं शुभे आगच्छ आगच्छ शं शं ॐ ॥

शंखिनी

॥ ॐ ह्रीं श्रीं शं शंखिनि आगच्छ ॐ फट् ॥

पद्मिनी

॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पं पं पद्मिनि एहि ॐ फट् ॥

वैताली

॥ ॐ आं ह्रीं वं वैतालि एहि एहि ॐ फट् ॥

मंत्र जप की समाप्ति पर साधना कक्ष में सोयें। अगले दिन पुनः इसी प्रकार साधना सम्पन्न करें। बारहवें दिन पीले वस्त्र सहित यंत्र और माला को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधनाकाल में कुछ बातों का ध्यान अवश्य रखें –

* इस साधना को रात्रि में ही सम्पन्न करें। इन ग्यारह दिनों में यथासम्भव कम से कम बोलने का प्रयास करें, मौन सर्वोत्तम है।

* मात्र एक समय ही शुद्ध, शाकाहारी भोजन करें, फलाहार सबसे उत्तम है, मांस-मदिरा, उत्तेजक पदार्थों से बचें।

* मात्र गुरु चिंतन, इष्ट चिंतन और इस साधना विशेष से सम्बन्धित चिंतन में ही समय व्यतीत करें। ब्रह्मचर्य का पालन अनिवार्य है।

उपरोक्त सभी नियमों का पालन करते हुए निष्ठा और श्रद्धा पूर्वक किये गए मंत्र जप से सफलता प्राप्त होती ही है। यदि साधना से पूर्व साधक षोडश योगिनी दीक्षा प्राप्त कर लेता है, तो फिर उसकी सफलता में कोई संदेह नहीं रह जाता और वह अद्वितीय और श्रेष्ठता के मार्ग पर गतिशील हो पूर्णता की ओर अग्रसर हो जाता है।

विशेष – इस योगिनी साधना में प्रत्येक योगिनी के लिए मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त अलग-अलग यंत्र आवश्यक है प्रत्येक साधना के लिए माला एक ही प्रयुक्त होगी साधक अपनी मनोकामना एवं कार्य के अनुसार उस विशिष्ट योगिनी की साधना सम्पन्न करें।

न्यौछावर – प्रत्येक योगिनी यंत्र – 210/- माला 240/-

शिष्य धर्म

शिष्य कौन ?

शिष्यः कुलीनः शुद्धात्मा पुरुषार्थपरायणः ।
अधीतवेदः कुशलो दूरमुक्तमनोभवः ॥
हितैषी प्राणिनां नित्यमास्तिकस्त्यक्तनास्तिकः ।
स्वधर्मनिरतो भक्त्या पितृमातृहितोद्यतः ॥
वाङ्मनः कायवसुभिर्गुरुशुश्रूषणे रतः ।
त्यक्ताभिमानो गुरुषु जातिविद्याधनादिभिः ॥
गुर्वाज्ञापालनार्थं हि प्राणव्यय रतोद्यतः ।
विहत्य व स्वकार्याणि गुरुकार्यरतः सदा ॥
वासयञ्चिवसेद्यस्तु गुरौ भक्त्या सदा शिशुः ।
कुर्वन्नाज्ञां विचारात्रौ गुरुभक्तिपरायणः ॥
आज्ञाकारी गुरोः शिष्यो मनोवाक्कायकर्मभिः ।
यो भवेत्स तदा ग्राह्यो नेतरः शुभकाङ्क्षया ॥
मंत्रपूजारहस्यानि यो गोपयति सर्वदा ।
त्रिकालं यो नमस्कुर्यादागमाचार तत्ववित् ॥
स एव शिष्यः कर्तव्यो नेतरः स्वल्पजीवनः ।
एतादृशगुणोपेतः शिष्यो भवति नापरः ॥

जो कुलीन हो, सदाचारी हो, सिद्धि के लिये तत्पर हो, वेदपाठी हो, चतुर हो और कामवासना से रहित हो, जो प्राणियों का हित ही चाहता हो, आस्तिक हो, नास्तिकों का साथ छोड़ चुका हो, अपने धर्म में प्रेम रखता हो, भक्तिभाव से माता-पिता के हित में संलग्न हो, कर्म, मन, वाणी और धन से गुरुसेवा करने के लिये लालायित रहता हो, गुरुजनों के सामने जाति, विद्या, धन आदि का अभिमान न रखता हो, गुरु की आज्ञा पालन के लिये मृत्यु तक के लिये तैयार रहता हो, अपने काम छोड़कर भी गुरु के काम में लगा रहने वाला हो, जो गुरु के पास दास की भांति निवास करता हो, शिशु के समान आज्ञा पालन करता हो वही शिष्य रूप में स्वीकार करने योग्य है, दूसरा नहीं। जो मंत्र और पूजा के रहस्यों को गुप्त रखता है, त्रिकाल नमस्कार करता है और शास्त्रीय आचार के तत्वों को जानता है वही शिष्यरूप में स्वीकार करने योग्य है, दूसरा नहीं। जो इन गुणों से युक्त होता है, वही शिष्य होता है।

और शिष्य का व्यवहार

प्रणम्योपविशेत्पार्श्वे तथा गच्छेदनुज्ञया ।
मुखावलोकी सेवेत कुर्यादादिष्टमादरात् ॥
असत्यं न वदेदग्रे न बहु प्रलपेदपि ।
कामं क्रोधं तथा लोभं मानं प्रहसनं स्तुतिम् ॥
चापलानि न जिह्वानि कार्याणि परिदेवनम् ।

शिष्य धर्म मर्यादा अनुसार शिष्य को चाहिए कि गुरु से आज्ञा लेकर पास में बैठे, आज्ञा लेकर कहीं बाहर जावे, समीप रहकर गुरुसेवा के लिए लालयित रहते हुए सेवा के लिए जिज्ञासु बना रहे, गुरु द्वारा प्रदत आज्ञा को आदर पूर्वक पालन करे, गुरु के सामने कभी झूठ नहीं बोले तथा सीमित वार्तालाप करे, काम, क्रोध, लोभ, मान, हंसी, मजाक, मिथ्या-स्तुति और लज्जा पूर्ण चंचलता तथा गुरु को मानसिक वेदना देने वाला कोई कार्य न करे।

क्षुरस्य धारा निहिता गुहायाम् –

शिष्यता का अर्थ है – तलवार की धार पर चलना – श्रीगन्

गुरु वाणी

✻ गुरु को पहिचानने की अत्यन्त सरल प्रक्रिया है, गुरु वह है –

– जिसके पास बैठने से मन में अपूर्व शांति का एवं आनन्द का अनुभव हो।

– ऐसा प्रतीत हो, कि इनका और मेरा अत्यन्त अंतरंग सम्बन्ध है।

– ऐसा लगे कि इनके और मेरे बीच कोई भेद या दूरी है ही नहीं।

– जिनके बिना जीवन व्यर्थ और बेमानी लगे।

– वही गुरु है वही पथप्रदर्शक है।

✻ गुरु की सबसे बड़ी विशेषता यह है, कि गुरु बहुत कुछ देना चाहता है। कोई गुरु यह नहीं चाहता, कि मेरा नाम हो या मैं ही दुनिया में पूजा जाऊं, गुरु तो यह चाहता है, कि मैं शिष्य को समर्थ, योग्य और अद्वितीय बनाऊं, ऐसा बनाऊं जिससे कि वह अपने जीवन में सफलता प्राप्त करें।

✻ हमारे अन्दर एक तूफान हो, संकल्प शक्ति हो, दृढ़ शक्ति हो और फौलाद की तरह विचार हो यह निश्चय हो कि या तो दैवी कृपा प्राप्त करके रहूंगा या शरीर को समाप्त हो जाने दूंगा . . . जब ऐसा चैलेंज, ऐसी संकल्प शक्ति उसके मन में उसके विचारों में आती है, तब उसे साधक कहा जाता है।

✻ जिस प्रकार एक लोटे का जल समुद्र में डाल दिया जाता है, तो वह लोटे का जल भी समुद्र बन जाता है, ठीक उसी प्रकार जब सामान्य शिष्य गुरु की सेवा करता हुआ उनसे एकाकार हो जाता है, तो वह पूर्ण गुरुमय बन जाता है। इस गुरुमय बनने की क्रिया को ही सिद्धि कहते है।

✻ **शिष्य ऐसा हो, जो कफन बांध कर निकले, जो समाज की परवाह नहीं करे, जो चुनौतियों को झेल सके, जिसकी आंखों में तेवर हो . . . अग्नि स्फुलिंग हो, जिसके हाथों में वज्र की तरह प्रहार करने की क्षमता हो और और जो सही अर्थों में गुरु चरणों में समर्पित होने की भावना रखता हो।**

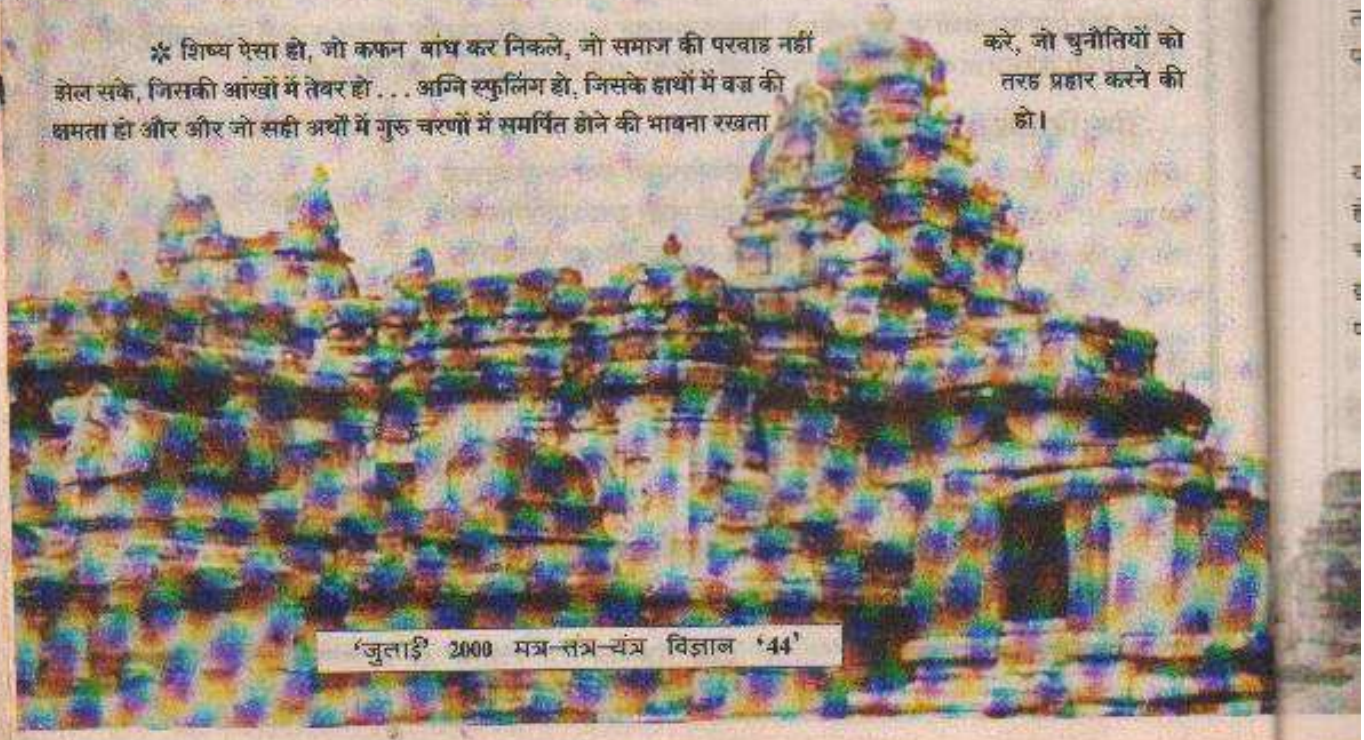

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

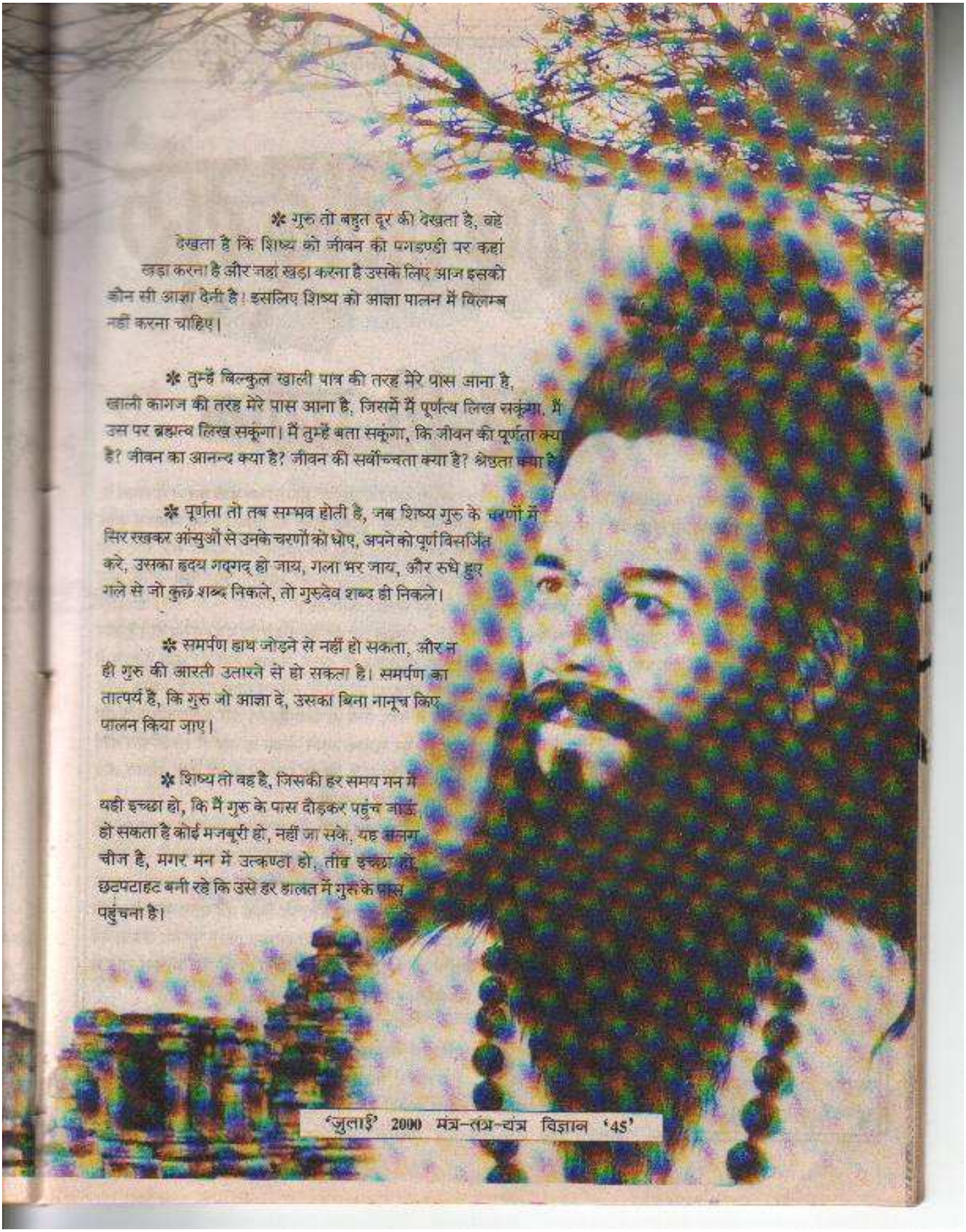

✻ गुरु तो बहुत दूर की देखता है, वह देखता है कि शिष्य को जीवन की पगडण्डी पर कहां खड़ा करना है और जहां खड़ा करना है उसके लिए आज इसको कौन सी आज्ञा देनी है। इसलिए शिष्य को आज्ञा पालन में विलम्ब नहीं करना चाहिए।

✻ तुम्हें बिल्कुल खाली पात्र की तरह मेरे पास आना है, खाली कागज की तरह मेरे पास आना है, जिसमें मैं पूर्णत्व लिख सकूंगा, मैं उस पर ब्रह्मत्व लिख सकूंगा। मैं तुम्हें बता सकूंगा, कि जीवन की पूर्णता क्या है? जीवन का आनन्द क्या है? जीवन की सर्वोच्चता क्या है? श्रेष्ठता क्या है?

✻ पूर्णता तो तब सम्भव होती है, जब शिष्य गुरु के चरणों में सिर रखकर आंसुओं से उनके चरणों को धोए, अपने को पूर्ण विसर्जित करे, उसका हृदय गद्‌गद् हो जाय, गला भर जाय, और रुंधे हुए गले से जो कुछ शब्द निकले, तो गुरुदेव शब्द ही निकले।

✻ समर्पण हाथ जोड़ने से नहीं हो सकता, और न ही गुरु की आरती उतारने से हो सकता है। समर्पण का तात्पर्य है, कि गुरु जो आज्ञा दे, उसका बिना नानूच किए पालन किया जाए।

✻ शिष्य तो वह है, जिसकी हर समय मन में यही इच्छा हो, कि मैं गुरु के पास दौड़कर पहुंच जाऊं, हो सकता है कोई मजबूरी हो, नहीं जा सके, यह अलग चीज है, मगर मन में उत्कण्ठा हो, तीव्र इच्छा हो, छटपटाहट बनी रहे कि उसे हर हालत में गुरु के पास पहुंचना है।

'कृष्णं वन्दे जगद्गुरु'

कृष्ण सिद्ध 10 प्रयोग

भगवान विष्णु अवतरण प्रत्येक युग में सम्भव हुए हैं, और होते रहेंगे, किन्तु भगवान श्री कृष्ण जैसा अवतरण दुर्लभ ही हुआ है और इस बात की पुष्टि केवल जन सामान्य की भावनाओं के आधार पर ही नहीं वरन् शास्त्रीय आधार पर भी की जा सकती है, जहां सभी शास्त्रों ने एक मत होकर श्रीकृष्ण अवतरण को ही सम्पूर्ण माना है, जीवन के भौतिक पक्षों के प्रति भी और जीवन के आध्यात्मिक पक्षों के प्रति भी। भगवान श्रीकृष्ण की प्रचलित छवि में उन्हें ईश्वर तो माना गया, किन्तु उनके साथ जुड़े साधना पक्ष और उनकी प्रबल आध्यात्मिकता की उपेक्षा कर दी गई, जबकि इस बात के पूर्ण प्रमाण मिलते हैं कि भगवान श्रीकृष्ण कुशल तंत्रवेत्ता और साधक भी थे, जिन्होंने शिष्य रूप में अपने गुरु सांदीपन के आश्रम में रहकर अनेक साधनाओं को सीखा था।

भगवान श्रीकृष्ण से जुड़ी अनेक कथाओं के पीछे भी उनके साधक होने की कथा ही निहित है, जिसे अलौकिकता का आवरण दे दिया गया है और उनसे जुड़ा साधना पक्ष भुला दिया गया है। अनेक राक्षसों का वध या अपने गुरु के मृत पुत्र को जीवित करना जैसी अनेक घटनाएं उनकी इसी विलक्षणता की परिचायक हैं और ऐसे अलौकिक युग पुरुष के जन्म का अवसर तो स्वतः सिद्ध मुहूर्त है ही।

वस्तुतः 'कृष्ण' शब्द ही अपने आप में जीवन का अत्यन्त गंभीर रहस्य समेटे है। इस शब्द में जहां 'क' काम सूचक है, वहीं 'ऋ' श्रेष्ठ शक्ति का प्रतीक है, 'ष' षोडश कलाओं का रहस्य समेटे है तो 'ण' निर्वाण का बोध कराने में समर्थ है, और इस प्रकार 'कृष्ण' शब्द का तात्पर्य है जो सामर्थ्य पूर्वक पूर्ण भोग व मोक्ष दोनों की समान गति बनाये रखे और इसी कारणवश भगवान कृष्ण की साधना-आराधना अपने-आप में सम्पूर्ण साधना कही गई।

प्रत्येक देवी या देवता वस्तुतः मंत्र स्वरूप होते हैं और भगवान श्री कृष्ण भी इसके अपवाद नहीं हैं। बीज स्वरूप में भगवान श्रीकृष्ण को 'क्लीं' स्वरूप माना गया है अर्थात उनके स्वरूप में काम तत्व ही सर्वोपरि है। इस कारणवश यदि इस सिद्ध पर्व पर साधक अपने जीवन के पक्ष से सम्बन्धित कोई भी साधना करता है, तो वह निश्चय ही सौ गुणा अधिक तीव्र एवं प्रभावशाली होती ही है।

वशीकरण सम्बन्धी साधनाएं, शीघ्र विवाह सम्बन्धी साधनाएं, कामदेव रति से सम्बन्धित साधनाओं के साथ-साथ यह दिवस समस्त सौन्दर्य साधनाओं, अप्सरा अथवा यक्षिणी साधनाओं के लिए भी सिद्ध पर्व माना गया है। यदि कोई अप्सरा अथवा यक्षिणी साधना किसी पूर्णिमा अथवा पर्व विशेष पर सम्पन्न करने का निर्देश हो तो उसे भी इस रात्रि में निःसंकोच सम्पन्न किया जा सकता है।

जन्माष्टमी के पर्व को सही रूप में उत्साह, उल्लास व विविध सौन्दर्य साधनाओं के द्वारा मनाया जाना चाहिए और शास्त्रों का कथन है कि साधक इस दिवस विशेष का प्रयोग एक से अधिक साधनाओं में करे। यह प्रबल तांत्रोक्त

पर्व भी है, किन्तु साधक जहां तक सम्भव हो इस दिवस का प्रयोग सौन्दर्य साधनाओं हेतु ही करे। बिना अपने मनोभावों को दबाये अथवा मन पर कोई बोझ रखे यदि साधक उन्मुक्त भाव से इस दिवस पर साधनाएं सम्पन्न करता है, तो कोई कारण ही नहीं कि वह सफलता के अत्यन्त निकट न हो।

यहां हम इस दिवस विशेष की चैतन्यता से मेल खाती हुई कुछ ऐसी गोपनीय साधनाएं प्रकाशित कर रहे हैं जो भगवान श्री कृष्ण के ही स्वरूप की भांति विविधता को समेटे हुए हैं। जिस प्रकार वे कूटनीतिज्ञ, योद्धा, प्रेमी, कला प्रवीण, वाक्पटु एवं मनोहर थे, उसी प्रकार साधक के जीवन में भी विविध कलाओं से सौन्दर्य भर सकें इसका ही प्रयास इन साधनाओं के चयन में किया गया है।

सौन्दर्य प्रदायक पुरुषोत्तम क्लीं साधना

यह भगवान श्रीकृष्ण से सम्बन्धित प्रारम्भिक साधना है। भगवान श्रीकृष्ण का सम्पूर्ण स्वरूप 'क्लीं' स्वरूप होने के कारण एक प्रकार से आवश्यक ही होता है कि साधक इस प्रारम्भिक साधना को अवश्य ही करे। जीवन की प्रत्येक सौन्दर्य साधना का मूल भी यही साधना है और इस साधना को विशेष रूप से जन्माष्टमी की रात्रि में ही सम्पन्न करने पर साधक को अवश्य ऐसी प्रबलता मिल जाती है जिससे वह स्वयं रूप-सौन्दर्य के साथ-साथ एक विचित्र प्रकार के सम्मोहन से भरे चुम्बकत्व को प्राप्त करने में समर्थ हो जाता है।

भगवान श्री कृष्ण का रोम-रोम इस 'क्लीं' कामबीज से इस प्रकार आबद्ध था, जिससे उन्हें कुछ करने की अथवा किसी पर अपना प्रभाव डालने की आवश्यकता शेष नहीं रह जाती थी। व्यक्ति स्वतः उनका प्रशंसक और अनुयायी हो जाता था। केवल मनुष्य ही नहीं पशु पक्षी भी, केवल उनके मित्र पांडव ही नहीं, उनके विरोधी कौरव भी उनके आकर्षण में समान रूप से बंधे थे।

इस साधना के लिए आवश्यक है कि साधक के पास ताम्र पत्र पर अंकित प्रामाणिक **'क्लीं' यंत्र** अवश्य हो, जो विशेष मंत्रों से मंत्र-सिद्ध हो तथा सहयोगी रूप में **कामकला माला** हो। इन दोनों सामग्रियों को जन्माष्टमी की रात्रि में अपने समक्ष पीले वस्त्र पर स्थापित कर दें, पीले वस्त्र धारण करें और पीले आसन पर पश्चिम की ओर मुख करके बैठें। सामने राधा-कृष्ण का संयुक्त चित्र स्थापित करें और कक्ष को सुसज्जित करें। यथासम्भव रात्रि के दस बजे के बाद ही यह साधना प्रारम्भ करें। तदुपरान्त भोज पत्र पर अष्टदल कमल बनाकर उसके प्रत्येक दल में केसर से काम गायत्री के मंत्र को अंकित करें तथा मध्य में क्लीं बीज अंकित करें।

काम गायत्री मंत्र

// कामदेवाय विद्महे पुष्पबाणाय धीमहि तन्नोऽनंगः प्रचोदयात् //

यह भी यंत्र ही है और इसका भी पूजन साधक क्लीं यंत्र के साथ करे। घी का दीपक लगाए और सुगन्धित अगरबती प्रज्जवलित करे। यंत्र, चित्र, माला आदि का पूजन केसर, पुष्प की पंखुड़ियों व अक्षत से कर, **कामकला माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें।

//ॐ क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजन वल्लभाय स्वाहा //

मंत्र जप के उपरान्त कुछ देर वहीं स्थिर चित्त बैठे रहें और भावना करें कि इस तेजस्वी मंत्र का प्रभाव आपके रोम-रोम में व्याप्त हो रहा है, यदि सम्भव हो तो रात्रि शयन भी वहीं करें। दूसरे दिन प्रातः जल्दी उठकर ताम्र पत्र पर अंकित 'क्लीं' यंत्र एवं कामकला माला किसी पवित्र सरोवर में विसर्जित कर दें, जबकि भोजपत्र पर अंकित यंत्र को ताबीज में भर कर दाहिनी भुजा में अथवा गले में धारण कर लें। साधक कुछ समय के बाद ही अपने रोम-रोम में होने वाले परिवर्तन और लोगों के व्यवहार में परिवर्तन देखकर खुद ही साधना की अनुकूलता को समझ सकता है, यद्यपि यह साधना वर्ष में कभी भी की जा सकती है, किन्तु जन्माष्टमी के अवसर पर करने से इसके प्रभाव में अतिरिक्त तीव्रता और तीक्ष्णता उतर आती है।

साधना सामग्री पैकेट – 260/-

आकर्षण मन्मथ प्रयोग

यह प्रयोग किसी विशेष पुरुष अथवा स्त्री को पूर्णरूप से सम्मोहित करने का प्रयोग है। कुंवारी कन्याओं द्वारा यह प्रयोग सम्पन्न करने से उन्हें इच्छित वर की प्राप्ति होती है तथा विवाह हेतु किसी प्रकार की बाधा आ रही हो, जन्म कुंडली में मंगली अथवा अन्य कोई दोष हो तो इस साधना से वे दोष दूर हो जाते हैं। यह साधना कृष्ण अष्टमी के दिन प्रातः ही सम्पन्न कर लेनी चाहिए। स्नान कर अपने शरीर पर सुगन्धित द्रव्य लगा कर, पीले वस्त्र धारण कर, पूजा स्थान में पश्चिम की ओर मुख करके बैठें और अपने सामने लाल वस्त्र पर **'आकर्षण यंत्र'** स्थापित कर दें। उचित तो यह माना गया है जिसको अनुकूल बनाना हो उसका नाम अष्टगंध से लिखकर अपने पास में यंत्र के साथ ही रख दें। यंत्र की पूजा धूप, दीप से कर **मोहिनी माला** के द्वारा निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें। मंत्र में अमुक शब्द की जगह नाम बोलें –

॥ ॐ ॐ अमुकमाकर्षय मन्मथाय नमः॥

यह मंत्र अत्यन्त ही सिद्ध, प्रभावशाली एवं अभीष्ट फल देने वाला है। इस मंत्र जप के पश्चात आकर्षण यंत्र धारण करने से जिसे अनुकूल बनाना चाहते हों, वह शीघ्र ही पूर्णरूप से प्रभाव में आबद्ध होता ही है। मंत्र जप के उपरान्त मोहिनी माला का प्रयोग अन्य किसी साधना में वर्जित है, जबकि आकर्षण यंत्र निरन्तर धारण किए रहना चाहिए।

साधना सामग्री पैकेट – 280/-

सम्मोहन वशीकरण केशव प्रयोग

यदि साधक किसी स्त्री अथवा व्यक्ति विशेष को सम्मोहित करने के स्थान पर इस बात में रुचि रखता हो कि समाज के प्रत्येक वर्ग के व्यक्ति उससे प्रभावित हों, उसकी आज्ञा का पालन करें या स्पष्ट शब्दों में कहें कि उसे देखकर सम्मोहित हों, तो उसे यह प्रयोग करना ही चाहिए। इस प्रयोग की विशेषता यह है कि इसे सामान्य रूप से सिद्ध किया जाता है, फलस्वरूप व्यक्ति को चतुर्दिक सफलता और ख्याति तो मिलती ही है साथ ही उसके अंदर चुम्बकीयता और अधिकार तत्व भी पुष्ट होता है, जिससे उसकी वाणी और व्यक्तित्व में एक अनोखी सी गंभीरता और आकर्षण उतर आता है।

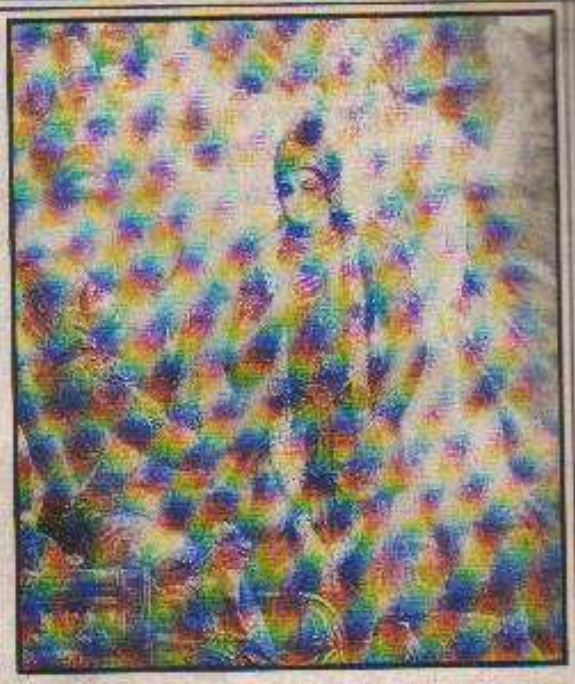

यह प्रयोग केवल अष्टमी की रात्रि में सम्पन्न किया जा सकता है। साधक को चाहिए कि वह इस दिवस विशेष की रात्रि में दस बजे के बाद सर्वथा एकांत में साधनारत हो। उसके वस्त्र, आसन, सामने बिछा कपड़ा सभी पीले रंग के हों और वह स्वयं गोरोचन अथवा केसर का तिलक करके साधना में प्रवृत्त हो। इस साधना में एकाग्रता का विशेष महत्व है। साधना कक्ष में एक बड़े घी के दीपक के अतिरिक्त प्रकाश की कोई भी व्यवस्था न रखें और इसी प्रकाश में अपने सामने **'केशव यंत्र'** स्थापित कर उस पर काजल का बड़ा टीका लगाएं एवं **'विश्व मोहिनी माल्य'** से निम्न मंत्र को १०८ बार जपें।

मंत्र

॥ ॐ क्लीं केशवाय नमः ॥

इस मंत्र को एक साफ कागज पर लिखकर उसे दीपक के समीप ही रख लें। जहां तक सम्भव हो मंत्र जप के काल में यंत्र पर ही दृष्टि टिकाए रहें। मंत्र जप के उपरांत यंत्र पर लगे सम्पूर्ण काजल को सम्भाल कर रख लें और कुछ भाग अपने मस्तक पर लगा लें। यंत्र एवं माला को भविष्य में पुनः प्रयोग में न लें तथा जब कोई विशेष आवश्यकता हो, किसी सभा आदि में प्रवेश करना हो तो इस काजल की बहुत थोड़ी सी मात्रा अपने माथे अथवा वक्षस्थल पर लगा लें। समूह सम्मोहन का यह अचूक एवं अद्वितीय प्रयोग माना गया है।

साधना सामग्री पैकेट – 300/-

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

इच्छा पूर्ति गोविन्द प्रयोग

इस साधना हेतु साधक शुक्रवार रात्रि का प्रथम प्रहर बीत जाने के पश्चात साधना क्रम प्रारम्भ कर अर्द्धरात्रि के साथ पूर्ण कर मंत्र जप सम्पन्न करे, इस साधना हेतु इच्छा पूर्ति **गोविन्द यंत्र, दो गोविन्द कुण्डल** तथा **आठ शक्ति विग्रह** आवश्यक हैं।

अपने सामने सर्वप्रथम बाजोट पर पुष्प ही पुष्प बिछा दें और उन पुष्पों के बीचों बीच **'इच्छा पूर्ति यंत्र'** स्थापित करें, तथा इस यंत्र का पूजन केवल चंदन तथा केसर से ही सम्पन्न करें, अपने सामने कृष्ण का एक सुन्दर चित्र फ्रेम में मढ़कर स्थापित करें, चित्र पर भी तिलक करें तथा प्रसाद स्वरूप पंचामृत हो, जिसमें घी, दूध, दही, शक्कर तथा गंगाजल हो। इसके अतिरिक्त अन्य नैवेद्य भी अर्पित कर सकते हैं, इच्छा पूर्ति यंत्र के दोनों ओर **गोविन्द कुण्डल** पर केसर का टीका लगायें और दोनों हाथ जोड़कर कृष्ण भगवान का ध्यान करें, कृष्ण का ध्यान कर इनके शक्ति स्वरूप **आठ शक्ति विग्रह** स्थापित करें, ये आठ शक्तियां लक्ष्मी, सरस्वती, रति, प्रीति, कीर्ति, कान्ति, तुष्टि एवं पुष्टि हैं, प्रत्येक शक्ति विग्रह को स्थापित करते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें –

ॐ लक्ष्म्यै नमः पूर्वदले, ॐ सरस्वत्यै नमः आग्नेयदले, ॐ रत्यै नमः दक्षिणदले, ॐ प्रीत्यै नमः नैर्ऋत्यदले, ॐ कीर्त्यै नमः पश्चिमदले, ॐ कान्त्यै नमः वायव्यदले, ॐ तुष्ट्यै नमः उत्तरदले, ॐ पुष्ट्यै नमः ईशानदले।

शक्ति पूजन के पश्चात इच्छा पूर्ति मंत्र का जप प्रारम्भ किया जाता है, इसकी भी विशेष विधि है, इसमें अपने दोनों हाथों में एक पुष्प अथवा पुष्प की पंखुड़ी लें, और इच्छा पूर्ति मंत्र का उच्चारण करते हुए उसे अर्पित कर दें।

॥ ॐ श्रीं क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय ह्रीं ॐ स्वाहा ॥

इस प्रकार १०८ बार यह मंत्र उच्चारण इसी विधि से सम्पन्न करना है, यह अर्पण प्रयोग पूर्ण हो जाने के पश्चात पहले से जला कर रखे हुए दीप, अगरबत्ती तथा धूप से आरती सम्पन्न कर प्रसाद ग्रहण करें।

यदि कोई साधक एक महीने तक प्रतिदिन एक माला मंत्र जप सम्पन्न करे, तो उसका इच्छित कार्य अवश्य ही सम्पन्न हो जाता है।

साधना सामग्री पैकेट – 330/-

शत्रु बाधा शांति मधुसूधन प्रयोग

कृष्ण का पूरा जीवन शत्रुओं को कभी युद्ध से, कभी नीति से परास्त कर, शांति स्थापित कर धर्म की स्थापना करने में बीता। जहां धर्म है, वहीं श्रीकृष्ण हैं।

जब शत्रु बाधा बहुत बढ़ जाए, तो शनिवार के दिन अर्द्धरात्रि के पश्चात शत्रुहन्ता प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए, **श्री कृष्ण सुदर्शन यंत्र** के साथ मंत्र सिद्ध **कृष्ण पाश** तथा **कृष्ण अंकुश** की स्थापना कर, विधि-विधान सहित पूजन करना चाहिए, अर्द्धरात्रि के पश्चात अपने पूजा स्थान में एक बड़ा दीपक लगायें, दूसरी ओर धूप, अगरबत्ती जलाएं, दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर सर्वप्रथम कृष्ण आयुधों का पूजन करें, प्रथम पूजन कृष्ण पाश तथा द्वितीय पूजन कृष्ण अंकुश का करें और पूजन करते समय पूरे समय **'ॐ सुचक्राये स्वाहा'** का मंत्र जप करते रहें।

इस पूजन के पश्चात सामने एक चावल की ढेरी पर **श्रीकृष्ण सुदर्शन यंत्र** स्थापित करें तथा चारों ओर कृष्ण के अस्त्र शस्त्र प्रतीक **आठ लघु नारियल** स्थापित करें, ये आठ लघु नारियल आठों हाथों में स्थित शंख, चक्र, गदा, पद्म, पाश, अंकुश, धनुष तथा शर के प्रतीक हैं तथा प्रत्येक लघु नारियल पर कुंकुम, केसर, चावल चढ़ाते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें –

ॐ शंखाय नमः, ॐ चक्राय नमः ॐ गदायै नमः ॐ पद्माय नमः, ॐ पाशाय नमः ॐ अंकुशाय नमः ॐ धनुषे नमः ॐ शराय नमः।

अब अपनी बाधा निवारण तथा शत्रु पर विजय की इच्छा व्यक्त करते हुए सुदर्शन यंत्र का अपनी सारी पूजन सामग्री से पूजन सम्पन्न कर निम्न मंत्र का जप सम्पन्न करें –

मंत्र

॥ ॐ श्रीकृष्णाय असुराकान्त भारहारिणे नमः ॥

इस मंत्र की पांच माला उसी स्थान पर बैठ कर जप करें तथा दूसरे दिन प्रातः राई मिला कर कृष्ण आयुधों तथा आठों लघु नारियलों को एक लाल कपड़े में बांध कर शत्रु के घर की दिशा में गाड़ दें तो प्रबल से प्रबल शत्रु भी शांत हो जाता है।

साधना सामग्री पैकेट – 270/-

संतान प्राप्ति हेतु बाल गोपाल प्रयोग

जिस कुल में या वंश में संतान का अभाव है वहां गृहस्थ सुख संभव नहीं है, इसलिए गृहस्थ व्यक्ति के लिए संतान प्राप्ति की प्रबल इच्छा बनती है, क्योंकि वंश वृद्धि के साथ कुल की परम्परा को और समाज की मर्यादा का पालन करने के लिए तथा पितृ मुक्ति के लिए वंश में पुत्र का होना आवश्यक है। संतान के अभाव में नारी पूर्ण नहीं मानी जाती क्योंकि संतान को वात्सल्य का प्रतिरूप माना जाता है, संतान के अभाव में नारी की वत्सलता उद्भूत नहीं हो पाती और विशेष करके भरतीय समाज में संतान के बिना निरन्तर परिवार में अभाव खटकता ही रहता है और परिवार में मनोमालिन्य बना रहता है, संतान के बिना पति और पत्नी का अटूट प्यार का बंधन शिथिल सा होने लगता है। इसलिए यह प्रयोग करें–

यह साधना किसी भी माह की पूर्णमासी या किसी भी बुधवार को सम्पन्न की जाती है।

प्रातः ६.१२ से ७.३६ के बीच स्नान करके शुद्ध वस्त्र धारण करें, उत्तर दिशा की ओर मुख करके पवित्र आसन पर बैठे। तांबे या स्टील की प्लेट में **संतान गोपाल यंत्र** को स्थापित करें, यंत्र के सामने एक छोटे पात्र में गोल सुपारी रखें। किसी पात्र में पंचामृत बना लें, इस प्रथम प्रयोग में पत्नी अपने पति के दाहिने और बैठे फिर पति **स्फटिक माला** से निम्न मंत्र का १ माला मंत्र जप करे, पत्नी सुपारी के ऊपर मंत्र जप होने तक पंचामृत चढाती रहे, १ माला मंत्र जप होने तक यंत्र पर रखी सुपारी पंचामृत से डूब जानी चाहिए।

मंत्र

॥ ॐ भवेश्वराय वं पूर्णेश्वराय नमः ॥

इसके बाद पत्नी अपने पति के बायीं ओर बैठे, इसके बाद अपने सामने संतान प्राप्ति यंत्र रखकर उसका पूजन कर **स्फटिक माला** से मंत्र जप करें, मंत्र जप करने तक घी का दीपक और अगरबती जलते रहने चाहिएं, पति-पत्नी दोनों निम्न मंत्र का तीन-तीन माला मंत्र जप करें –

॥ ॐ पूर्णेन्दु पूर्णेश्वराय पुत्रप्रदाय नमः ॥

मंत्र जप की समाप्ति के बाद दोनों ही भक्ति भाव से गुरु चित्र एवं श्रीकृष्ण के बाल स्वरूप चित्र के समाने आरती करें।

साधना काल के दूसरे दिन सभी सामग्रियों को किसी लाल या पीले वस्त्र में बांधकर विसर्जित कर दें, माला को अपने गले में धारण कर लें तथा प्रतिदिन एक या दो घंटे तक माला को अवश्य धारण करें। एक माह प्रतिदिन मंत्र जप आवश्यक ही करें, यदि पति-पत्नी दोनों मंत्र जप करते हैं तो ज्यादा श्रेष्ठ है, अगली पूर्णिमा के दिन इस माला को जल में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट – 350/-

विजय सिद्धि देवेश प्रयोग

समाज में या परिवार में सम्मान जनक जीवन जीने के लिए निरन्तर विजय की कामना करनी चाहिए तथा तदनुसार प्रयास भी करना चाहिए क्योंकि पराजय जीवन में हताशा का मूल कारण होती है, स्वस्थ और सुखी जीवन जीने के लिए हमें विजयशील बने रहना चाहिए, कई बार हमारे जीवन में ऐसा वातावरण बन जाता है कि अकारण ही किसी न किसी मोड़ पर नहीं चाहते हुए भी शत्रु, रोग या कई परेशानी सामने आ जाती है। उस स्थिति में हमें उत्साह बनाए रखना चाहिए, हम कितने भी पढ़े लिखे हों, विचारशील हों फिर भी शत्रु तो शत्रु है कहीं भी हमें चोट पहुंचा सकता है, हमें नीचा दिखा सकता है। इस तरह की हानि से बचने के लिए हमें निम्न साधना का सहारा लेते रहना चाहिए, यह कभी नहीं सोचना चाहिए कि हम वैभव या बुद्धि युक्त हैं, और इसलिए हम पराजित नहीं होंगे, यह सोचना हमारी भूल हो सकती है। निम्न साधना इसलिए दी जा रही कि जीवन में हम सदैव सतर्क रहें और विजय सिद्धि हमारे संग संग रहे। किसी भी गुरुवार को प्रातः स्नान करके शुद्ध वस्त्र धारण करें, उत्तर दिशा की ओर मुंह करके पीले आसन पर बैठें, सामने चौकी पर लाल वस्त्र बिछा दें और प्लेट पर पुष्प की पंखुड़ियों पर **विजय सिद्धि यंत्र** स्थापित कर दें, इससे पहले गणेश और गुरु पूजन अवश्य करें, यंत्र का पूजन कुंकुम, तिलक, पुष्प और धूप, दीप से करें, घी का दीपक साधना काल तक जलावें। इसके पश्चात **सफेद हकीक माला** से पांच माला जप ग्यारह दिन तक करें –

॥ ॐ ह्रिं ऐं ह्रीं श्रीं हूं ॐ फट् ॥

ग्यारह दिन के बाद यंत्र को पूजा स्थान में स्थापित कर दें, अन्य सामग्री को जल में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट – 300/-

ग्रह बाधा निवारण जनार्दन प्रयोग

हमारे जीवन में सूर्य आदि नौ ग्रहों का निरन्तर प्रभाव बना रहता है। शनि, राहु, केतु, मंगल आदि दुष्ट ग्रहों का प्रबल प्रभाव होने पर कभी भी जीवन को सुखमय बनाया नहीं जा सकता, क्योंकि इनके विपरीत स्थिति होने पर मनुष्य के सभी प्रयास निरर्थक हो जाते हैं, शनि की दशा ने महाराजा हरीशचन्द्र को भी हीनतम बना दिया, शनि की दशा आ जाने पर भगवान राम को भी वनवास जाने के लिए मजबूर होना पड़ा। जब इस तरह के उदारतम पुरुषों का भी ग्रहों के प्रभाव से बचना कठिन हो गया तो साधारण मनुष्य की गिनती ही क्या हो सकती है। **'ग्रहाधिनं जगत सर्व'** इस पुराण वाक्य के साथ हम यह दावे के साथ कह सकते हैं कि मनुष्य के जीवन में ग्रहों का प्रभाव होता है और ये शुभ और अशुभ फल निरन्तर देते हैं, इसलिए दुष्ट ग्रहों के प्रभाव से बचने के लिए निम्न ग्रह *शांति जनार्दन प्रयोग* सम्पन्न करना चाहिए।

किसी भी **रविवार के दिन या अमावस्या** के दिन प्रातः स्नान आदि नित्य क्रिया से निवृत होकर ७.३६ के बाद लाल वस्त्र धारण कर लें, अपने पूजा स्थान में पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठ जाएं, सामने चौकी पर लाल वस्त्र बिछाकर गुरु चित्र स्थापित करें, यथा विधि गुरु पूजन करके एक माला गुरु मंत्र जप करें, गुरु चित्र के सामने कुंकुम से रगें हुए चावल की ढेरी बनावें। उस पर **कृष्ण जनार्दन सम्पुटित नवग्रह यंत्र** स्थापित कर दें, यंत्र के सामने क्रमशः **नौ गौमती चक्र** स्थापित कर दें, इसके बाद दाहिने हाथ में जल लेकर के संकल्प करें। संकल्प में दिन का नाम, अपना नाम और गोत्र का उच्चारण करें, यंत्र तथा स्थापित नवग्रहों का स्नान करा कर कुंकुम, अक्षत, धूप, दीप से पूजन करें। पुष्प चढ़ाकर पूजन करें और दोनों हाथ जोड़कर निम्न मंत्र से उनका ध्यान करें –

ब्रह्मा मुरारी त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमि सुतो बुधश्च ।
गुरुश्च शुक्रः शनि राहु केतवः सर्वे ग्रहाः शांति करा भवन्तु ।

इसके बाद नवग्रह **सिद्धि माला** से निम्न मंत्र का ११ माला प्रतिदिन मंत्र जप करें।

॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नवग्रहेभ्यो शम् ॥

यह प्रयोग नौ दिन तक करें, इसके बाद सभी सामग्रियों को लाल वस्त्र में बांधकर नदी में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट – 310/-

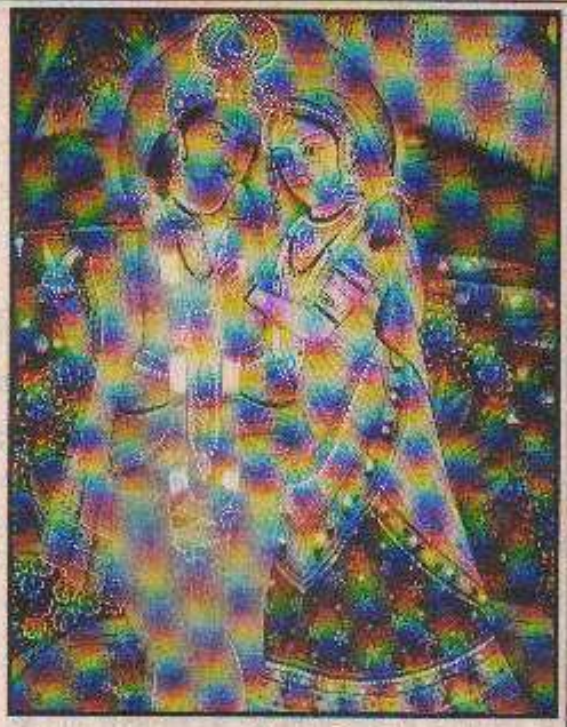

बृहस्थ सुख प्राप्ति हृषिकेश प्रयोग

कभी कभी बहुत प्रयास करने के बाद भी व्यक्ति अपने घर परिवार को सुख और आनन्दमय बना नहीं पाता हालांकि घर में सम्पन्नता है, लक्ष्मी का आगमन हो रहा है, साधन का अभाव नहीं है फिर भी घर में कुछ ऐसा अनचाहा वातावरण बन जाता है कि पारिवारिक जनों में तनाव बना रहता है, आपस में वाद-विवाद होता रहता है। उस समय उस तनाव की स्थिति के लिए कई कारण हो सकते हैं, उसके लिए दुष्ट आत्माओं का वास, ग्रह दोष, पितृ दोष तथा आसपास के वातावरण सभी इसके लिए उत्तरदायी होते हैं, उस स्थिति में हम कितना भी प्रयास करते हैं घर में एक सुखद वातावरण बने किन्तु उस समय हमारे सारे प्रयास व्यर्थ हो जाते हैं क्योंकि जिस घर में सुख और शांति का वातावरण नहीं हो वह घर नर्क से भी निम्न है, उस स्थिति से बचने के लिए आपको निम्न साधना का आश्रय लेना चाहिए क्योंकि यदि आप अपने घर में शांति का वातावरण नहीं बना पाएंगे तो इसका प्रभाव बच्चों पर पड़ेगा और कई-कई पीढ़ियों तक आपकी संतान को भुगतना पड़ेगा।

किसी भी **शुक्रवार** की रात्रि को नौ बजे के बाद इस साधना को आरम्भ करें, पहले स्नान आदि से पवित्र होकर शुद्ध वस्त्र पहन कर उत्तर दिशा की ओर मुख करके पीले आसन पर बैठें। संक्षिप्त गुरु और गणेश पूजन करके सामने चौकी पर कुंकुम से त्रिकोण बनावें, उसके ऊपर **गृहस्थ सुख प्राप्ति यंत्र** स्थापित करें, इसके बाद तीनों कोणों में तीन तेल के दीपक जलावें, उसके बाद तिलक, अक्षत, धूप, दीप, पुष्प से यंत्र का पूजन करें, फिर **स्फटिक माला** से निम्न मंत्र की ५ माला मंत्र जप करें।

॥ ॐ श्रीं ह्रीं गृहस्थ सुखं देहि हृषिकेशाय नमः ॥

यंत्र के दायीं ओर एक सुपारी किसी प्लेट पर स्थापित करें, उसका भी पंचोपचार से पूजन करें, इसके बाद **ॐ ह्रीं हृषिकेशाय नमः** इस मंत्र को ग्यारह बार पढ़ते हुए सुपारी पर चावल चढ़ायें, यह ग्यारह दिन की साधना है। साधना समाप्ति के बाद स्फटिक माला को पहनें, यंत्र को जल में विसर्जित कर दें और उस सुपारी और चावल को किसी लाल कपड़े में बांधकर अपने घर में रख दें या जमीन में गाड़ दें। निश्चित रूप से इस प्रयोग के बाद आपके घर का वातावरण शांत बन पाएगा।

साधना सामग्री पैकेट – 360/-

बल वृद्धि महाबाहु प्रयोग

संसार में शक्तिहीन हो करके जीना दुर्भाग्य का पर्याय है, चाहे वह समाज में हो या परिवार में हो उसका निरन्तर तिरस्कार होता है क्योंकि शक्तिहीन व्यक्ति का भाग्य भी साथ नहीं देता। **दैवो दुर्बल घातकः** इस युक्ति के अनुसार कमजोर होना एक शाप है इसलिए शारीरिक शक्ति से, विद्या शक्ति से, धन शक्ति से और जन शक्ति से हमें सम्पन्न होने का निरन्तर प्रयास करना चाहिए जिससे समाज में, परिवार में या विश्व में मस्तक ऊंचा करके सम्मान पूर्वक जी सकें क्योंकि शक्ति हीन होकर तिल-तिल जीने के बजाय शक्ति सम्पन्न बनकर कुछ दिन जीना ही श्रेष्ठ है। यदि किसी कारणवश आप शारीरिक शक्ति से रहित हैं, कमजोर हैं, बलहीन हैं और असम्मान की निरन्तर यदि सम्भावना बनी रहती है उस स्थिति में इस श्रेष्ठ प्रयोग को अवश्य करना चाहिए जिससे आप का जीवन उदात्त और सुखमय बन सके।

किसी भी **पूर्णमासी** या शनिवार के दिन रात्रि ९.३५ के बाद इस साधना को सम्पन्न करें, अपने सामने बाजोट रख लें उसपर लाल वस्त्र बिछाकर, चावल से स्वस्तिक बनाकर उसमें **बलबाहु नृसिंह यंत्र** स्थापित करें तथा यंत्र की चारों दिशाओं में चार **ऊर्जास्वित गुटिकाएं** स्थापित कर दें, उसके बाद यंत्र और गुटिकाओं पर निम्न मंत्र बोलते हुए जल का छींटा दें।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वा वस्थां गतोपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः

इसके बाद यंत्र के मध्य में तथा चारों गुटिकाओं पर केसर अथवा अष्टगंध का तिलक करें तथा धूप दीप दिखाकर पुष्प चढ़ावें। साधना काल तक घी का दीपक और अगरबत्ती जलते रहना चाहिए। साधना शुरु करने से पूर्व गुरु पूजन और गुरु मंत्र जप अवश्य करना चाहिए, इसके बाद निम्न मंत्र का लाल हकीक माला से ११ माला मंत्र जप करें।

॥ॐ लिं नृसिंहाय बलदाय महाबाहवे ह्रीं ॐ फट्॥

यह ११ दिन की साधना है, साधना समाप्ति के बाद गुटिकाओं को तथा माला को जल में प्रवाहित करें, यंत्र को अपने पूजा स्थान में लाल कपड़े में बांधकर २१ दिन स्थापित करें और २१ दिन तक उसके सामने धूप या अगरबत्ती जलावें। बाद में इसे भी जल में प्रवाहित करें, यह बल प्राप्ति का अद्भुत प्रयोग है। शारीरिक बल, वीर्य, ओज, तेज, कायाकल्प के साथ अस्वस्थता को पूर्ण रूप से समाप्त करने के लिए यह अत्यन्त श्रेष्ठ साधना है।

स्वस्थ देह, स्वस्थ मन और स्वस्थ मन से गुरु चिंतन, गुरु चिंतन के साथ योगेश्वर कृष्ण चिंतन यही जीवन का आधार होना चाहिए।

साधना सामग्री पैकेट – 270/-

आप भी रचनाएं भेज सकते है –

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान पत्रिका भारतीय सनातन वैदिक संस्कृति का प्रतिबिम्ब है जिसमें मंत्र, तंत्र, वेद, धार्मिक आख्यान, स्तोत्र, साधनाएं, अलौकिक घटनाएं, महापुरुषों की गाथाएं, विशेष विवेचना, तांत्रोक्त अनुभव इत्यादि से सम्बन्धित रचनाएं प्रकाशित की जाती है। आप में भी लेखन क्षमता है तो आप उपरोक्त विषयों से सम्बन्धित रचनाएं लिखकर भेज सकते है। श्रेष्ठ रचनाओं को पत्रिकाओं में अवश्य ही स्थान दिया जायेगा।

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

स्वास्थ्य साधना

यों तो किसी भी रोग के शमन हेतु आज चिकित्सा विज्ञान के पास अचूक इलाज हैं, परन्तु मंत्रों के माध्यम से चिकित्सा के पीछे धारणा यह है, कि सभी रोगों का उद्भव मनुष्य के मन से ही होता है। मन पर पड़े दुष्प्रभावों को यदि मंत्र द्वारा नियंत्रित कर लिया जाए, तो रोग स्थायी रूप से शान्त हो जाते हैं।

1. क्या आप मानसिक रूप से अपने आप को दुर्बल अनुभव करते हैं?

प्रत्येक व्यक्ति जीवन में सफलता की सीढ़ियां चढ़ना चाहता है, जो व्यक्ति ऐसा कर लेते हैं, वे स्वयं को मानसिक रूप से बहुत सबल अनुभव करते हैं। लेकिन कुछ लोग ऐसे भी होते हैं, जो ऊंचाईयों को तो प्राप्त करना चाहते है, लेकिन मानसिक रूप से सबल न होने के कारण हीन ही बने रह जाते है और दूसरों की बेवजह आलोचना करते हैं तथा यह जानते हुए भी कि सामने वाला सही है, उसे गलत सिद्ध करने का प्रयास करते है।

ऐसा मात्र उनकी न्यूनताओं के कारण ही होता है, जिसे वे जानते हुए भी बार-बार दुहराते हैं। कुछ समय पश्चात उनकी यह क्रिया उनकी आदत में शामिल हो जाती है, जिसके कारण उनका हृदय तो बार बार उन्हें गलत कहता है, लेकिन स्वार्थवश वे ऐसा करते ही रहते हैं। धीरे-धीरे इसका प्रभाव मानसिक दुर्बलता के रूप प्रकट होता है। यदि आप भी स्वयं को मानसिक रूप से किसी कार्य के लिए दुर्बल अनुभव करते हैं, तो यह प्रयोग सम्पन्न करें –

पारद मुद्रिका का पूजन कर उसे सोमवार के दिन श्रेष्ठ मुहूर्त में धारण कर लें। नित्य २१ दिन तक निम्न मंत्र का जप ५१ बार करें –

मंत्र

॥ ॐ ह्रीं पारदेश्वराय मनस् चैतन्य सिद्धि ॐ नमः ॥

इस प्रकार २१ दिन तक करें, बाद में मुद्रिका को शिव मंदिर में चढ़ा दें तथा जब भी स्वयं को दुर्बल अनुभव करें, तो उपरोक्त मंत्र का जप करें।

साधना सामग्री : 80/-

3. पता नहीं क्यों आजकल भूलने की बीमारी हो गई हैं?

यह वाक्य आजकल लगभग हर दूसरे व्यक्ति से सुनने को मिल जाता है। आखिर ऐसा क्यों होने लगा है, कि व्यक्ति स्वयं को मानसिक रूप से एकाग्र कर पाने में अक्षम महसूस करने लगा है? ऐसा इसलिए हो रहा है, कि सामाजिक तथा आर्थिक परिवेश के कारण व्यक्ति में स्वार्थ की भावना निरन्तर बढ़ती जा रही है, स्वार्थी न होना चाहते हुए भी उसे स्वार्थमय जीवन व्यतीत करना पड़ता है और एक साथ कई रूपों में स्वयं को बांटकर जीवन यापन करने के कारण वह सदैव तनाव में रहता है। इस तनाव युक्त जीवन के कारण ही व्यक्ति मानसिक रूप से स्वयं को एकाग्र नहीं कर पाता और उसकी स्मरण शक्ति धीरे-धीरे क्षीण होती जाती है। यह अवस्था मेडिकली तो ७० वर्ष की आयु के पश्चात आती है, लेकिन आजकल सामान्य रूप से २०-२५ वर्ष की अवस्था में ही शुरु होने लगती है और कुछ वर्षों में ही विशाल रूप धारण कर लेती है। आप यह प्रयोग सम्पन्न करें –

उत्तर दिशा की ओर मुख कर पांच पीपल के पत्ते लेकर पांचों पर कुंकुम से स्वस्तिक बनाकर उस पर चावल की ढेरियां बना दें। प्रत्येक ढेरी पर क्रमशः पांच पुष्प रखें। मध्य के पत्ते पर पुष्प के साथ **प्रकीर्तिता** स्थापित करें। प्रकीर्तिता का पूजन कर दीपक लगा दें। निम्न मंत्र का जप नित्य प्रातः ठीक ६ बजे ३१ बार करें –

॥ ॐ जं जौं क्षां क्षौं ॐ फट् ॥

यह प्रयोग ९ दिन तक करें। नौ दिन के बाद प्रकीर्तिता को नदी में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री : 80/-

आप के पत्र

यह प्रसन्नता की बात है, कि पत्रिका परिवार के सदस्यों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है और पाठकों एवं साधकों के जीवन की समस्याओं के समाधान उन्हें प्राप्त हो रहे हैं, कठिनाइयां कम हुई हैं तथा आध्यात्मिक उन्नति के साथ-साथ भौतिक जीवन भी मधुरतापूर्ण एवं उन्नतिपूर्ण हुआ है। इस पत्रिका के प्रति पाठकों एवं साधकों का जो विश्वास है, वह अपने आप में सराहनीय है। इसमें प्रकाशित साधनाएं सम्पन्न कर अनेक दुःखों से पीड़ित, बीमारियों से ग्रस्त, मुकदमें में फंसे हुए लोगों ने लाभ उठाया है, जिसका विवरण हमें प्राप्त होने वाले पत्रों में स्पष्ट होता है।

पत्रिका के प्रति पाठकों एवं साधकों का जो विचार है, उन विचारों को ही यह स्तम्भ के माध्यम से हम आप तक पहुंचाते हैं और इसी क्रम में पहला पत्र –

✻ प्रमोद सिद्धेश्वर, महाराष्ट्र से लिखते हैं – माह अप्रेल के अंक में आपने जो गुरु आह्वान स्तोत्र दिया है वह शिष्यों के लिए गुरु जन्म दिवस पर मूल्यवान उपहार है। पत्रिका में जो आप योगों के बारे में जानकारी देते हैं उनसे शिष्यगणों के ज्ञान में वृद्धि होती है तथा वे सही समय में साधना करते हैं। पत्रिका में दिन ब दिन निखार आ रहा है।

प्रिय प्रमोद जी आपके विचार उत्तम और आपका अनुरोध सराहनीय है। हम भी आप के साथ गुरुदेव से यह प्रार्थना कर रहे हैं, कि वे शिष्यों को इसी तरह ज्ञान और चेतना देते रहे जिससे लाखों लोगों प्रेरणा ले सकें।

✻ संजय पराते, नागपुर से लिखते हैं – मैंने पत्रिका में कालसर्प योग के बारे में लिखा लेख पढ़ा, बहुत ही अच्छा लगा। आप जन्म कुंडली में व्यातीपात योग के बारे में भी लेख जल्द ही प्रकाशित करने की कृपा करें जिससे कि सभी साधकों को लाभ प्राप्त हो सके।

प्रिय संजय जी यह प्रसन्नता की बात है आप जन्म कुंडली के बारे में रुचि रखते हैं समय-समय पर पत्रिका में ज्योतिष के बारे में लेख प्रकाशित होते हैं, हम जल्द ही इस बारे में लेख प्रकाशित करेंगे।

✻ विकास कुमार मंडल, बिहार से लिखते हैं – मैं मंत्र-तंत्र-यंत्र पत्रिका से बहुत ही खुश हूं क्योंकि आज के युग में भी ऐसी पत्रिका का प्रकाशन होगा आशा नहीं थी। आपसे प्रार्थना है कि आप भुवनेश्वरी साधना पत्रिका में देने की कृपा करें जिससे लाखों साधकों को इससे लाभ हो।

✻ सुनील पवार, बैतुल से लिखते हैं – पत्रिका में स्तोत्र श्रृंखला प्रारंभ हुई है, उसी क्रम में यदि आप कृपा पूर्वक अप्सरा प्राप्ति से सम्बन्धित स्तोत्र दें तो हमारा सौभाग्य होगा, सभी साधक भाई इससे लाभान्वित हो सकेंगे।

✻ हरीओम राजौरिया, अलीगढ़, म.प्र.) से एक बहुत अच्छी रचना प्राप्त हुई है –

हे सिद्धाश्रम के प्राणनाथ, गुरुधाम निकेतन देवार्षि,
निसृत रहती दो धाराएं, बहती आंखें गंगा-यमुना॥
गुरुदीक्षा संगम कब होगा?
मनदीप जले तो अविचल जल, विचलित न दृग से ओझल हों,
फिर कृपा फुहार बन बरसे, सावन भी फीका पड़ जाये,
ऐसा निज प्रेमसागर दो।
जो रो-रो दिन रैन गंवाते हैं, उन मानव हृदयों में देवोदय,
ज्यों तिमिर चीर उदीप्त सूर्य, दो वरद कृपा सबको ऐसे,
कोई पात्र सुपात्र न शेष रहे।

✻ आसाराम शर्मा, शाहजहांपुर (उ. प्र.) ने एक बहुत अच्छी कविता भेजी है –

विराज रहे है सभा में, सती-पार्वती, और गुरुवर गुरु महेश।
ध्यान निमग्न हो शिव पूजन में, है बिल्कुल खामोश॥
सच्ची लग्न और श्रद्धा सुमन, अर्पण करते सुन्दर कर कमलों से।
शिव-शक्ति ही शक्ति नागेश्वर को नित्यं पुज्यते॥

निः शुल्क उपहार

अखण्ड सौभाग्यवती माला

किसी भी घर का दर्पण, घर की लक्ष्मी अर्थात गृहिणी यानि घर को चलाने वाली पत्नी होती है। यदि वह कार्य कुशल है, स्वस्थ है, बुद्धिमान है, सुव्यवहार सम्पन्न व सुशील है, करुणा से आपूरित है, तो घर का अपने आप ही कल्याण होता है। घर की स्त्री ही परिवार का वह केन्द्र होती है, जिसे अपनी उतनी चिन्ता नहीं रहती, जितनी कि अपने पति की, पुत्रों की, पुत्रियों की एवं परिवार के वरिष्ठजनों की। भारतीय पृष्ठभूमि में घर की गृहिणी को अनेकों व्रत करते हुए देखा जाता है, परन्तु उनमें से अधिकांश व्रत वह अपने पति, सन्तानें एवं कुटुम्ब मंगल के लिए ही करती है।

यदि घर की स्त्री के सौभाग्य की वृद्धि होती है, तो इसका अर्थ है –

- घर में लक्ष्मी का स्थायी निवास,
- घर के सभी सदस्यों की चतुर्मुखी उन्नति व प्रगति,
- घर के सभी सदस्यों पर आने वाली विपदाओं का पूर्ण निवारण
- घर पर सभी देवी-देवताओं की कृपा

इसी उद्देश्य से **अखण्ड सौभाग्यवती माला** का निर्माण किया गया है, जो कि प्रत्येक घर में होनी ही चाहिए। यह एक माला ही सम्पूर्ण कुटुम्ब मंगल के लिए अचूक है।

विधि – किसी मंगलवार के दिन गुरु चित्र के समक्ष इस माला से '**ॐ सौभाग्यं देहि ह्रीं ॐ नमः**' मंत्र की ५ माला जप करें तथा सम्पूर्ण परिवार के कल्याण, सौभाग्य, उन्नति, स्वास्थ्य की कामना करें। इसके बाद घर की स्त्री को चाहिए कि नित्य इस माला को १ घंटे तक अवश्य धारण करे। इससे घर के सभी सदस्यों का मंगल होता है।

जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान – ''ज्ञान दान''

ज्ञान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है। २० पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मंदिरों में, अस्पतालों में, समारोहों में, मंगल कार्यों में, ब्राह्मणों को, निर्धन परिवारों को दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी इस श्रेष्ठ ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर सकते हैं, जो अभी तक इससे वंचित हैं। इस क्रिया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को साधनात्मक ज्ञान की शीतलता प्राप्त होगी और उनका जीवन एक श्रेष्ठ पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

आप क्या करें?

आप केवल एक पत्र (संलग्न पोस्टकार्ड क्रमांक 3) भेज दें, कि '**मैं 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं मंगाना चाहता हूं। आप निः शुल्क 'मंत्रसिद्ध अखण्ड सौभाग्यवती माला'** 365/- (**20 पूर्व प्रकाशित पत्रिका के** 300/- + **डाक व्यय** 65/-) **की वी. पी. पी. से भिजवा दें, वी. पी. पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धन राशि देकर छुड़ा लूंगा। वी. पी. पी. छूटने के बाद मुझे** 20 **पत्रिकाएं रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दें।**'' आपका पत्र आने पर, 300/- + डाक व्यय 65/- = 365/- की वी. पी. पी. से '**मंत्र सिद्ध अखण्ड सौभाग्यवती माला**' भिजवा देंगे, जिससे कि आपको यह दुर्लभ उपहार सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके। वी.पी.पी. छूटने पर आपको २० पत्रिकाएं भेज दी जाएंगी।

सम्पर्क ***अपना पत्र जोधपुर के पते पर भेजें।***

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर – ३४२००१, (राज.)

फोन – 0291-432209, टेली फैक्स: 0291-432010

Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimali Marg, High Court Colony, Jodhpur-342001, (Raj.), India. Phone : 0291-432209

साधक साक्षी हैं

गुरु कृपा मनोवांछित वर की प्राप्ति

गत तीन वर्षों से मेरे माता-पिता मेरे विवाह के लिए चिंतित इसलिए रहते थे कि मेरे लिए कोई योग्य वर ढूंढे नहीं मिल रहा था। और जो आते भी थे वे पुनः लौटकर नहीं आते थे, मैं मानसिक रूप से विचलित होते चली जा रही थी कि मेरे जीजा व दीदी जी के प्रेरणा से जनवरी माह में रायपुर छत्तीसगढ़ के शिविर में गुरुदेव जी से गुरु दीक्षा ली। तत्पश्चात मेरे जीजा जी ने मुझे मंत्र शक्ति केन्द्र जोधपुर से परिणय सूत्र माल्य मंगवाकर, दो माह तक धारण करने व सम्बन्धित मंत्र जपने की सलाह दी, जिसे मैंने अपने पिता से कहकर मंगवाया और विधि अनुसार मैंने वैसा ही किया। दो माह के अंत में वस्तुतः हमारे घर एक योग्य वर का पदार्पण हुआ जो मुझे पसंद कर यह कह कर चला गया कि विवाह करूंगा तो तुम्हीं से अन्यथा अविवाहित ही रह जाऊंगा। वह मुझे भी पसंद है, हमारे परिजनों ने भी उक्त नवयुवक का पसंद कर लिया है तथा शीघ्र ही हमारी सगाई भी होने वाली है।

यह सब मेरे गुरुदेव जी की मंत्र तंत्र शक्ति के माध्यम से ही संभव हुआ है। आपका आशीर्वाद और स्नेह मुझे इसी तरह मिलता रहे, ताकि मेरा परिवार बस जाए।

– कु. भारती चौहान, गांधीनगर भिलाई (म. प्र.)

गुरु कृपा से प्राणों की रक्षा

सर्वप्रथम तो गुरुदेव के चरणों में हमारा प्रणाम स्वीकार हो क्योंकि गुरुदेव की कृपा से हमारे प्राणों की रक्षा हुई। पिछले महीने हम लोग होशंगाबाद किसी सामाजिक समारोह में भाग लेने गये थे। होशंगाबाद से भोपाल के लिये स्टेशन आते समय आटो पलट गया, साक्षात गुरुदेव ने हमें बचाया। अभी भोपाल स्टेशन पहुंचे ही थे और घर आने के लिये आटो किया बिल्कुल उसी प्रकार से पुनः आटो पलट गया और गुरुदेव ने हमें बचा लिया। एक खरोंच भी नहीं लगी जबकि वह मार्ग बेहद व्यस्त था, कुछ भी हो सकता था।

मैं नियमित रूप से गुरु दीक्षा के बाद से ही गुरु पूजा करती हूं व माला फेरती हूं। मेरी व मेरे पूरे परिवार की गुरुदेव में पूर्ण श्रद्धा है और दिनों दिन बढ़ती जा रही है।

– अनीषा लूजावत, बैक कालोनी भोपाल (म. प्र.)

गुरु कृपा से लक्ष्मी एवं भगवान शिव का दर्शन

९८ अक्टूबर जोधपुर में लक्ष्मी साधना सम्पन्न हुआ, उसमें मैंने भाग लिया। घर आकर मंत्र जप नित्य करता था, एक दिन स्वप्न में देखा कि पूज्य गुरुदेव संन्यास स्वरूप में खड़े हैं, उसी वक्त माता लक्ष्मी पद्म मुद्रा में पद्म आसन पर बैठी प्रकट हुई। उनके चारों तरफ सफेद प्रकाश निकल रहा था, फिर वह प्रकाश छोटा होकर मेरे नाभी के सम्मुख आकर अदृश्य हो गया। उसी वक्त एक संन्यासी आया और कहा आप बहुत भाग्यशाली हैं, पूज्य गुरुदेव जी ने आपको लक्ष्मी दीक्षा दी है। इस घटना के दो महीने बाद पूज्य गुरुदेव जी के संन्यासी स्वरूप में दर्शन हुए। फिर मेरा मन बेचैन हो गया, मैं गुरुदेव से मिलने जोधपुर गया, पूज्य गुरुदेव अरविन्द जी ने शिवत्व सिद्धि दीक्षा दी। मैंने घर आकर सवा लाख गुरु मंत्र जप किया, रात्रि में देखा पूज्य गुरुदेव बालक स्वरूप में शिव मंत्र उच्चारण कर रहे हैं। इस घटना के दो महीने बाद एकान्त स्थान पर बैठा होम कर रहा था उसी समय भगवान शिव सामने प्रकट हुए। मैंने उन्हें स्पर्श करके प्रणाम किया और वे अदृश्य हो गए। यह सभी गुरु कृपा से ही संभव है।

– जितेन्द्र साह, नमची बाजार, साउथ सिक्किम

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

मेरे परिवार के प्राणों की रक्षा हुई

मैं पिछले तीन वर्षों से पत्रिका के साथ जुड़ा हुआ हूं, जब से गुरु दीक्षा मैंने ग्रहण की मैंने अपने आप में कुछ शांती महसूस की और तो क्या आप के द्वारा परिवार पर आये संकट का भी निवारण हुआ।

एक दिन हम सब परिवार के साथ गर्मी के दिनों में सिलींग पंखे के ठीक नीचे सो रहे थे । ठीक पंखे के नीचे मेरी पांच और छ साल की दो लड़कियां सो रहीं थी और साथ में बैठ कर लड़का टी. वी. देख रहा था। उसी समय पंखा ठीक बच्चों के बीच में गिरा । एक लड़की को मामूली सी चोट उंगली पर लगी जो आठ दिन में ठीक हो गयी। यह सब देख कर हमें आश्चर्य होता है। यह दुर्घटना आपके द्वारा ही टली और परिवार की प्राण रक्षा हुई। उसी कमरे में जो पूजा का स्थान है वहां प्रभु आपका फोटो रखा है।

और एक घटना जो मेरे पत्नी के साथ घटित हुई । एक दिन छोटी लडकी को लेकर पत्नी स्कूल से छुट्टी होने के बाद घर आ रही थी।अचानक रास्ते में एक बड़ी गाड़ी का ब्रेक फेल हो गया। गाड़ी सीधी पत्नी और लड़की के पास आई परन्तु आप की कृपा से गाड़ी एकदम पास आकर रुक गई और मेरे परिवार की रक्षा हो गई , वरना गाड़ी की स्पीड इतनी थी कि एक्सीडेन्ट होना निश्चित था।

— अशोक गजभाई, ला गार्डन, अहमदाबाद

गुरु कृपा से प्रतियोगी परीक्षा में सफलता

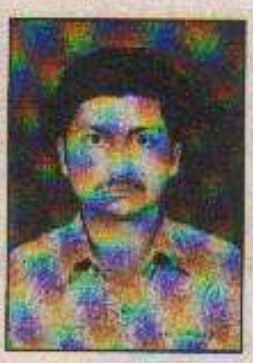

मैं कई प्रतियोगी परीक्षाएं देकर बहुत निराश हो चुका था क्योंकि आज के इस भ्रष्टाचार के युग में किसी भी प्रतियोगी परीक्षा में चयन की बहुत ही कम आशा रहती है। गत वर्ष मैंने पी. ई. टी. परीक्षा के लिए आवेदन किया। पूर्व की असफलता से मैं निराश था, अतः यह मेरा अंतिम आवेदन था, मैंने इस बार परिणाम पूर्णतः गुरुदेव पर छोड़ दिया क्योंकि आज के युग में किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए भौतिक शक्ति अथवा आध्यात्मिक शक्ति होना जरूरी है। इनके बिना आज सफलता प्राप्त नहीं की जा सकती। मैंने सदगुरुदेव से ९६ में गुरुदीक्षा प्राप्त की। परीक्षा से पूर्व गुरुदेव से मिला और उनका आशीर्वाद तथा चैतन्य दीक्षा प्राप्त की।

उस बार मेरी परीक्षा २५ जुलाई को थी। मैंने मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका के स्तम्भ **वराहमिहिर ने कहा है** के अनुसार २५ जुलाई को १०८ मंत्र **ॐ नमः शिवाय** का जप पूर्व दिशा की ओर मुंह करके किया, फिर गुरु मंत्र की चार माला जप करने के बाद परीक्षा देने गया। गुरुदेव की कृपा से मुझे पी. ई. टी. परीक्षा में प्रथम प्रयास में ही सफलता प्राप्त हुई। यह सब सदगुरुदेव के आशीर्वाद का ही परिणाम है। सदगुरुदेव ने सफलता दिलाकर मुझे राह दिखाई। इससे यह बात भी स्पष्ट होती है कि पत्रिका में दिए गए सभी स्तम्भों का भी विशेष महत्व है। अगर मैं पूर्व में दिए गए कम्पीटिशनों में भी इस पत्रिका के अनुसार कार्य करता तो पहले ही मुझे सफलता मिल जाती। मेरी गुरुदेव से प्रार्थना है कि मुझे और मेरे विद्यार्थी गुरु भाइयों को इसी प्रकार आपका आशीर्वाद मिलता रहे। सदगुरुदेव के चरण कमलों में मेरा कोटि-कोटि प्रणाम।

— पुरुषोतम पोटर, बोहत, राजस्थान

महालक्ष्मी दीक्षा से विषधारी सर्प से रक्षा ।

मैंने निखिल जयंती भोपाल में महालक्ष्मी दीक्षा परम पूज्य गुरुदेव श्री नन्दकिशोर श्रीमाली जी से ली। दीक्षा के २ महीने बाद मैं एक दिन अपने खेत की मेंड़ पर बैठा अपने भविष्य के बारे में सोच रहा था, मुझे नहीं मालुम था कि मेरे पीछे से काला भयंकर विषधारी सर्प मेरी मौत लेने आ रहा है।

मैं अपने ही विचारों में मग्न था, अचानक मेरा मन हुआ कि अब घर चलें। भविष्य के बारे में सोचना जैसा ही बन्द हुआ और मैं घर आने को जैसा ही उठा और पीछे मुड़कर देखा तो मैं सन्न रह गया, मेरे हाथ पांव कांप उठे और मैं पांच छः फीट पीछे हट गया। अगर मैं ३ सेकेण्ड और बैठा होता तो शायद मैं यह लेटर न भेज पाता और मेरी मौत निश्चित थी, सर्प का और मेरा फासला सिर्फ २ फीट का था। अगर मुझ पर गुरु कृपा न होती तो मैं प्राण गंवा बैठता, इसीलिए गुरुदेव गुरु दीक्षा देते समय चेतना मंत्र भी देते हैं, इसीलिए मेरे मन में इतनी जल्दी चेतना आ गई कि अब घर लौट चलें और सारे विचार सुन हो गये। इसी प्रकार हे गुरुदेव अनुकम्पा और आशीर्वाद बनाये रखना।

— रमेश सराटकर, लालाबाड़ी आमला, बैतुल (म. प्र.)

आयुर्वेद सुधा

हृदय रोग

यह आवश्यक नहीं है कि वृद्ध व्यक्तियों को ही रक्तचाप होता हो, युवकों, स्त्रियों, बालकों और वृद्धों सभी को रक्तचाप की स्थिति झेलनी पड़ सकती है, यह रोग जितना सामान्य और सरल दिखाई देता है, उतना ही ज्यादा खतरनाक और दुःखदायक है, अतः इसका इलाज और उपचार तुरन्त प्रारम्भ कर लेना चाहिए।

क्या आप जानते हैं?

१. आपका हृदय आपके जन्म लेने के बहुत समय पहले से ही आपकी मृत्यु तक बिना विश्राम के निरन्तर कार्य करता रहता है।

२. आपके हृदय का औसतन वजन २५०- ३०० ग्राम तक होता है।

३. हृदय रोग अधिकतर मानसिक तनाव से ग्रस्त लोगों जैसे वकील, आफिसर को अधिक देखने को मिलता है।

४. यह प्रतिदिन १ लाख ४ हजार धड़कन करता हुआ, ७२०० लीटर तक रक्त पम्प करता है। शरीर में रक्तवाहिनियों का ६०,००० मील लम्बा जाल बिछा रहता है।

५. हृदय रोग का मोटापे, मधुमेह, धूम्रपान, शराब पीने, चर्बीदार अथवा वसायुक्त भोजन करने, चिंता युक्त और आधुनिक तनावपूर्ण जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध है।

१. **गाजर** – हृदय की धड़कन बढ़ाती है तथा रक्त को गाढ़ा होने की बीमारी में गाजर लाभप्रद है।

२. **सेब** – सेब का सेवन करने से हृदय की दुर्बलता दूर हो जाती है।

३. **मौसमी** – हृदय रक्त संस्थान, रक्तवाहिनियों और कैपीलेरीज को शक्तिशाली बनाने में मौसमी सर्वोतम फल है। इसके उपयोग से रक्तवाहिनियां कोमल व लचीली होती हैं। उनमें एकत्रित कोलेस्ट्राल शरीर से बाहर निकलने में मौसमी सहायक होती है।

४. **नींबू** – रक्तवाहिनियों में लचक और इनकी कठोरता को दूर करता है तथा हाई ब्लडप्रेशर जैसे रोग को दूर करता है। यह हृदय को शक्ति देता है।

५. **हींग** – हींग दुर्बल हृदय को शक्ति देती है। रक्त के जमने को रोकती है। रक्त संचार सरलता से करती है।

६. **शहद** – शहद हृदय को शक्ति देने के लिए सर्वोतम औषधि है। यह रोगग्रस्त हृदय को शक्तिशाली और पुष्ट बनाता है तथा हार्टफेल होने से बचाता है।

चौलाई – चौलाई का रस हृदय के रोगियों के लिए लाभदायक है। इसकी सब्जी भी खाई जा सकती है।

लहसुन – हृदय रोग में लहसुन देने से पेट की वायु निकलकर हृदय पर दबाव हल्का हो जाता है, हृदय को बल मिलता है। कोलेस्ट्रोल को कम करने में लहसुन बड़ा प्रभावशाली है और इस प्रकार दिल के दौरे की बीमारी को रोकता है तथा धमनियों को सिकुड़ने से बचाता है। रोगग्रस्त धमनियों में जमे कोलेस्ट्रोल को निकालकर पुनः ठीक कर देता है। लहसुन हृदय रोग को रोकता है।

प्याज – प्याज का रस और शुद्ध शहद बराबर मात्रा में मिलाकर नित्य दो चम्मच दस ग्राम की मात्रा में दिन में एक बार लेना चाहिए। इससे रक्तचाप कम होता है।

प्याज का रस खून में कोलेस्ट्रोल की मात्रा को कम करके दिल के दौरे को रोकता है। प्याज स्नायु संस्थान के लिए टानिक है तथा खून साफ करने वाला, पाचन में सहायक और अनिद्रा को रोकने वाला है।

दही – हाई ब्लडप्रेशर मोटापे तथा गुर्दे की बीमारी में दही अत्यन्त लाभकारी है। रक्त में बनने वाले कोलेस्ट्रोल नामक घातक पदार्थ को मिटाने की क्षमता रखता है, जो कि रक्तशिराओं

में जमा होकर रक्त प्रवाह को रोकता है। अतः दही का प्रयोग उत्तम है।

आंवला – सूखे आवलों को कूट पीसकर बारीक चूर्ण बना लें और उसमें बराबर मात्रा में मिश्री मिलाकर कांच के मर्तबान में रख लें। नित्य सुबह खाली पेट छः ग्राम (दो चम्मच) चूर्ण पानी के साथ फांक लेने से कुछ ही दिनों में हृदय के समस्त रोग दूर हो जाते हैं।

पंचमुखी रुद्राक्ष पहनने से उच्च रक्तचाप में लाभ होता है। यह रक्तवाहिनियों के कठोर व मोटा होने की दशा में भी लाभ करता है। ध्यान रहे इसका त्वचा से स्पर्श करते रहना आवश्यक है।

रुद्राक्ष के दानों को नित्य रात्रि में एक गिलास पानी में भिगो दें और सुबह पानी पी लें। प्रत्येक माह रुद्राक्ष के दानों को बदल कर नये दाने ले लें।

आयुर्वेद में रक्तचाप को नियंत्रित करने के लिये गैयल जड़ी बूटी होती है, जिसकी जड़ से गोलियां बनाई जाती हैं, ये गोलियां रक्तचाप को नियंत्रित करने में पूर्णरूप से सहायक रहती हैं।

रक्तचाप का मुख्य कारण चिंता या तनाव होता है, अतः लड़ाई -झगड़े, मतभेद आदि की स्थिति में आप न आवें, एकांत स्थान में कुछ समय के लिये विश्राम करें, भोजन के बाद पन्द्रह मिनट का विश्राम या हल्की सी झपकी ले लेना उत्तम माना गया है। कहने का तात्पर्य यह है, कि अपनी रुचियों में परिवर्तन लाइये, संगीत या बागवानी में शौक पैदा कीजिये, कुछ ऐसा करिये, जिससे आप थाटलेस या विचार शून्य बन सकें, बच्चों के साथ खेलिये और कुछ नवीनता अपने जीवन में लाइये, इससे आपका ध्यान एक बिन्दु से अलग हटेगा और यह रक्तचाप में अनुकूलता लायेगा।

ऐसे व्यायाम करें जिनसे ज्यादा से ज्यादा आक्सीजन मिल सके जैसे प्रातः काल तेजी से चलना, साईकल चलाना, पानी में तैरना, रस्सी कूदना आदि, इससे शरीर को ज्यादा आक्सीजन मिल सकेगी और रक्तचाप नियंत्रित रहेगा।

शवासन

उचित ढंग से शवासन द्वारा शिथिलीकरण का अभ्यास उच्च रक्तचाप के रोगी के लिये एक वरदान से कम नहीं है।

विधि – शवासन के लिये जमीन पर पीठ के बल लेट जाएं। दोनों हथेलियों को ऊपर की तरफ करें, पांव की दोनों एड़ियां आपस में मिली हुई हों और पंजे खुले हुए हों। तत्पश्चात सारे शरीर को ढीला छोड़ दें अर्थात सर्वप्रथम पैरों के अंगूठों को ढीला करने की क्रिया आरम्भ करें तथा क्रमशः पांव, हाथ, पिंडली, घुटना, छाती, शरीर की सभी मांसपेशियों को ढीला करते जाएं। ध्यान रहे कि शरीर का कोई भी छोटे से छोटा अंग प्रत्यंग कड़ा न रहने पाये। आंखें बन्द कर समस्त शरीर को ढीला कर दें। इस समय बहुत धीरे-धीरे सांस सहज भाव से लें। सोचना बन्द कर दें और मस्तिष्क विचारों से खाली कर दें। इस शिथिलीकरण की क्रिया का नाम शवासन है जो दिखने में तो आसान लगता है, परन्तु सही ढंग से इसका अभ्यास उतना आसान नहीं है। इससे पांच मिनट में ही शान्ति और ताजगी मिलती है, शरीर तनाव रहित होता है, और रक्तचाप कम हो जाता है। कोई कितना भी कोई थका हुआ हो दस मिनट शवासन करने से शीघ्र ही उसकी शारीरिक और मानसिक थकान दूर हो जाती है।

बाएं स्वर का प्रयोग –

यदि कोई व्यक्ति बायां स्वर अर्थात बाएं नासिका छिद्र से सांस लगातार आधा घण्टा चलाए तो उच्च रक्तचाप कम हो जाता है। अभ्यास से इच्छानुसार स्वर बदला जा सकता है। कुछ देर दांयी करवट हाथ का तकिया बनाकर सिर के नीचे रखकर लेटने से बायां स्वर चलने लगता है। इच्छानुसार स्वर बदलने का एक सहज उपाय यह है कि जिस नासिका छिद्र से स्वर चलाना है उसके दूसरी तरफ के नासिका छिद्र में रुई ठूंस दें। कुरसी पर बैठे हैं तो एक तरफ जोर देने या झुकने मात्र से, और यदि खड़े हैं तो एक पैर की एड़ी ऊंची करके दूसरे पैर पर जोर देने से, जिस तरफ जोर पड़ता है उसके दूसरी तरफ की नासिका छिद्र का स्वर चलने लगता है।

निम्न रक्तचाप –

निम्न रक्तचाप या हृदय दुर्बलता के कारण मूर्छित हो जाने पर हरे आंवलों का रस और शहद बराबर-बराबर दो-दो चम्मच मिलाकर चटाने से होश आ जाता है और हृदय की कमजोरी दूर हो जाती है। निम्न रक्तचाप में बादाम का सेवन बड़ा उपयोगी है। नित्य 9 बादाम गिरी रात को पानी में भिगोकर प्रातः खूब बारीक पीसकर दूध के साथ प्रयोग करने से निम्न रक्तचाप कुछ ही दिनों में सामान्य हो जाता है और दिल को भी ताकत मिलती है। निम्न रक्तचाप में तात्कालिक लाभ के लिए बोलना बन्द कर दें। चुपचाप बायीं करवट लेकर लेट जाएं, नींद आने से ठीक हो जायेगा।

मैं समय हूं

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय के ये सभी रूप यहां प्रस्तुत हैं, जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति या अवनति के कारण होते हैं तथा जिन्हें जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। नीचे दी गई सारणी में समय को तीन रूपों में प्रस्तुत किया गया है – श्रेष्ठ, मध्यम और निम्न। जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत 99.9% आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

यदि किसी कारणवश आप श्रेष्ठ समय का उपयोग नहीं कर सकें, तो मध्यम समय का प्रयोग कर सकते हैं। इस काल में भी कार्य पूर्ण होता है और प्रतिशत होता है 75% अर्थात् कार्य पूर्ण होने में विलम्ब होता है, किन्तु सफलता मिलती है।

निम्न समय का उपयोग तो सदा से निषिद्ध है, क्योंकि यदि बनते हुए कार्य का प्रारम्भ मूल वश भी निम्न समय में हो जाय, तो वह बिगड़ जाता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए, कि निम्न समय में किसी भी प्रकार के कार्य का प्रारम्भ न करे।

* *विशेष दिनांक 18 जून तक के लिए समय का निर्धारण पिछले अंक में दिया जा चुका है।* (संदर्भ: जुलाई अंक, पेज 62)

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय	मध्यम समय	निकृष्ट समय
रविवार (16, 23, 30 जुलाई 6, 13 अगस्त)	ब्रह्ममुहूर्त 5.12 से 6.24 तक दोपहर 11.36 से 2.48 तक दोपहर 3.36 से 4.24 तक सायं 6.48 से 10.00 तक रात्रि 12.24 से 2.48 तक	प्रातः 6.24 से 11.36 तक रात्रि 10.00 से 12.24 तक रात्रि 2.48 से 4.24 तक	ब्रह्ममुहूर्त 4.24 से 5.12 तक दोपहर 2.48 से 3.36 तक दोपहर 4.24 से 6.48 तक रात्रि 10.00 से 12.24 तक
सोमवार (17, 24, 31 जुलाई 7, 14 अगस्त)	ब्रह्ममुहूर्त 4.24 से 7.30 तक प्रातः 9.12 से 11.36 तक रात्रि 6.24 से 11.36 तक रात्रि 2.48 से 3.36 तक	प्रातः 9.00 से 9.12 तक दोपहर 11.36 से 6.24 तक रात्रि 11.36 से 12.24 तक रात्रि 3.36 से 4.24 तक	प्रातः 7.30 से 9.00 तक रात्रि 12.24 से 2.48 तक
मंगलवार (18, 25 जुलाई 1, 8, 15 अगस्त)	दोपहर 10.00 से 11.36 तक सायं 4.30 से 6.00 तक सायं 6.48 से 10.00 तक रात्रि 12.24 से 2.48 तक	ब्रह्ममुहूर्त 4.24 से 6.00 तक प्रातः 7.36 से 10.00 तक दोपहर 1.12 से 3.00 तक रात्रि 10.00 से 12.24 तक रात्रि 2.48 से 4.24 तक	प्रातः 6.00 से 7.36 तक दोपहर 11.36 से 1.12 तक दोपहर 3.00 से 4.30 तक सायं 6.00 से 6.48 तक
बुधवार (19, 26 जुलाई 2, 9 अगस्त)	ब्रह्ममुहूर्त 5.12 से 6.00 तक प्रातः 6.48 से 10.00 तक दोपहर 2.48 से 5.12 तक सायं 7.36 से 9.12 तक रात्रि 12.24 से 2.48 तक	ब्रह्ममुहूर्त 4.24 से 5.12 तक दोपहर 10.00 से 12.00 तक दोपहर 1.30 से 2.48 तक सायं 6.00 से 7.36 तक रात्रि 9.12 से 12.24 तक	प्रातः 6.00 से 6.48 तक दोपहर 12.00 से 1.30 तक सायं 5.12 से 6.00 तक रात्रि 2.48 से 4.24 तक
गुरुवार (20, 27 जुलाई 3, 10 अगस्त)	प्रातः 6.00 से 7.36 तक दोपहर 10.00 से 11.36 तक सायं 4.24 से 6.00 तक रात्रि 9.12 से 11.36 तक रात्रि 2.00 से 4.24 तक	प्रातः 7.36 से 10.00 तक दोपहर 1.12 से 1.30 तक सायं 6.00 से 9.12 तक रात्रि 11.36 से 2.00 तक	ब्रह्ममुहूर्त 4.24 से 6.00 तक दोपहर 11.36 से 1.12 तक दोपहर 1.30 से 4.24 तक
शुक्रवार (21, 28 जुलाई 4, 11 अगस्त)	प्रातः 6.00 से 7.48 तक प्रातः 7.36 से 10.00 तक दोपहर 12.24 से 3.36 तक सायं 7.36 से 9.12 तक रात्रि 10.48 से 11.36 तक रात्रि 1.12 से 2.48 तक	ब्रह्ममुहूर्त 4.24 से 6.00 तक प्रातः 6.48 से 7.36 तक दोपहर 10.00 से 12.24 तक सायं 4.24 से 7.36 तक रात्रि 11.36 से 1.12 तक	दोपहर 10.30 से 12.00 तक दोपहर 3.36 से 4.24 तक रात्रि 9.12 से 10.48 तक रात्रि 2.48 से 4.24 तक
शनिवार (22, 29 जुलाई 5, 12 अगस्त)	प्रातः 6.00 से 6.48 तक दोपहर 10.30 से 12.24 तक रात्रि 8.24 से 10.48 तक रात्रि 2.48 से 3.36 तक	दोपहर 12.24 से 4.24 तक सायं 6.48 से 8.24 तक रात्रि 3.36 से 4.24 तक	ब्रह्ममुहूर्त 4.24 से 6.00 तक प्रातः 6.48 से 10.30 तक सायं 4.24 से 6.48 तक रात्रि 10.48 से 2.48 तक

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

यह हमने नहीं वराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है, कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं।

प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्द युक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

15 जुलाई **पंचमुखी रुद्राक्ष** का पूजन कर ही बाहर निकलें।

16 जुलाई प्रातः काल ही सर्वप्रथम उठकर देवदर्शन या इष्टदर्शन कर अपना दिन आरम्भ करें।

17 जुलाई भगवती बगलामुखी के बीज मंत्र का तीन बार जप कर घर से बाहर जायें। मंत्र– **'ह्लीं'**।

18 जुलाई प्रातः घर से निकलते समय जेब में **'ईगुल'** रख लीजिये दिन भर के अधिकांश कार्यों में सफलता मिलेगी। (न्यौछावर ६०/-)

19 जुलाई घर से बाहर निकलते समय पांच काली मिर्च सिर पर से घुमाकर दक्षिण दिशा में फेंक दें।

20 जुलाई आज गणेश चतुर्थी है, भगवान गणेश को प्रातः काल दुर्वा चढ़ाएं एवं लड्डू का भोग लगाएं।

21 जुलाई गुरु जन्म दिवस के रूप में प्रातः **'निखिलेश्वरानन्द स्तवन'** का पूर्ण पाठ करें, दिवस पर्यन्त गुरु चिन्तन करें। सामर्थ्यानुसार गुरु सेवा करने का संकल्प लें।

22 जुलाई प्रातः काल जब आप उठें, तो जमीन पर पांव रखने से पूर्व निम्न श्लोक का तीन बार उच्चारण करें –

हेतवे जगतामेव संसारार्णव सेतवे ।
प्रभवे सर्वविद्यानां शम्भवे गुरवे नमः ॥

23 जुलाई तुलसी के दो पत्तों को ग्रहण कर घर से बाहर जायें।

24 जुलाई **'मधुरुपेण रुद्राक्ष'** (न्यौछावर १००/-)को जल से स्नान कराकर, कुंकुम, अक्षत से पूजन करके ही कार्य हेतु जाएं।

25 जुलाई आज मंगला गौरी व्रत दिवस है आज गौरी की मूर्ति को पंचामृत से स्नान कराके प्रसाद चढ़ाएं।

26 जुलाई काली सरसों के कुछ दाने जमीन पर रखकर अपना दाहिना पैर उस पर रखते हुए घर से बाहर निकलें।

27 जुलाई आज कामदा एकादशी है, इस दिन आप भगवान विष्णु को नैवेद्य चढ़ाकर, घी का दीपक जलाकर घर से बाहर जाएं।

28 जुलाई प्रातः काल उठते ही सबसे पहले अपने हाथ की रेखाओं को देखें, फिर मन ही मन अपने इष्ट का ध्यान करें।

29 जुलाई आज प्रदोष व्रत है, आज आप भगवान से प्रार्थना करते हुए **पंच मुखी रुद्राक्ष** भगवान शिव की मूर्ति पर अर्पित करें।

30 जुलाई एक मुट्ठी चावल अपने सिर पर से तीन बार घुमाकर किसी को दान में दे देवें।

31 जुलाई आज सोमवती अमावस है आज के दिन आप सरसों का तेल तथा काले तिल दान में दें, आने वाली विपदायें समाप्त होंगी।

1 अगस्त **गौरी शंकर रुद्राक्ष** को धारण कर कार्य हेतु बाहर जाएं।

2 अगस्त प्रातः काल **निखिलेश्वरानन्द स्तवन** के पांच श्लोक का पाठ कर ही घर से बाहर जायें।

3 अगस्त प्रातः काल रोटी पर गुड़ रख कर उसे किसी दान लेने वाले को दान कर दें या गाय को खिला दें।

4 अगस्त आज नाग पंचमी है, आज नाग का पूजन कर उसे दूध पिलाएं तथा शिव पार्वती पर बिल्वपत्र चढ़ाते हुए निम्न मंत्र का पांच मिनट जप करें – **ॐ नमः शिवाय** ।

5 अगस्त प्रातः काल **'ह्लीं'** मंत्र का जप १५ मिनट तक करें।

6 अगस्त इस दिन अपने वस्त्रों में सफेद रंग की प्रधानता रखें, आपका दिन शुभ होगा।

7 अगस्त केशर का तिलक लगाकर कार्य हेतु प्रस्थान करें।

8 अगस्त प्रातः काल सरसों के तेल का दीपक हनुमान विग्रह के समक्ष लगा दें।

9 अगस्त प्रातः काल भगवान सूर्य को अर्घ्य प्रदान कर अपना दिवस आरम्भ करें।

10 अगस्त प्रातः सिर धोकर चावल या अक्षत के ग्यारह दाने **'गं'** बीज मंत्र का उच्चारण करते हुए गणपति चित्र पर अर्पित करें।

11 अगस्त दूध से बने खाद्य पदार्थ का सेवन कर कार्य हेतु प्रस्थान करें।

12 अगस्त प्रातः बिस्तर से उठते समय जिस ओर का श्वास चल रहा हो, उसी पैर को सबसे पहले भूमि पर रखें।

13 अगस्त प्रत्येक शुभ कार्य करने से पूर्व दही खाकर कार्य आरम्भ करें।

14 अगस्त भगवान विष्णु का ध्यान कर उनके चित्र के समक्ष प्रार्थना करके ही कार्य हेतु जाएं।

अरक्षितेन सुरक्षितश्च

जीवन के सभी पक्ष इस प्रयोग से सुरक्षित हो सकता है।

यमराज की दाढ़ों को उखाड़ने वाला और भयंकर तूफान से टक्कर लेने वाला

रक्षेश्वर प्रयोग

यदि आप सामान्य जीवन व्यक्तित्व, कमजोर वाक्शक्ति, आत्मविश्वास की कमी, आलस्य, शारीरिक कमजोरी, कमजोर स्मरण शक्ति को समाप्त करना चाहते हैं, तो सर्वथा उपयोगी है यह अदभुत प्रयोग !

प्रत्येक व्यक्ति का चिंतन यही होता है, कि वह किसी न किसी प्रकार से जीवन में अपने इच्छित क्षेत्र में सफलता के सर्वोच्च शिखर को प्राप्त कर सके, परन्तु यह भी सत्य है, कि बिरला ही कोई ऐसा व्यक्ति होता है, जो अपने जीवन में अपने अभीष्ट लक्ष्य तक पहुंच पाता है।

ऐसा क्यों है? क्यों व्यक्ति चाहते हुए भी अपनी इच्छा से जीवन नहीं जी पाता और उसका निर्माण अभिलाषित ढंग से नहीं कर पाता? ऐसा क्यों है, कि वह बार-बार असफल हो जाता है?

भर्तृहरि ने किसी भी व्यक्ति को जीवन में सफल होने के लिए निम्न बिन्दुओं को आवश्यक बताया है —

१. उसका व्यक्तित्व आकर्षक एवं सबको लुभाने वाला होना चाहिए।

२. वह श्रेष्ठ वाक् शक्ति से युक्त हो, सामने वाले को हर तरह से आश्वस्त करने का गुण उसमें होना चाहिए एवं वह आत्म विश्वास से भरपूर हो।

३. उसमें अद्भुत जीवट शक्ति हो, २०-२० घंटे काम करने तक की क्षमता हो तथा वह आलस्य, प्रमाद, द्वेष आदि से रहित हो।

४. उसकी मेधा शक्ति अनिर्वचनीय हो, जो बात वह एक बार सुन ले, उसे कभी विस्मृत न करे और समस्त प्रकार का ज्ञान उसके अन्दर समाहित हो।

५. उसकी पूर्वाभास शक्ति पूर्ण रूप से विकसित हो, जिससे वह पहले से ही आकलन कर सके, कि आने वाले समय में क्या घटनाएं घटित होंगी, जिससे वह उसी के अनुसार अपने सारे कार्यों को क्रियान्वित करे।

सही ही तो है, सामान्य व्यक्तित्व, कमजोर वाक् शक्ति, आत्म विश्वास की कमी, आलस्य, कमजोर स्मरण शक्ति एवं पूर्वाभास की कमी ही तो वे कुछ बंधन हैं, जो व्यक्ति को अपने पाश में जकड़े रहते हैं और वह सफलता प्राप्त करने के लिए हाथ पैर मारते हुए भी असफल ही रहता है।

ये सारे ही उपरोक्त गुण, जो भर्तृहरि ने कहे हैं, व्यक्ति

के जीवन में पग-पग पर सहायक होते हैं। साक्षात्कार आदि में, जहां व्यक्तित्व का आकलन होता है, उसका आत्म विश्वास, उसका बात करने का तरीका और दूसरों को प्रभावित करने का ढंग देखा जाता है, वहीं साथ ही साथ इस बात का अंदाजा भी लगाया जाता है, कि सामने वाला व्यक्ति किस-किस क्षेत्र में पारंगत है और नवीनतम जानकारियों से वाकिफ है या नहीं। यदि व्यक्ति की मेधा शक्ति उन्नत हो, तो यह सब कितना आसान हो सकता है . . .

व्यापार के क्षेत्र में भी व्यक्ति को बाजार सम्बन्धी सभी नवीनतम जानकारियां होनी चाहिएं, दूसरों को आश्वस्त कर अपना कार्य बनाने की कला और वाक् चातुर्य के साथ-साथ उसका व्यक्तित्व भी प्रभावशाली होना आवश्यक है। कई लोग साक्षात्कार या व्यापारिक वार्ताओं के दौरान हकलाने लग जाते हैं, नर्वस हो जाते हैं और हाथ में आई सफलता खो देते हैं।

यदि व्यक्ति में पूर्वाभास शक्ति हो, तो वह जीवन के किसी भी क्षेत्र में मात नहीं खा सकता, वह पहले से ही भांप लेता है, कि अमुक साझेदारी उसके लिए उपयोगी रहेगी या नहीं, कहीं सामने वाला धोखा तो नहीं देगा, भविष्य में कौन-कौन सी घटनाएं किस-किस प्रकार से घटित हो सकती हैं आदि। यदि व्यक्ति पहले से ही यह जान जाये, तो वह समय रहते ही उपयुक्त कदम कठा कर अभीष्ट सफलता प्राप्त कर सकता है।

राजनीति के क्षेत्र में भी व्यक्ति का प्रभावशाली होना अत्यन्त आवश्यक है, साथ ही स्थिति को तुरंत भांप कर तदनुसार कदम उठाने का गुण उसके अन्दर होना चाहिए। इससे भी बढ़कर उसमें वाक् चातुर्य होना चाहिए, लोगों को प्रभावित करने की अद्भुत क्षमता उसके अन्दर होनी चाहिए और उसे प्रबल आत्म विश्वासी होना चाहिए। यदि इनमें से किसी एक की भी कमी होती है, तो व्यक्ति श्रेष्ठ राजनीतिज्ञ नहीं बन सकता और वह प्रायः असफल ही देखा जाता है।

फिल्म जगत, कला, संगीत आदि क्षेत्रों में ही इन्हीं गुणों का समावेश व्यक्ति को शीर्षस्थ स्थान पर पहुंचाने के लिए सहायक हो पाता है, अन्यथा वह एक सामान्य जीवन जीने के लिए बाध्य हो अपनी किस्मत को ही कोसता रह जाता है।

इसके अलावा व्यक्ति में इतनी अधिक जीवट शक्ति होनी चाहिए, कि वह अधिक से अधिक श्रम कर अपनी उन्नति के मार्ग को प्रशस्त कर सके और जीवन में स्थायी सफलता प्राप्त कर सके। धन, वैभव, लक्ष्मी आदि केवल पुरुषार्थ एवं परिश्रम से ही प्राप्त की जा सकती है।

और यह आप स्वयं भी प्राप्त कर सकते हैं, . . . हो सकता है, कि आप में आत्म विश्वास की कमी हो, आपकी वाक् शक्ति या मेधा शक्ति कमजोर हो, आपका व्यक्तित्व आकर्षणहीन हो, आप में जीवट शक्ति की कमी हो तो आप स्थिति को सही तरीके से नहीं भांप सकते . . . और इन बंधनों की वजह से आपको असफलता ही प्राप्त होती रहती है . . . परन्तु इसके लिए आपको हताश होने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि जन्म से ही कोई व्यक्ति महान नहीं होता, जन्म से ही कोई युग पुरुष नहीं होता। यह तो एक सतत प्रक्रिया है, जिसमें एक खुरदरा, तेजहीन पदार्थ आग में तप कर स्वर्ण बन जाता है।

विंस्टन चर्चिल २५ साल की उम्र तक अत्यन्त ही सामान्य व्यक्ति थे, उनमें आत्म विश्वास की कमी थी, वाक् शक्ति भी न्यून थी, परन्तु आज इतिहास में उनका नाम सर्वश्रेष्ठ स्टेट्समैन के रूप में अंकित है।

जार्ज वाशिंगटन बचपन में हकलाते थे और इस कारण अत्यधिक शर्मीले थे, परन्तु अपनी लगन और दृढ़ निश्चय से वे अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति बन सके और अपना नाम अमर कर सके।

महात्मा गांधी देखने में अत्यन्त सामान्य, मात्र ४८ किलो के अनाकर्षक व्यक्ति थे, परन्तु उनकी अद्भुत जीवट शक्ति तथा बौद्धिक क्षमता के फलस्वरूप आज उन्हें सम्मान से राष्ट्रपिता के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

ऐसे कितने ही नाम उदाहरण स्वरूप लिये जा सकते हैं। इसलिए यह निश्चित है, कि युग पुरुष पैदा नहीं होते, अपितु बनते हैं, और आप यदि चाहें तो स्वयं को ही इस स्थिति तक ले जा सकते हैं और हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

अब प्रश्न उठता है, कि ऐसी सफलता किस प्रकार से प्राप्त की जा सकती है?

भर्तृहरि का जीवन प्रारम्भ में अत्यन्त ही भौतिकता और विलासिता पूर्ण था, परन्तु बाद में नाथ परम्परा में दीक्षित हो कर वे अत्यन्त उच्चकोटि के योगी भी बने। उन्होंने ही आगे कहा है, कि यदि व्यक्ति में ये गुण नहीं हैं, तो वह हताश न हो, क्योंकि सभी गुण मात्र एक ही साधना की तेजस्विता के

माध्यम से सहजता से प्राप्त किये जा सकते हैं . . . और यह साधना है – रक्षेश्वर प्रयोग। यह प्रयोग, जो व्यक्ति की कमियों के बंधनों को काट कर उसमें अद्वितीय चेतना, तेजस्विता एवं नवीन व्यक्तित्व का समावेश कर देता है, जिससे वह आसानी से किसी भी क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त कर मान, सम्मान, यश, वैभव, धन, लक्ष्मी आदि का अधिकारी हो जाता है।

यह साधना नाथ परम्परा की एक अद्वितीय साधना पद्धति है, अतः उन्नति की आकांक्षा रखने वाले व्यक्ति को यह साधना सम्पन्न करनी ही चाहिए।

साधना विधान

इस प्रयोग को रक्षा बंधन (१५ अगस्त) के दिन ही सम्पन्न करने का विधान बताया गया है, किसी कारणवश ऐसा सम्भव न होने पर किसी भी सोमवार से प्रारम्भ किया जा सकता है।

यह प्रातः कालीन साधना है और उसमें **रक्षेश्वर यंत्र** एवं **रक्षेश्वर माला** की आवश्यकता होती है।

साधक ब्रह्म मुहूर्त में उठ कर स्नान आदि नित्य कर्म से निवृत्त हो कर शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण कर, पूर्वाभिमुख हो श्वेत आसन ग्रहण करे।

अपने सामने बाजोट पर श्वेत वस्त्र बिछाकर उस पर **रक्षेश्वर यंत्र** एवं गुरु चित्र को स्थापित कर उनका पंचोपचार पूजन करें।

गुरु चित्र पर एक रक्षा सूत्र अर्पित करें, जिसका अर्थ है, कि हे गुरुदेव! आप मेरी रक्षा का भार अपने ऊपर लेकर मुझको अभय प्रदान करें और जीवन की समस्त बाधाओं, शत्रुओं, रोग आदि से मेरी रक्षा करें।

फिर दूसरा रक्षा सूत्र रक्षेश्वर यंत्र पर अर्पित करें, जिससे कि आपके न्यूनता रूपी बंधन समाप्त हो सकें और आप तीव्रता से सफलता की ओर अग्रसर हो सकें।

इसके उपरान्त रक्षेश्वर माला से निम्न मंत्र का ५ माला मंत्र ११ दिन तक प्रातः मंत्र जप करें –

मंत्र

॥ ॐ ह्रीं क्लीं सर्व गुण प्राप्त्यर्थं गुं ॐ ॥

यह अद्भुत तेजस्विता युक्त मंत्र है और इस मंत्र का जप करने पर इसमें निहित क्लीं बीज सभी दोषों, न्यूनताओं का विध्वंस कर व्यक्ति में तेजस्विता स्थापित करता है, ऐं बीज उसे वाक् चतुरता, मेधा शक्ति एवं पूर्वाभास शक्ति से परिपूर्ण करता है, ह्रीं बीज उसको आकर्षक एवं मनोहर व्यक्तित्व के साथ अद्भुत जीवट शक्ति देने में सहायक होता है तथा गुं बीज सम्पूर्ण रूप से गुरु कृपा व आशीर्वाद प्राप्त कराने में सहायक होता है।

इतने अद्वितीय मंत्र को प्राप्त कर यदि व्यक्ति साधना न सम्पन्न कर सके, तो यह उसका दुर्भाग्य ही कहा जा जायेगा।

साधना समाप्ति के उपरान्त यंत्र एवं माला को किसी नदी, तालाब या जलाशय में विसर्जित कर दें। ऐसा करने पर यह साधना पूर्ण होती है।

इस साधना को सम्पन्न करने के बाद कुछ ही दिनों में व्यक्ति स्वयं में होने वाले परिवर्तनों को अनुभव करने लगता है, उसमें ऊपर वर्णित गुणों का स्वतः ही विकास होने लगता है और वह सबका प्रिय हो कर तीव्रता के साथ अपने इच्छित क्षेत्र में उच्चतम स्थिति प्राप्त करने हेतु अग्रसर होने लगता है।

साधना सामग्री पैकेट – 300/-

जीवन को सर्वोच्च शिखर पर पहुंचाने वाले ये सूत्र 'जो सोने के अक्षरो से लिखे हुए हैं।'

कुछ लोगों के हौसले इतने बुलंद होते हैं, कि उनके समक्ष पहाड़ जैसा लक्ष्य भी एक लघु रूप धारण कर लेता है और इसके विपरीत कुछ लोगों के अत्यधिक प्रतिभावन होने पर भी उनके जीवन में एक छोटे से पत्थर के समान लक्ष्य भी पहाड़ दिखाई देता है। कभी सोचा है, कि ऐसा क्यों होता है? आखिर ऐसी विशेषता है उनमें?

इसका उत्तर है, कि सफल होने वाले व्यक्तियों ने अपने जीवन में तीन सूत्रों को अपनाया – संकल्प, दिशा तथा समर्पण।

संकल्प – यदि व्यक्ति में संकल्प शक्ति है, कि मुझे यह कार्य करना ही है और वह उसे चुनौती समझ ले, जिसमें उसे जीतना ही है, तो प्रत्येक कार्य स्वतः ही पूर्ण हो ही जायेगा।

दिशा – यदि व्यक्ति को अपने लक्ष्य का ज्ञान हो और वह निश्चय कर ले, कि उसे कार्य तो करना है, लेकिन भटक कर नहीं, अपितु लक्ष्य को सदैव अपनी आंखों के सामने रखता है और इसी तथ्य को ध्यान में रखकर वह अपनी दिशा निर्धारित करे, तो लक्ष्य की प्राप्ति होती ही है।

समर्पण – यदि व्यक्ति को समर्पित होने की कला का ज्ञान हो और ऐसा जान कर वह अपने संकल्प के प्रति सचेष्ट हो, तो कोई भी मुसीबत, कोई भी बाधा उसे डिगा नहीं सकती, उसे उसके रास्ते से अलग नहीं कर सकती।

और जब व्यक्ति इन तीनों सूत्रों को अपने जीवन में समाहित कर लेता है, तो निश्चय ही वह आकाश में भी छेद कर देने की क्षमता रखता है, उसके शब्द कोश में असम्भव जैसा कोई शब्द नहीं होता।

आप एक बार इन सूत्रों को जीवन में अपना कर तो देखिये।

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

सूर्याराधनमात्रेण आरोग्यं मूलमुत्तमम्

सूर्य की आराधना से ही आरोग्य की प्राप्ति होती है।

नवस्फूर्ति, नव चेतना नवजीवन प्राप्ति के लिए

सूर्य नमस्कार

प्राचीन काल से हमारे मनीषी ऋषियों ने विश्वव्यापी प्राण ऊर्जा को स्वयं में समाहित करने के लिए सूर्य नमस्कार पद्धति का सहज निरुपण किया, जिसके अभ्यास से सूर्य वन्दना को व्यवहारिक रूप देकर शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक जगत के उन आयामों को प्राप्त किया जा सके, जो मानव जीवन की पवित्रता, दिव्यता, श्रेष्ठता और पूर्णता के लिए आवश्यक हैं। आप स्वयं अनुभव करें, कि यह आपके लिए कितना उपयोगी है और आरम्भ कर दें इसका अभ्यास . . . नवस्फूर्ति नवचेतना की प्राप्ति के लिए . . .

सूर्य नमस्कार का शाब्दिक अर्थ है सूर्य की उपासना करना। यह सूर्य से सीधे व सरल रूप से प्राण ऊर्जा प्राप्त करने की प्रामाणिक विधा है, जिसके अभ्यास से मानवीय प्रकृति का कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं रह जाता। यह एक ऐसी यौगिक प्रक्रिया है, जो सभी प्रमुख आसनों, प्राणायाम और ध्यान के लाभ स्वयं में संजोये हुए है, जिसके वरदान स्वरूप जहां एक ओर भौतिक शरीर स्वस्थ होता है, सूक्ष्म शरीर के कमल चक्रों का प्रस्फुटन होने लगता है तथा पूरा शरीर एक विशेष सांचे में ढल जाता है, वही दूसरी ओर कुण्डलिनी जागरण की प्रक्रिया भी आरम्भ हो जाती है। इस प्रकार सूर्य नमस्कार खोई हुई शक्ति वापस लाकर नवस्फूर्ति, नवजीवन प्रदान करता है और शरीर के सभी संस्थानों पर इसका चमत्कारिक प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

सूर्य नमस्कार के आधारभूत तत्व

सूर्य नमस्कार के तीन आधारभूत तत्व हैं, जिनमें – पहला है शरीर विन्यास, जो बारह महीनों के सांकेतिक चिन्हों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

दूसरा है शारीरिक गति के साथ सम्पन्न की जाने वाली श्वास प्रक्रिया है।

तीसरा है प्रत्येक विशिष्ट शरीर विन्यास के साथ मानसिक मंत्रोच्चारण करते हुए एकाग्रता एवं जागरूकता।

सूर्य नमस्कार के लिए आवश्यक निर्देश

सर्वप्रथम साधक को सूर्य नमस्कार के अभ्यास के अन्तर्गत आने वाले शारीरिक विन्यास का ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिए तथा उस स्थिति में श्वास का योग किस प्रकार करना है, यह मानस में स्पष्ट होना चाहिए, प्रारम्भ में यह क्रिया कठिन मालूम हो सकती है, परन्तु अभ्यास के उपरान्त प्रत्येक शारीरिक स्थिति के अनुरूप श्वास क्रिया प्राकृतिक रूप से सम्पन्न होने लगती है। श्वास क्रिया का मूल सिद्धान्त यह है, कि जब आप पीछे की ओर मुड़ते हैं, तो फेफड़े फैल जाते हैं, ऐसी स्थिति में पूरक क्रिया द्वारा सांस अन्दर भरी जाती है। इसके विपरीत जब सामने की ओर झुकते हैं, तो फेफड़ों का संकुचन होता है, जिसके फलस्वरूप सांस बाहर निकलती है। केवल छठी स्थिति में बाह्यकुम्भक लगाया जाता है अर्थात क्रिया के बाद सांस को बाहर रोका जाता है। ये सारी स्थितियां सामर्थ्यानुसार सम्पन्न की जाती हैं।

सूर्य नमस्कार की बारह स्थितियों अर्थात बारह आसनों पर श्वास क्रिया सहित दक्षता प्राप्त हो जाने पर उनके साथ सूर्य के बारह मंत्रों को संयुक्त करना चाहिए, मंत्रों का जप प्रत्येक आसन के साथ मानसिक रूप से हो। इसके बाद अभ्यास की अंतिम सीढी पर पहुंच कर प्रत्येक अभ्यासी को विशिष्ट एकाग्रता बिन्दु का ज्ञान आवश्यक है। सूर्य नमस्कार अभ्यास के उपरान्त शिथिलीकरण क्रिया या शवासन अनिवार्य

है, जो कि इस प्रक्रिया का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण अंग है, क्योंकि इससे शरीर का तनाव दूर होकर नई शक्ति प्राप्त होती है, मन पूर्णतायुक्त, तनावरहित एवं शान्त हो जाता है।

उपयुक्त समय एवं स्थान

सूर्योदय के समय वातावरण में अपूर्व शांति रहती है, यह समय सूर्य नमस्कार के लिए उत्तम माना गया है। शरीर के अन्दर जीवन तत्व के निर्माण में अल्ट्रावायलेट किरणों का विशेष महत्व है। नित्य क्रियाओं के उपरान्त स्नान कर खुली हवा में अभ्यास करना उत्तम होता है। किन्हीं विशेष परिस्थितियों में सन्ध्याकाल में रात्रि भोजन के पूर्व भी अभ्यास किया जा सकता है।

आवृत्ति संख्या

प्रारम्भिक अभ्यासी के लिए तीन आवृतियां पर्याप्त हैं, बहुत अधिक थकावट महसूस होने पर अभ्यास रोक देना चाहिए। अभ्यास की गति धीमी रखनी चाहिए, धीरे-धीरे आवृतियों की संख्या बढ़ाकर बारह की जा सकती है, उच्च अभ्यासी इच्छानुसार २४ से ५२ आवृत्तियों तक अभ्यास कर सकता है, अभ्यास की आवृत्ति संख्या धीरे-धीरे बढ़ाते रहना चाहिए।

सूर्य नमस्कार प्रक्रिया

१. प्रणामासन

सूर्य की ओर मुंह करके खड़े हो जाइये, दोनों पैर मिले हों, हाथों को जोड़कर प्रार्थना की स्थिति में छाती के सामने रखिये। कुछ क्षणों के लिए आंखों को बन्द कीजिये, मानसिक स्थिरता एवं शांति का अनुभव करते हुए शरीर एवं मन को पूर्णतः शिथिल कीजिये। धीरे-धीरे सांस बाहर निकालते हुए फेफड़ों की समस्त वायु बाहर निकाल कर रेचन कीजिए। **'ॐ मित्राय नमः'** मंत्र से अपने सर्वश्रेष्ठ मित्र सूर्य के प्रति जागरुक होइए, अनाहत चक्र पर ध्यान केन्द्रित कीजिये। बीज मंत्र – **'ॐ ह्रां'**।

२. हस्तउत्तनासन

प्रत्येक गतिविधि के प्रति जागरुकता रखते हुए दोनों हाथों को ऊपर उठाइये और पीछे झुकिये, हाथ एवं पीठ इस स्थिति में तने हुए रहें, सिर भी पीछे झुका हुआ हो, हथेलियां ऊपर की ओर खुली हों। हाथों को ऊपर उठाते हुए सांस फेफड़ों में भरिये अर्थात लम्बा पूरक करिए **'ॐ रवये नमः'** मंत्र से अपने शरीर को प्रकाश पुंज की ओर प्रसारित करते हुए विशुद्ध चक्र पर ध्यान केन्द्रित करिये। बीज मंत्र – **'ॐ ह्रीं'**।

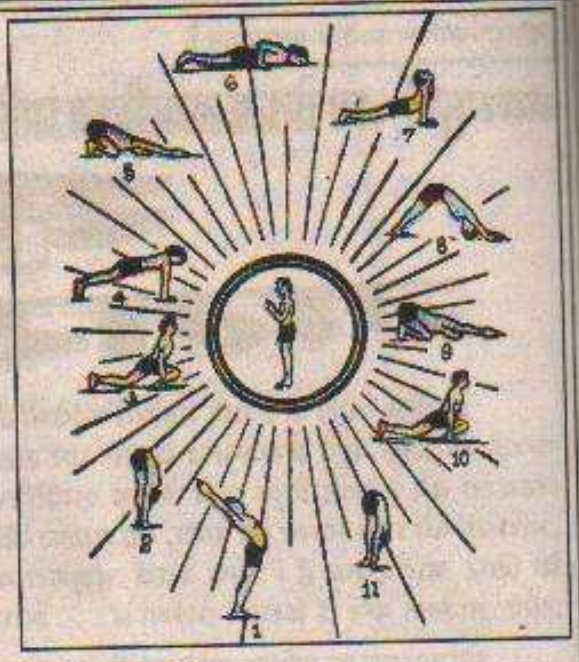

३. पादहस्तासन

दोनों हाथों को नीचे ले जाते हुए कमर प्रदेश से सामने की ओर झुकिये – पैर और हाथ एकदम तने हुए रहें, हथेलियों को सीधे जमीन पर टिकाने का प्रयत्न कीजिये, सिर को अन्दर की ओर झुकाते हुए नासिका से घुटनों को छूने का प्रयास कीजिये। नियमित अभ्यास से यह आसन शरीर में लचीलापन ला देता है एवं अभ्यास सरल हो जाता है। सामने की ओर झुकते समय सांस पूरी तरह बाहर निकालनी चाहिए, पेट जितना हो सके भीतर की ओर दबाना चाहिए और **'ॐ सूर्याय नमः'** मंत्र से क्रियाशील सूर्य भगवान का ध्यान स्वाधिष्ठान चक्र में करना चाहिए। बीज मंत्र – **'ॐ ह्रूं'**।

४. अश्वसंचालनासन

चौथी स्थिति में दाहिने पैर को पीछे पूर्ण रूप से फैलाइये। बांया पैर एवं दोनों हाथों की स्थिति पूर्ववत रहे, दाहिने पैर का टखना एवं घुटना भूमि को स्पर्श करे। सिर को ऊपर उठा कर मेरुदण्ड को मोड़ते हुए अर्धवृत्ताकार अवस्था में लाने का प्रयास करें। दोनों तने हुए हाथों पर शरीर का पूरा भार रहे, इस अवस्था में मुंह ऊपर उठा कर गर्दन और पीठ की अवस्था घोड़े की नाल के समान बनायें। सिर को ऊपर उठाकर **'ॐ भानवे नमः'** मंत्र द्वारा अखिल ब्रह्माण्ड के गुण हमें सदा क्रियाशील रहने की शक्ति दें – ऐसी प्रार्थना करते हुए आज्ञा चक्र में ध्यान केन्द्रित करें। बीज मंत्र – **'ॐ ह्रैं'**।

५. पर्वतासन

हाथों एवं दाहिने पैर को पूर्व स्थिति में रखते हुए पांचवी स्थिति में सिर को झुकाएं तथा बायें पैर को पीछे सीधा लेकर दाहिने पैर के बाजू में रखें, दोनों पैरों की स्थिति समान रहे। नितम्ब प्रदेश को ऊपर उठायें, सिर को दोनों हाथों के बीच नीचे रखें, शरीर की अवस्था लम्बवत हो जाएगी, नाभि की ओर दृष्टि रखें, दोनों एड़ियों को जमीन पर स्थिर रखने का प्रयास करें और पेट को अन्दर दबाते हुए सारी वायु तीव्र गति से बाहर निकाल दें। अपनी शारीरिक एवं मानसिक प्रगति के लिए सूर्य भगवान से '**ॐ खगाय नमः**' कहकर विशुद्ध चक्र में ध्यान केन्द्रित करें। बीज मंत्र – '**ॐ ह्रीं**'।

६. अष्टांगासन

हाथों एवं पैरों को पूर्व अवस्था में रखते हुए दोनों घुटनों को भूमि पर टिकाइये, हाथों के सहारे छाती एवं ठोड़ी को नीचे कीजिये, नितम्ब व पेट का भाग पृथ्वी से ऊपर उठा रहेगा। इस स्थिति में सांस नहीं ली जाती, वरन बाहर ही सांस को सामर्थ्यानुसार रोक कर रखा जाता है। '**ॐ पूष्णे नमः**' मंत्र से अपने को समस्त शक्ति के स्रोत सूर्य भगवान के चरणों में पूर्णतः समर्पित करें, ध्यान मणिपुर चक्र पर केन्द्रित करें। बीज मंत्र – '**ॐ ह्रं**'।

७. भुजंगासन

हाथों पैरों को उसी स्थिति में रखते हुए सिर को ऊपर की ओर उठाते हुए हाथों को सीधा कीजिये, धड़ वाले भाग को ऊपर उठाकर सिर एवं कमर को पीछे की ओर मोड़ते हुए अर्धवृत्ताकार स्थिति बनाइये। सिर को ऊपर उठाते समय पूरी सांस अन्दर ले कर दीर्घ पूरक करें, '**ॐ हिरण्यगर्भाय नमः**' मंत्र से बीज शक्ति रूपी सूर्य को नमन करते हुए स्वाधिष्ठान चक्र पर ध्यान केन्द्रित करना है। बीज मंत्र – '**ॐ ह्रः**'।

८. पर्वतासन

सिर को नीचे झुकाइये तथा नितम्ब प्रदेश को ऊपर उठाते हुए स्थिति पांच में आ जाइये, इस स्थिति में सांस बाहर निकालते हुए रेचक किया जाता है, '**ॐ मरीचये नमः**' मंत्र से ब्रह्म मुहूर्त के देवता को प्रणाम करते हुए मृगतृष्णा की समाप्ति की प्रार्थना कर ध्यान विशुद्ध चक्र पर केन्द्रित करें। बीज मंत्र – '**ॐ ह्रीं**'।

९. अश्वसंचालनासन

बायें पैर को सामने वापिस ले आयें, उसे दोनों हाथों के मध्य रखते हुए नितम्ब प्रदेश को नीचे लाएं, सिर व रीढ़ की हड्डी को पीछे मोड़ते हुए स्थिति चार की भांति अर्धवृत्ताकार बनायें, दृष्टि आकाश की ओर हो। ऐसा करते समय सांस अन्दर की ओर भरते हुए पूरक करें। '**ॐ आदित्याय नमः**' मंत्र से महाशक्ति को प्रणाम करते हुए आज्ञा चक्र पर ध्यान केन्द्रित करें। बीज मंत्र – '**ॐ ह्रीं**'।

१०. पादहस्तासन

सिर को नीचे कीजिये, दाहिने पैर को सामने लाइये, नितम्ब वाले भाग को उठाते हुए पैरों को सीधा कीजिये, स्थिति तीन की तरह नासिका से घुटनों का स्पर्श करें तथा वायु को बाहर निकालते हुए पूर्ण रेचक करें। '**ॐ सवित्रे नमः**' मंत्र से सूर्य के मातृरूप को कल्याणकारी भाव से विनती करते हुए स्वाधिष्ठान चक्र पर ध्यान केन्द्रित करें। बीज मंत्र – '**ॐ ह्रूं**'।

११. हस्तउत्तानासन

इस स्थिति में धड़ को ऊपर उठायें, हाथों को ऊपर उठाते हुए पीछे की ओर झुकते हुए दूसरी स्थिति में आ जाएं, धड़ को ऊपर उठाते समय सांस अन्दर की ओर लेते हुए पूरक करें, '**ॐ अर्काय नमः**' मंत्र से शक्ति प्रणेता सूर्य को नमस्कार करते हुए ध्यान केन्द्रित करें। बीज मंत्र – '**ॐ ह्रीं**'।

१२. प्रणामासन

प्रथम स्थिति की भांति शरीर को सीधा रखते हुए दोनों हाथों को जोड़कर हृदय के सामने प्रार्थना मुद्रा में नेत्र बन्द करें और सांस बाहर छोड़ते हुए रेचक कर सामान्य अवस्था में आयें। '**ॐ भास्कराय नमः**' मंत्र से सूर्य नारायण को प्रणाम करते हुए अनाहत चक्र पर ध्यान केन्द्रित करें। बीज मंत्र – '**ॐ ह्रां**'।

शवासनः शिथिलीकरण क्रिया

सूर्य नमस्कार के बाद शवासन में यौगिक विधि से चेतना पूर्ण शिथिलीकरण करके सम्पूर्ण शरीर को सजगता के साथ प्राण के ग्रहण योग्य बनाया जाता है। इससे साधक तनाव रहित होकर नवस्फूर्ति अनुभव करता है। इस क्रिया के लिए कम्बल पर सीधे लेटकर पूरा शरीर ढीला छोड़ दें, नेत्र बंद कर लें, शरीर में कोई हलचल न हो। अपनी चेतना को पैरों के पंजों से लेकर क्रमशः सिर तक ले जाकर पूर्ण शिथिलता की भावना देकर तनाव रहित स्थिति का अनुभव करें। शवासन सूर्य नमस्कार के समय का आधा होना चाहिए। इस सूर्य नमस्कार विधि का जीवन में नियमित अभ्यास कर सहस्रार जागरण करते हुए मंगलमय बनें और शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक सभी दृष्टियों से पूर्णता प्राप्त करें।

केनोपनिषद सार

पिछले अंक में ईशवास्योपनिषद के प्रमुख श्लोक और अर्थ भावार्थ दिये गये थे, उसी क्रम में द्वितीय प्रमुख उपनिषद केनोपनिषद पाठकों के लिए प्रस्तुत है।

केनोपनिषद गुरु शिष्य के मध्य एक वार्तालाप है जिसमें शिष्य ब्रह्म तत्व के सम्बन्ध में अपनी जिज्ञासा व्यक्त करता है, इसके साथ ही अन्तः करण की शुद्धि के लिए क्या क्रियाएं की जानी चाहिएं, क्या कर्म करने चाहिए और क्या उपासना विधान है शिष्य अपने गुरु से निरन्तर जिज्ञासात्मक प्रश्न करता है और गुरु उसकी जिज्ञासाओं को शांत करते हुए उसके प्रश्नों का उत्तर देते हैं।

ॐ केनेषितं पतति प्रेषितं मनः केन प्राणः प्रथमः प्रैति युक्तः।
केनेषितां वाचमिमां वदन्ति चक्षुः श्रोत्रं क उ देवो युनक्ति ॥१॥

अर्थ – किसके द्वारा सत्ता स्फूर्ति पाकर, प्रेरित होकर यह मन विषयों में गिरता है, किसके द्वारा नियुक्त होकर सबसे श्रेष्ठ प्राण चलता है, किसके द्वारा क्रियाशील की गई इस वाणी को मनुष्य बोलते हैं, कौन देव नेत्रेन्द्रिय, कर्णेन्द्रिय को नियुक्त करता है?

भावार्थ – शिष्य मूलतः चार प्रमुख प्रश्न पूछता है और उनका समाधान जानना चाहता है। कौन शिवऽ सत्ता है जिसके कारण वाणी, कर्मेन्द्रिय और चक्षु अपना-अपना कार्य करते हैं, उन्हें अपने कार्य में प्रवृत करने वाला सर्वशक्तिमान चेतन है वह कैसा है और यह मन किस प्रेरणा से सांसारिक विषयों पर टूट पड़ता है। यह प्रश्न जीव विज्ञान की दृष्टि से नहीं अपितु उस व्यक्त अव्यक्त सत्ता के बारे में जानना चाहता है जो यह सारी क्रियाएं सम्पन्न करता है, जिसके कारण से प्रत्येक प्राणी भिन्न-भिन्न है।

श्रोत्रस्य श्रोत्रं मनसो मनो यद्वाचो ह वाचं स उ प्राणस्य प्राणः।
चक्षुषश्चक्षुरतिमुच्य धीराः प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति ॥२॥

अर्थ – जो मन का भी मन है अर्थात कारण है, प्राण का प्राण है, वाक इन्द्रिय का वाक है, श्रोत्र इन्द्रिय का श्रोत्र है, चक्षु इन्द्रिय का चक्षु है, वही प्रेरक परमात्मा है। ज्ञानीजन इसे जानकर इन्द्रियों को विषय वासनाओं से हटा देते हैं और मृत्यु के पश्चात भी अमृत हो जाते हैं।

भावार्थ – इस श्लोक में गुरु शिष्य के प्रश्नों का स्पष्ट उत्तर न देकर संक्षेप रूप में समझाते हैं कि जो श्रोत का भी श्रोत है, जो मन, प्राण और इन्द्रियों एवं समस्त जगत का परम कारण है, जिससे ये सब शक्तियां मनुष्य में उत्पन्न हुई हैं, जिस शक्ति को पाकर सभी अपना-अपना कार्य कर रहे हैं, पर ब्रह्म ही इन सबका प्रेरक है। जो व्यक्ति इस बात को समझ लेता है वह इस लोक से प्रयाण करने के पश्चात अमृत स्वरूप हो जाता है। अपने जीवन को पूर्ण बना देता है।

न तत्र चक्षुर्गच्छति न वाग्गच्छति नो मनो न विद्मो न विजानीमो यथैतदनुशिष्यादन्यदेव तद्विदितादथो अविदितादधि।
इति शुश्रुम पूर्वेषां ये नस्तद् व्याचचक्षिरे ॥३॥

अर्थ – शिष्य पूछता है जहां न तो नेत्र पहुंच सकते हैं, न वाणी पहुंच सकती है और न मन पहुंच सकता है तो हे गुरुदेव! कैसे समझा जाय कि परमात्मा कैसा है, किस प्रकार से बतलाया जाय कि वह ऐसा है? उसे हम स्वयं अपनी बुद्धि

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

से नहीं जानते हैं और न ही दूसरों से सुनकर जानते हैं, और जानकारों द्वारा बताये गये स्वरूप से भी वह अलग है, विदित और अविदित दोनों से अन्य है, वह है, इसका आभास तो सब करते हैं, ऐसी व्याख्या हमने अपने पूर्व आचार्यों के मुख से सुनी है।

भावार्थ – उन सच्चिदानन्द परब्रह्म को मन और इन्द्रियां नहीं जान सकतीं, वे उस अलौकिक, दिव्य तत्व तक पहुंच ही नहीं सकती हैं। लेकिन इनमें अर्थात इन्द्रियों में जो चेतना और क्रिया है वह इन्हीं ब्रह्म की प्रेरणा और शक्ति से है। ऐसी अवस्था में मन और इन्द्रियों द्वारा कैसे समझा जाय कि ब्रह्म ऐसा है? पूर्व महापुरुषों ने इस गुरु तत्व का उपदेश अवश्य दिया है कि ब्रह्म जड़ चेतन से भिन्न है जिसे वाणी इन्द्रियों द्वारा नहीं समझा जा सकता है लेकिन कोई तो मार्ग होगा जिसके द्वारा ब्रह्म को समझा जा सकता है? इन सभी प्रश्नों को आगे के पाच मंत्रों में समझाया गया है।

यद्वाचानभ्युदितं येन वागभ्युद्यते।
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते ॥४॥

अर्थ – जो वाणी द्वारा बतलाया नहीं गया है अपितु जिसके कारण वाणी बोली जाती है अर्थात जिसकी शक्ति से मनुष्य बोलने में समर्थ होता है, उसे ही तुम ब्रह्म जानो। वाणी द्वारा जिस तत्व की लोग उपासना करते हैं वह ब्रह्म नहीं है।

भावार्थ – वाणी के द्वारा जो कुछ भी व्यक्त किया जा सकता है और जिस तत्व की उपासना की जाती है वह ब्रह्म नहीं है। ब्रह्म तत्व तो वाणी से परे है। इसके विषय में इतना ही कहा जा सकता है कि जिसकी शक्ति के एक अंश से वाक् शक्ति अर्थात बोलने की शक्ति प्राप्त हुई, जो वाणी का भी ज्ञाता, वाणी का प्रेरक और वाणी का प्रवर्तक है – वह ब्रह्म है।

यन्मनसा न मनुते येनाहुर्मनो मतम्।
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते ॥५॥

अर्थ – जिसको मन नहीं समझ सकता अपितु जिससे मन समझा जाता है, पूर्व कवि कहते हैं कि उसे ही हे शिष्य, तुम ब्रह्म जानो। मन और बुद्धि द्वारा जानने वाले जिस तत्व की सब लोग उपासना करते हैं वह ब्रह्म नहीं है।

भावार्थ – इस मंत्र में इस बात की व्याख्या की गई कि ब्रह्म वह है जिसकी शक्ति और प्रेरणा को पाकर मन अपने द्वारा दृश्य प्रदार्थों को जानता है। मनुष्य की बुद्धि और मन जो उनके अनुकूल रहता है उसी की उपासना करते हैं। वास्तविक ब्रह्म वह नहीं है, उसके बारे में केवल इतना ही कहा जा सकता है कि वह मन, बुद्धि का ज्ञाता, मनन और निश्चय करने की शक्ति देने वाला तथा मनन और निश्चय करने में नियुक्त करने वाला है, जिसके एक अंश से बुद्धि में क्षमता और मन में मनन करने की समर्थ्य आती है वही तो ब्रह्म है। इसके मूल में ये बात है कि प्रत्येक साधक की मनन करने की शक्ति और जिज्ञासा निरन्तर बनती ही रहनी चाहिए, प्रेरणा प्राप्त कर अपने आप को कर्मशील बनाना चाहिए।

यच्चक्षुषा न पश्यति येन चक्षूंषि पश्यति।
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते ॥६॥

अर्थ – जिसको किन्हीं भी नेत्रों द्वारा नहीं देख सकता अपितु जिसके द्वारा नेत्र संसार को देखते हैं, उसे ही ब्रह्म जानना चाहिए। नेत्रों द्वारा देखने में आने वाले जिस दृश्य की उपासना लोग करते हैं वह ब्रह्म नहीं है।

भावार्थ – जिसकी शक्ति और प्रेरणा से नेत्र अपने विषयों को देखता है वह ब्रह्म है। यहां ब्रह्म देह से परे हट कर किसी भी वस्तु में जो ज्ञान है उस ज्ञान को समझने की शक्ति को कहा गया है। किसी मूर्ति चित्र अथवा कोई दृश्य की उपासना करने से व्यक्ति परब्रह्म परमेश्वर को समझ नहीं सकता है। किसी भी स्वरूप के पीछे जो ज्ञान है वह ज्ञान ब्रह्म स्वरूप है, वह ज्ञान ही नेत्रों को देखने की प्रेरणा देता है। उसी कारण इन्द्रियां अपना कार्य करती हैं।

यच्छ्रोत्रेण न शृणोति येन श्रोत्रमिदं श्रुतम्।
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते ॥७॥

अर्थ – जिसको कोई भी कानों के द्वारा सुन नहीं सकता बल्कि जिसके द्वारा कर्णेन्द्रियों को श्रवण ज्ञान होता है, उसे ही तू ब्रह्म जान। कानों द्वारा सुने गए जिस तत्व की लोग उपासना करते हैं वह ब्रह्म नहीं है।

भावार्थ – जिसकी शक्ति से, प्रेरणा से श्रोत सांसारिक विषयों को सुनने में प्रवृत होता है वह ही आद्याशक्ति है, केवल सुनने मात्र से ज्ञान नहीं हो सकता। सुनकर मन, नेत्रों और प्राण के साथ एक तारतम्य बनाना आवश्यक है। जब तक वह तारतम्य प्राप्त नहीं हो सकता तब तक वह सांसारिक मनुष्य सुनी सुनाई बातों पर विश्वास कर लेता है और उसी के अनुसार अपनी बुद्धि का विकास करता है।

यत्प्राणेन न प्राणिति येन प्राणः प्रणीयते ।
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते ॥८॥

अर्थ – जो प्राण के द्वारा क्रियाशील, चेष्टा युक्त नहीं होता अपितु जिससे प्राण चेष्टायुक्त होते हैं उसे ही ब्रह्म जानना चाहिए। प्राणों की शक्ति से चेष्टा युक्त दिखने वाले जिन तत्वों की लोग उपासना करते हैं वह ब्रह्म नहीं है।

भावार्थ – जिसकी प्रेरणा से यह प्राण विचरता है और प्राण द्वारा अन्य इन्द्रियों को शक्ति प्राप्त होती है, उस प्राण को प्रेरणा देने वाला सर्वशक्तिमान परमेश्वर ब्रह्म है। मनुष्य अपनी प्राण शक्ति द्वारा किसी भी तत्व को अपने ही अनुकूल देखना और अनुभव करना चाहता है। उसे अपनी प्राण शक्ति के प्रेरक तत्व की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए, जो अदृश्य शक्ति उसमें प्राण तत्व को संचारित करती है वही तो ब्रह्म है।

केनोपनिषद के प्रथम खण्ड में ऋषियों ने इस बात को स्पष्ट किया है कि मन, प्राण और इन्द्रियों द्वारा जिन विषयों की उपलब्धियां होती हैं वे परब्रह्म परमेश्वर का वास्तविक स्वरूप नहीं हैं, **वास्तविक स्वरूप तो मन, प्राण, इन्द्रियों का ज्ञाता, शक्ति प्रदाता, स्वामी, प्रेरक, प्रवर्तक और परम तत्व ब्रह्म है।**

प्रतिबोधविदितं मतममृतत्वं हि विन्दते ।
आत्मना विन्दते वीर्यं विद्यया विन्दतेऽमृतम् ॥९॥

अर्थ – प्रतिबोध अर्थात संकेत से उत्पन्न ज्ञान ही वास्तविक ज्ञान है क्योंकि इससे अमृत स्वरूप परमात्मा को मनुष्य प्राप्त करता है, अन्तर्यामी परमात्मा से मनुष्य शक्ति प्राप्त करता है और उस विद्या ज्ञान से अमृत रूप को प्राप्त होता है।

भावार्थ – बोध और प्रतिबोध का तात्पर्य है अपनी इन्द्रियों को विषय वासनाओं से मोड़कर उसका ज्ञान करना, और बोध का ज्ञान होकर अपने अन्तर मन के ज्ञान को प्राप्त करने हेतु जब इन्द्रियां अन्तर्मुखी हो जाती है, तब प्रतिबोध कहलाता है। बोध से प्रतिबोध के मार्ग पर चलने का उपाय यही है कि आत्म शक्ति को जाग्रत किया जाय, आत्म शक्ति का जागरण ही वास्तविक ज्ञान है और इसी ज्ञान से अमृततत्व प्राप्त हो सकता है। इस देह में रहते हुए मनुष्य विवेह बन सकता है और यह क्रिया केवल वीर्यवान अर्थात शक्तिवान पुरुष ही कर सकता है। मनुष्य ही अपने आप को अन्तर्मुखी कर अपने भीतर के रहस्यों को जानकर पूर्णत्व की ओर अर्थात उर्ध्वमुखी हो सकता है।

इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति न चेदिहावेदीन्महती विनष्टिः ।
भूतेषु भूतेषु विचित्य धीराः प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति ॥१०॥

अर्थ – इस देह में आकर यदि इस सत्य को जान लिया तो बहुत कुशल है, यदि इस देह के रहते भी यह ज्ञान प्राप्त नहीं कर सके तो विनाश है, अतः धीर, बुद्धिमान पुरुष परब्रह्म को समझकर इस लोक से प्रयाण कर अमृत को प्राप्त होते हैं।

भावार्थ – इस महत्वपूर्ण श्लोक में इस उपनिषद का सार ही दिया गया है, इस देह को प्राप्त करने के पश्चात जिस देह में प्राण है, कर्मेन्द्रियां हैं, ज्ञानेन्द्रियां हैं, परमात्मा द्वारा दी गई असीम शक्ति है, उस शक्ति का उपयोग केवल बोध करने में ही लगा देते हैं अर्थात जो दृश्यमान दिखाई देता है उसी को प्राप्त करने के लिए पूरे जीवन दौड़ते रहते हैं तो विनाश ही होता है। जो व्यक्ति परमात्मा द्वारा दी गई इन शक्तियों का श्रेष्ठ उपयोग कर बोधावस्था से प्रतिबोधावस्था में जा सकता है, विषयों में जाकर भी अपने आप को उन विषयों से अलग करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है जो अपने मन को समझ लेता है, वह मन और प्राण को, प्राण में शक्ति देने वाले परम तत्व को जान लेता है और वही व्यक्ति अमृतत्व को प्राप्त होता है।

केनोपनिषद वास्तव में पुरुष से पुरुषोतम बनने की क्रिया का विवरण है, अपने आप को उच्च समझना आवश्यक है लेकिन यह बात ध्यान रहे कि जो शक्ति है उस शक्ति को प्रदान करने वाला परम तत्व है और उस परम तत्व को ही प्राप्त करना इस जीवन का उद्देश्य है, तभी जीवन में महानता, अमरता प्राप्त हो सकती है।

जीवन धर्म

ब्रह्मण्याधाय कर्माणि सङ्गंत्यक्त्वा करोति यः ।
लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा ॥

जो पुरुष सब कर्मों को ब्रह्म में अर्पण करके और आसक्ति को त्याग कर कर्म करता है, वह जल से कमल के पत्ते की भांति जीवन में पाप से लिप्त नहीं होता।

नक्षत्रों की वाणी

मेष
(चू, चे, चो, ला, लू, लो, अ)

आप स्वभाव से बहुत ही मधुर और हंसमुख हैं, इस समय आपका भाग्य बहुत ही प्रबल है, आप जो भी कार्य करना चाहते हैं संयम व सूझबूझ के साथ मौलिक निर्णय लेते हुए करें। साझेदारी के मामलों में सतर्कता बरतना आवश्यक होगा। जीवनसाथी से सहयोग मिलेगा तथा किसी तीर्थ स्थान में जाने का योग है। नौकरीपेशा व्यक्ति के लिए समय कुछ अच्छा नहीं है, उनके कार्य रुक कर पूरे होंगे तथा परिवार में खुशी का वातावरण रहेगा। बेरोजगार व्यक्तियों को नौकरी मिलेगी तथा ग्रह के हिसाब से आपको अच्छे पद पर योग्यता के आधार पर नौकरी मिलेगी। इस माह आप **मधुरूपेण रुद्राक्ष** को अपने पास २१ दिन तक रखें तथा उसके बाद किसी नदी में प्रवाहित कर दें। इस माह की शुभ तिथि ९, १७, २१, २८ हैं।

वृष
(ई, उ, ए, वा, वी, वू, वे, वो)

आपका कई बार मन विचलित होगा तथा कारोबार परिवर्तन के विचार आपको तनाव की ओर अग्रसर करेंगे। लेकिन अभी व्यापार परिवर्तन या स्थान परिवर्तन आपके हित में नहीं होगा। परिवार में किसी नये मेहमान के आने से प्रसन्नता का वातावरण रहेगा।समाज में आपका मान सम्मान होगा, शत्रुओं पर विजय होगी तथा बहुत समय से रुका हुआ धन प्राप्त होगा। श्रमिक वर्ग के व्यक्तियों के लिए समय लाभप्रद है तथा इस समय आप जो भी कार्य कर रहे हैं उसे धैर्य पूर्वक आनन्द के साथ करें, घर में मांगलिक योग बनेंगे तथा प्रसन्नता का वातावरण रहेगा। इस माह आप '**गणपति साधना**' सम्पन्न करें, इस माह की अनुकूल तिथियां – ५,११,२१,२९.

मिथुन
(का, की, कू, घ, ङ, को, हा)

आध्यात्मिक प्रसंगों को लेकर उत्साह रहेगा तथा व्यस्तता में वृद्धि होगी, यात्रा के योग बनेंगे, साथ ही आर्थिक व्यय-भार में वृद्धि होगी। पहले आप उन्हीं कार्यों को सम्पन्न करें, जो अपने हाथ में ले रखें हैं। बेरोजगार व्यक्ति नये कारोबार के बारे में विचार कर सकते हैं। इन्टरव्यू में सफलता प्राप्त होगी तथा अधिकारी आपके कार्य की सराहना करेंगे, जीवनसाथी से सहयोग प्राप्त होगा घर परिवार में प्रसन्नता का वातावरण रहेगा। मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा तथा अदालती विवादों में विजय प्राप्त होगी, किसी भी प्रकार के आकस्मिक संकट के प्रति सतर्क रहते हुए संयम से कार्य करें। **भैरव साधना** सम्पन्न करें सफलता मिलेगी तथा काले तिल का दान करें। इस माह की अनुकूल तिथियां – ८,११,१९,२३,२७.

कर्क
(ही, हू, हो, डा, डी, डे, डा)

चला आ रहा अथक प्रयास सफलता देने वाला सिद्ध होगा। जो कार्य आप ने अपने हाथ में ले रखा है, पहले उसे पूरा करें तथा नये कारोबारी मामलों में किसी भी प्रकार की जल्दबाजी न करें। स्वास्थ्य को लेकर तनाव रहेगा तथा चिकित्सा व्यय भार में वृद्धि होगी। सामाजिक मर्यादा तथा मान-सम्मान को बनाये रखने का प्रयत्न करें। साधनात्मक दृष्टि से यह समय आपके लिए अनुकूल रहेगा। अधिकारियों से मेल-जोल बनाकर रखें। अदालती मुकदमों में अनुकूलता प्राप्त होगी। भौतिक सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी। इस माह आप '**कुबेर साधना**' सम्पन्न करें। आपके लिये अनुकूल तिथियां हैं – ५, १२, २१, २८.

सिंह
(मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टा)

जो कार्य आप करना चाहते हैं, कर सकते हैं, लेकिन निर्णय लेने में सूझ-बूझ आवश्यक है, जल्दबाजी में कोई कार्य न करें। बेरोजगारों के लिए भी यह समय अनुकूल एवं आर्थिक लाभ देने वाला सिद्ध होगा। सड़क पर वाहन चलाते समय विशेष सावधानी बरतें। विश्वासघात की स्थिति बन सकती है, अतः सावधानी बरतें। मित्र साथ छोड़ जायेंगे तथा समय-असमय आपको पीड़ा पहुंचाने का प्रयत्न भी करेंगे। दाम्पत्य सुख सामान्य रहेगा, लेकिन संतान पक्ष के कारण चिन्ता व्याप्त हो सकती है। धार्मिक एवं मांगलिक प्रसंगों में व्यस्तता रहेगी। आप इस माह '**अप्सरा साधना**' सम्पन्न करें । इस माह की अनुकूल तिथियां हैं – ५, १०, १८, २१, २५

कन्या
(टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)

यह समय आपके लिए खुशहाली लेकर आ रहा है, घर में नये मेहमान के आने से प्रसन्नता का वातावरण रहेगा तथा लक्ष्मी की प्राप्ति होगी। बहुत समय से रुका हुआ धन प्राप्त होगा ।इस समय आपके जो भी कार्य रुके हुए थे पूरे हो जायेंगे तथा नौकरीपेशा वर्ग के लिए समय सामान्य रहेगा तथा वे हर कदम फूंक-फूंक कर रखें, अधिकारी उनके कार्य से प्रसन्न रहेंगे, इसीलिए अधिकारियों से तालमेल बनाकर चलें। धार्मिक कार्यों को लेकर यात्रा योग प्रबल हैं, जीवन साथी का सहयोग प्राप्त होगा, समाज में मान-सम्मान होगा। बेराजगार व्यक्ति के लिए यह समय बहुत ही अच्छा है, इस समय उन्हें कार्य में सफलता मिलेगी तथा इन्टरव्यू में सफलता प्राप्त होगी। इस समय आप '**महाकाली साधना**' सम्पन्न करें, अनुकूल तिथियां – ५,११,२१,२५,२८.

तुला
(रा, री, रू, ता, ती, तू, ते)

आप स्वभाव से भोले है और हर किसी के बहकावे में अकसर में आ जाते है तथा लोग इसी का फायदा आपसे उठाते हैं। इसीलिए किसी भी व्यक्ति के बहकावे में न आयें, अपनी सूझ-बूझ से स्वयं ही निर्णय लें, आपके मित्र ही आपके सबसे बड़े शत्रु हैं, इसलिए उनसे सावधान रहें, वे आपके साथ विश्वासघात कर सकते है, परिवार में प्रसन्नता का वातावरण रहेगा तथा नौकरीपेशा वर्ग के लिए समय

सर्वार्थ, अमृत, रवि, पुष्य, त्रिपुष्कर, सिद्धि योग

इन दिवसों पर आप किसी भी साधना को सम्पन्न कर सकते हैं।

15 जुलाई	–	सिद्धि योग
1 अगस्त	–	सर्वार्थ सिद्धि योग
6 अगस्त	–	त्रिपुष्कर योग
9 अगस्त	–	अमृत सिद्धि योग
14 अगस्त	–	सर्वार्थ सिद्धि योग

बहुत ही सुनहरा रहेगा। उनके सभी कार्य पूरे होंगे, समाज में नाम होगा तथा लोग उनके कार्य की सराहना करेंगे। आध्यात्मिक चिंतन बनेगा, जीवनसाथी का सहयोग प्राप्त होगा तथा किसी विशेष कार्य से यात्रा का योग बनेगा। इस समय आप **'महाकाल साधना'** सम्पन्न करें। अनुकूल तिथियां – ५, १८, २१, २३.

वृश्चिक

(तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)

समय की उपयोगिता को पहचान कर ही कार्य करें जल्दबाजी न करें। जो कार्य कर रहे हैं, उसी में पूर्ण ध्यान दें, समय आने पर लाभ होगा। इस समय आपकी ग्रहदशा बहुत ही अच्छी चल रही है, घर परिवार में प्रसन्नता का वातावरण रहेगा, श्रमिक वर्ग के लिए समय कुछ कठिनाई वाला रहेगा तथा उनके कार्य रुक-रुक कर पूरे होंगे। मित्रों से आपको बहुत ही सहयोग मिलेगा, नौकरीपेशा व्यक्तियों के लिए यह समय बहुत ही अच्छा रहेगा, नौकरी में पदोन्नति होगी तथा अधिकारी उनके कार्य की सराहना करेंगे तथा समाज में उनका मान-सम्मान होगा। इस समय आप **'पारदेश्वर साधना'** सम्पन्न करें। अनुकूल तिथियां – ४, १०, १८, २१, २५, २८, हैं।

धनु

(ये, यो, भा, भी, धा, फा, बा, भे)

आप हर बात में गुस्सा हो जाते हैं, ऐसा आपको करना शोभा नहीं देता है, आप अपने क्रोध पर नियंत्रण रखें तथा छोटी-छोटी सी बातों पर गुस्सा नहीं हों अन्यथा आपको ही हानि होगी। कार्यक्षेत्र में आपको सफलता मिलेगी तथा श्रमिक वर्ग के लिए यह समय बहुत ही लाभदायक है। इनके सोचे हुए कार्य पूरे होंगे तथा समाज में मान-सम्मान होगा तथा परिवार में प्रसन्नता का वातावरण रहेगा तथा विद्यार्थी वर्ग के लिए समय बहुत ही अच्छा रहेगा, इस समय का उपयोग अपनी पढ़ाई में करेंगे तो सफलता मिलेगी। इस समय आप **रम्भा अप्सरा साधना** सम्पन्न करें। अनुकूल तिथियां – ५, १५, २१, २५, २९.

मकर

(भो, जा, जी, खू, खे, खो, गा, गी)

कम समय में ज्यादा काम होने से निरन्तर तनाव की स्थिति होगी, लेकिन मित्रों एवं सम्बन्धियों के सहयोग से नियत समय पर कार्य पूरा होगा। गम्भीरता और धैर्य धारण करें, हल्की बातों का प्रयोग तथा लापरवाही अहितकर हो सकती है। पारिवारिक क्लेशों की समाप्ति होगी, दाम्पत्य सुख की वृद्धि होगी तथा संतान की ओर से अनुकूल समाचार प्राप्त होंगे। नौकरीपेशा व्यक्ति अपने अधिकारियों एवं सहकर्मियों से अच्छा व्यवहार बना कर रखें, समय आने पर वे आपके लिए उचित सहयोगी सिद्ध होंगे। धार्मिक एवं मांगलिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी एवं आर्थिक व्यय में भी वृद्धि होगी। आर्थिक श्रेष्ठता एवं सम्पन्नता के लिए आप **'शिव साधना'** सम्पन्न करें। तिथियां ४, १५, २४

ज्योतिष की दृष्टि से जून - २०००

विश्व के कई देशों में आश्चर्यजनक घटनाएं हो सकती हैं। ज्योतिष की दृष्टि से समय अच्छा नहीं है, राजनैतिक हलचल रहेगी तथा प्राकृतिक दृष्टि से भी हानि ही होगी। ग्रहण के कारण भी हानि का सामना करना पड़ सकता है। इस समय बाहरी देशों में युद्ध होने की सम्भावना रहेगी। अतिवृष्टि के कारण देश के पूर्वी भाग में जन धन हानि होगी।

कुम्भ

(गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा)

आपके यश के चर्चे प्रकाश में हैं तथा इसको बनाये रखना भी आपके ही हाथों में है, ऐसा कोई कार्य न करें जिससे आपको पछताना पड़े। आर्थिक एवं कारोबारी दृष्टि से समय आपके लिए अनुकूल एवं लाभप्रद है, नये कारोबार के मामलों पर भी आप विचार कर सकते हैं। बेरोजगार व्यक्तियों के लिए भी समय अनुकूल है, साक्षात्कार में सफलता प्राप्त होगी। दाम्पत्य जीवन तनाव पूर्ण रहेगा परन्तु संतान पक्ष आपके अनुकूल रहेगा। रुके हुए कार्य आपकी थोड़ी सी समझदारी से पूर्ण हो जायेंगे। शत्रु आप पर हावी हों उसके पहले ही आप **बगलामुखी साधना** सम्पन्न करें। आपके लिए ४, ११, १६, २१, २८.

मीन

(दी, दू, थ, झ, दे, दो, चा, ची)

इस बात शत्रु आपके खिलाफ कुछ गहरी चाल चल रहे हैं, इसलिए आप सावधान रहें, मित्रों पर भी आप विश्वास न करें। वे भी आप पर घात कर सकते हैं, परिवार में स्थिति संकटप्रद रहेगी, जीवनसाथी से मतभेद समाप्त होंगे तथा संतान की ओर से सुखद समाचार प्राप्त होगा। अधिकारियों एवं सहकर्मियों से मेल-मिलाप बनाये रखें। नये कारोबार के बारे में विचार फिलहाल त्याग दें। आप इस समय **कृत्या साधना** सम्पन्न करें। इस माह की तिथि – ५, ११, २१, २८.

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्यौहार

17 जुलाई	– श्रा. कृष्ण पक्ष सोमवार	शिव व्रत
18 जुलाई	– श्रा. कृष्ण पक्ष मंगलवार	मंगला गौरी व्रत
20 जुलाई	– श्रा. कृष्ण पक्ष गुरुवार	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
23 जुलाई	– श्रा. कृष्ण पक्ष रविवार	लोकनायक तिलक जयंति
24 जुलाई	– श्रा. कृष्ण पक्ष सोमवार	अष्टमी, शिव व्रत
27 जुलाई	– श्रा. कृष्ण पक्ष गुरुवार	कामदा एकादशी व्रत
29 जुलाई	– श्रा. कृष्ण पक्ष शुक्रवार	प्रदोष व्रत
31 जुलाई	– श्रा. कृष्ण पक्ष सोमवार	सोमवती अमावस्या
4 अगस्त	– श्रा. शुक्ल पक्ष शुक्रवार	नाग पंचमी
10 अगस्त	– श्रा. शुक्ल पक्ष गुरुवार	एकादशी
12 अगस्त	– श्रा. शुक्ल पक्ष शनिवार	प्रदोष व्रत
15 अगस्त	– श्रा. शुक्ल पक्ष मंगलवार	पूर्णमासी
16 अगस्त	– श्रा. शुक्ल पक्ष बुधवार	सिंह संक्रांति

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

चक्षुः सूर्यो दधातु मे

सूर्य मेरी आंखों में दिव्यत्व प्रदान करे।

आपका जीवन और सक्रांति

पृथ्वी पर स्थित मनुष्य का सबसे अधिक सम्बन्ध सूर्य से है, पृथ्वी और सूर्य का सम्बन्ध, सूर्य और मनुष्य का सम्बन्ध, सूर्य और राशि का सम्बन्ध, इन्हीं गम्भीरतम विषयों की विवेचनासे युक्त प्रस्तुत है यह लेख

भारतीय मनीषियों ने पृथ्वी को माता धरणी, धरा, भूमि, इत्यादि नामों से सम्बोधित किया है और सूर्य को ग्रहणी, आदित्य, पिता इत्यादि नामों से सम्बोधित किया है। सूर्य और पृथ्वी का सम्बन्ध वैसा ही है जैसा एक बालक का अपने माता और पिता से सम्बन्ध होता है। खगोलिय दृष्टि से भी सूर्य का प्रभाव हर समय पृथ्वी पर दृष्टिगोचर होता है। सूर्य के प्रकाश के माध्यम से और धरती की उर्वरता से वृक्ष वनस्पति ही नहीं प्राणी भी जगत में चलायमान होते हैं। संतुलित व्यक्तित्व वही कहा जा सकता है जिसके जीवन में सूर्य तत्व, पृथ्वी तत्व का सामंजस्य सही रूप में हो। वेदोक्त गायत्री मंत्र *ॐ भूर्भुवः स्वः भर्गोदेवस्य धीमहि धियो योन प्रचोदयात* में यही प्रार्थना की गई है कि हे सूर्य देव! आप हमारे जीवन के अंधकार को दूर कर हमारा जीवन प्रकाशित करें।

सूर्य के बिना पृथ्वी पर जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। सूर्य कुछ काल के लिए रात्रि में अपनी किरणें पृथ्वी के एक विशेष भू भाग पर प्रकाशित नहीं करता है तो उस रात्रिकाल के समय मनुष्य आलस्य, निद्रा से युक्त हो जाता है और निद्रा का तात्पर्य है शरीर की शक्तियों का सुप्त हो जाना। शास्त्रकारों ने तो कहा है कि निद्रा भी एक प्रकार से मृत्यु की स्थिति है, अर्थात जहां सूर्य है वहां जीवन है और जहां अंधकार है वहां मृत्यु है। दैनिक जीवन में भी शारीरिक क्रिया चक्र इस प्रकार से बना होता है कि सूर्योदय के साथ ही व्यक्ति के भीतर शक्तियां जाग्रत होने लगती हैं और वह क्रियाशील हो जाता है। जैसे जैसे सूर्य आकाशमंडल में आगे बढता है वैसे-वैसे उसकी क्रियाशक्ति बढती है और जैसे-जैसे वह अस्त होने लगता है वैसे-वैसे उसकी क्रियाशक्ति मन्द होने लगती है। संभवतः इसीलिए दिन में शयन करना निषिद्ध माना गया है क्योंकि दिवस तो क्रियाशीलता का बोधक है। इस क्रियाशीलता काल में भी निष्क्रिय होना अपनी दैहिक, वाचिक और मानसिक शक्तियों को मन्द करना है।

योग्य पुरुष का लक्षण यही होता है कि वह सूर्योदय के साथ उठे और उसकी गति के अनुसार ही क्रियाशील हो जाए। क्या कारण है कि सूर्योदय के साथ किया हुआ कार्य सफल होता है? सूर्योदय के समय उसके कार्य करने की क्षमता अधिक रहती है, वह क्षमता सायंकाल होने के साथ-साथ क्षीण होने लगती है। जितना कार्य मनुष्य सूर्योदय से सूर्यास्त तक कर सकता है उतना कार्य सायंकाल या सूर्यास्त से पूरी रात्रि कार्य कर भी सूर्योदय तक नहीं कर सकता है।

इसका मूल कारण सूर्य और मनुष्य देह में स्थित सभी चक्रों का सीधा सम्बन्ध है और मनुष्य देह में ही सभी

राशियां, ग्रह, नक्षत्र, तारामंडल स्थित हैं। जो ब्रह्माण्ड बाहर स्थित है वही ब्रह्माण्ड मनुष्य के भीतर भी स्थित है, सूर्य ही वह प्रधान ग्रह है जो इस बाह्य ब्रह्माण्ड और आंतरिक ब्रह्माण्ड में संतुलन बनाये रखता है। यदि कोई व्यक्ति दस दिन तक बंद अंधेरे कमरे में पड़ा रहे तो वह बिमार, पीला और आभाहीन हो जाता है। सूर्य चिकित्सा का सिद्धान्त भी इसी ज्ञान पर आधारित है कि हर स्थिति में मनुष्य को सूर्य की आवश्यकता रहती ही है।

ज्योतिष विज्ञान के अनुसार बारह राशियां हैं और प्रत्येक राशि की एक निश्चित स्थिति है। जन्म के समय जिस नक्षत्र में व्यक्ति का जन्म होता है उस राशि के अनुसार उसका नामकरण किया जाता है। यहां यह जानना आवश्यक है कि प्रत्येक राशि की स्थिति क्या है और प्रत्येक राशि में कौन-कौन से नक्षत्र स्थित हैं।

सम्पूर्ण आकाश मंडल को ३६० अंशों में बांटा गया है जो कि १२ राशियों में विभक्त हैं। इस प्रकार ३० अंशों की एक राशि बनती है और प्रत्येक राशि का शरीर के विशेष अंगों पर प्रभाव पड़ता है। साथ ही प्रत्येक राशि के अन्तर्गत सवा दो नक्षत्र आते हैं। नक्षत्र, राशि और सूर्य का सम्बन्ध व्यक्ति के जीवन पर सर्वाधिक प्रभाव डालता है।

१. मेष – चू, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ
(अश्विनी ४ भरणी ४ कृतिका१)

यह राशि डिग्री १ से ३० तक सिर पर रहती है और उतनी ही डिग्री तक सिर पर प्रभाव डालती है। अंग्रेजी में इसे ऐरीज कहते हैं। इस राशि में चार घड़ी और पन्द्रह पल होते हैं। यह विषम राशि कहलाती है और इसका स्वामी मंगल है। इस पर सूर्य ३० दिन, ५५ घड़ी और ३३ पल रहता है। यह राशि पुरुष जाति, चर संज्ञक, अग्नितत्व, पूर्व दिशा की स्वामिनी, उग्र प्रकृति, रक्तवर्णयुक्त, क्षत्रिय वर्ण तथा अल्प सन्तति वाली है। साहस, अभिमान और मित्र प्रेम इसका प्राकृतिक स्वभाव है।

२. वृष – इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वो
(कृतिका ३ रोहिणी ४ मृगशिरा २)

यह राशि डिग्री ३० से ६० तक चेहरे पर रहती है तथा उतनी ही डिग्री तक चेहरे पर प्रभाव डालती है। अंग्रेजी में इसे टारस कहते है। यह राशि चार घड़ी पैंतालिस पल की होती है। यह समराशि कहलाती है और इसका स्वामी शुक्र है। इस पर सूर्य ३१ दिन २४ घड़ी और ५६ पल तक रहता है। यह स्त्री राशि, स्थिर संज्ञक, भूमि तत्व, दक्षिण दिशा की मालिक, कान्तिहीन, रात्रिबली, श्वेतवर्ण, मध्यम सन्तति, वैश्यवर्ण और शिथिल स्वभाव की है। यह राशि स्वार्थी, सांसारिक कार्यों में दक्ष और विचारपूर्वक कार्य करने वाली है। इससे मुख मंडल का अध्ययन किया जा सकता है।

३. मिथुन – का, की, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह
(मृगशिरा २ आर्द्रा ४ पुनर्वसु ३)

यह राशि डिग्री ६० से ९० तक दोनों कन्धों पर रहती है। अंग्रेजी में इसे जैमिनी कहते हैं। यह राशि ५ घड़ी और १५ पल की होती है। यह विषम राशि कहलाती है और इसका स्वामी बुध है। इस पर सूर्य ३१ दिन, ३७ घड़ी और ३२ पल रहता है। यह हरित वर्ण प्रधान, वायु तत्व, पुरुष जाति, ऊष्ण स्वभाव, शूद्रवर्ण, दिनबली, मध्यम संतति, शिथिल शरीर और पश्चिम दिशा की स्वामिनी द्विस्वभाव राशि है। यह जातक को विद्याव्यसनी एवं शिल्प-दक्ष बनाती है। शरीर के कन्धों, बाहुओं और भुजाओं का इस राशि से अध्ययन किया जाता है।

४. कर्क – ही, हु, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो
(पुनर्वसु १ पुष्य ४ आश्लेषा ४)

यह राशि डिग्री ९० से १२० तक सीने (छाती) पर रहती है और उतनी ही डिग्री तक छाती पर प्रभाव डालती है। अंग्रेजी में इसे कैंसर कहते हैं। यह राशि ५ घड़ी व ३० पल की होती है। यह समराशि है। इसका स्वामी चन्द्र है तथा यह संज्ञक है। इस पर सूर्य ३१ दिन, २२ घड़ी और ३५ पल रहता है। यह राशि स्त्री जाति, कफ प्रकृति प्रधान, पृथ्वीतत्व, रात्रिबली, उत्तर दिशा की स्वामिनी, रक्तधवल वर्ण-युक्त एवं बहुसंतान वाली है। सांसारिक उन्नति में प्रयत्नशीलता, लज्जा एवं विवेक इसके प्राकृतिक गुण हैं। इस राशि से वक्षस्थल तथा गुर्दे आदि का अध्ययन किया जाता है।

५. सिंह – मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे
(मघा ४ पूर्वाफाल्गुनी ४ उत्तराफाल्गुनी १)

यह राशि डिग्री १२० से १५० तक रहती है और उतनी ही डिग्री तक उस पर प्रभाव डालती है। अंग्रेजी में इसे लीओ कहते हैं। यह राशि ५ घड़ी और १५ पल की होती है। यह विषम राशि कहलाती है और इसका स्वामी सूर्य है। इस पर सूर्य ३१ दिन, २ घड़ी और ५२ पल रहता है। यह पुरुष जाति, स्थिर संज्ञक, दिनबली, अग्नि तत्व प्रधान, पीतवर्ण, ऊष्ण स्वभाव, क्षत्रिय वर्ण, पुष्ट अंग और पूर्व दिशा की

स्वामिनी है। इसका प्राकृतिक स्वभाव भ्रमणप्रियता, साहस और उदारता है। हृदय का अध्ययन इसी राशि से होता है।

६. कन्या – टो, प, प्र, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

(उत्तराफाल्गुनी ३ हस्त ४ चित्रा २)

यह राशि डिग्री १५० से १८० तक आमाशय पर रहती है और उतनी ही डिग्री तक उस पर प्रभाव डालती है। अंग्रेजी में इसे *वर्गो* कहते हैं। यह राशि ५ घड़ी और ४ पल की होती है। यह समराशि कहलाती है। इसका स्वामी बुध है। इस पर सूर्य ३० दिन, २९ घड़ी और ४ पल रहता है। यह स्त्री जाति, शीतोष्ण स्वभाव, पिंगल वर्ण, पृथ्वी तत्व, रात्रिबली, शीत प्रकृति और अल्प संतान वाली है। विद्याव्यसनी एवं शिल्प-दक्षता इसका प्राकृतिक गुण है। अपनी उन्नति की ओर यह राशि विशेष ध्यान रखती है। इससे पेट और पेट सम्बन्धी बीमारियों का ज्ञान किया जाता है।

७. तुला – रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते

(चित्रा २ स्वाति ४ विशाखा ३)

यह राशि डिग्री १८० से २१० तक पेट पर रहती है, उतनी ही डिग्री तक उस पर प्रभाव डालती है। अंग्रेजी में इसे *लिबरा* कहते है। यह राशि ५ घड़ी, १४ पल की होती है। यह विषम राशि है और स्वामी शुक्र है। इस पर सूर्य २९ दिन, २७ घड़ी तथा २५ पल रहता है। यह पुरुष जाति, चर संज्ञक, अल्पसंतान वाली, श्याम वर्ण, वायुतत्व और पश्चिम दिशा की स्वामिनी है। इसका प्राकृतिक स्वभाव विचार, गान-चिन्तन, कार्य सम्पादन एवं कुशल राजनीतिज्ञता है। इससे नाभि के नीचे के अंगों का विचार किया जाता है।

८. वृश्चिक – तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू

(विशाखा १ अनुराधा ४ ज्येष्ठा ४)

यह राशि डिग्री २१० से २४० तक पीठ पर रहती है, इतनी ही डिग्री तक पीठ पर प्रभाव डालती है। अंग्रेजी में इसे *स्कार्पियो* कहते हैं। यह राशि ५ घड़ी और १५ पल की होती है। यह समराशि है तथा इसका स्वामी मंगल है। इस पर सूर्य २९ दिन, २७ घड़ी और २९ पल तक रहता है। यह शुभ्रवर्ण, स्त्री जाति, स्थिर संज्ञक, रात्रिबली, प्रकृति प्रधान, बहु संतति, ब्राह्मण वर्ण और जल तत्व प्रधान है। राशि का प्राकृतिक गुण दम्भ, हठ, स्पष्टवादिता और निर्मलता है। इससे जननेन्द्रिय का विचार किया जाता है।

९. धनु – ये, यो, भ, भी, भू, ध, फ, ढ, भे

(मूल ४ पूर्वाषाढ़ ४ उत्तराषाढ़ १)

यह राशि डिग्री २४० से २७० तक जंघा पर रहती है और उतनी ही डिग्री तक उस पर प्रभाव डालती है। अंग्रेजी में इसे *सेजीटेरियस* कहते हैं। यह ५ घड़ी और ३० पल की होती है। यह विषम राशि है तथा इसका स्वामी गुरु है। इस पर सूर्य २९ दिन १५ घड़ी और ४ पल रहता है। यह पुरुष जाति, कंचन वर्ण, क्रूर संज्ञक, दिनबली, दृढ़ शरीर, क्षत्रियवर्ण, अल्प सन्तति एवं अग्नि तत्व प्रधान है। इसका प्राकृतिक स्वभाव करुणा, मर्यादा और अधिकारप्रियता है। इससे पैरों की संधि तथा जंघाओं का विचार किया जाता है।

१०. मकर – भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, ग, गी

(उत्तराषाढ़ ३ श्रवण ४ धनिष्ठा २)

यह राशि डिग्री २७० से ३०० तक घुटनों पर रहती है और उतनी ही डिग्री तक उस पर प्रभाव डालती है। अंग्रेजी में इसे *केप्रीकार्न* कहते हैं। यह ५ घड़ी और १५ पल की होती है। यह समराशि है तथा इसका स्वामी शनि है। इस पर सूर्य २९ दिन, २४ घड़ी तक रहता है। यह स्त्री जाति, चर संज्ञक, वातप्रकृति, पिंगल वर्ण, पृथ्वी तत्व, रात्रिबली, वैश्य वर्ण और दक्षिण दिशा की स्वामिनी है। इसका प्राकृतिक स्वभाव उत्तरोत्तर उन्नति की ओर अग्रसर होना है। इससे घुटनों का विचार किया जाता है।

११. कुम्भ – गु, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, द

(धनिष्ठा २ शतभिषा ४ पूर्वाभाद्रपद ३)

यह राशि डिग्री ३०० से ३३० तक पैरों पर रहती है और उतनी ही डिग्री तक उस पर प्रभाव डालती है। अंग्रेजी में इसे *एक्वेरीअस* कहते हैं। यह ४ घड़ी और ४५ पल की होती है। यह विषम राशि है तथा इसका स्वामी शनि है। इस पर सूर्य २९ दिन, ४६ घड़ी और ४३ पल रहता है। यह पुरुष जाति, स्थिर संज्ञक, विचित्र वर्ण, आत, पित्त, कफ, प्रकृति प्रधान, वायु तत्व, दिनबली और पश्चिम दिशा की स्वामिनी है। यह शूद्र वर्ण, मध्यम संतान वाली तथा क्रूर स्वभाव राशि है। शांतिचित्तता, धर्मप्रियता और विचारशीलता इस राशि का प्राकृतिक स्वभाव है।

१२. मीन – दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची

(पूर्वा भाद्रपद १ उत्तराभाद्र ४ रेवती ४)

यह राशि डिग्री ३३० से ३६० तक पद तल पर रहती है और उतनी ही डिग्री तक उस पर प्रभाव डालती है। अंग्रेजी में इसे *पीसेस* कहते है। यह ४ घड़ी, १५ पल की होती है। यह समराशि है और इसका स्वामी गुरु है। इस पर सूर्य ३० दिन,

३३ घड़ी और ३१ पल रहता है। यह स्त्री जाति, कफ प्रकृति, जल तत्व प्रधान, रात्रिबली, विप्रवर्ण, पिंगल रंग एवं उत्तर दिशा की स्वामिनी है। इसका प्राकृतिक स्वभाव दयालु, दानशीलता और धीरता है।

उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि पृथ्वी जब सूर्य की प्रदिक्षणा करती है तो उसके साथ-साथ इन १२ राशियों और नक्षत्रों की क्या स्थिति रहती है। ग्रहों में प्रत्येक राशि का एक स्वामी ग्रह माना गया है जो कि निम्न विवरण से स्पष्ट है

राशि-स्वामी — मेष-मंगल, वृष-शुक्र, मिथुन-बुध, कर्क-चन्द्र, सिंह-सूर्य, कन्या-बुध, तुला-शुक्र, वृश्चिक-मंगल, धनु-बृहस्पति, मकर-शनि, कुम्भ-शनि, मीन-बृहस्पति

मूलतः सूर्य मेष राशि का स्वामी होते हुए भी पाश्चात्य सिद्धान्त के अनुसार पृथ्वी की परिक्रमा के कारण एक राशि पर एक महीने रहता है और १२ महीनों बाद पुनः उसी राशि पर आ जाता है। यही कारण है कि हर वर्ष मकर संक्राति १४ जनवरी को ही आती है अर्थात १४ जनवरी के दिन सूर्य धनु राशि से मकर राशि में प्रवेश करता है। इस दिन तीर्थों पर स्नान करने तथा विशेष यात्रा करने का शुभ मुहूर्त माना जाता है।

जीवन में भी संक्राति

जीवन का प्रत्येक दिन अपने आप में अलग होता है, परिवर्तनशील जीवन ही मनुष्य को जीने की इच्छा शक्ति निरन्तर प्रदान करता रहता है। जीवन के ६०-७० साल में भी बार-बार परिवर्तन, संक्रमण अर्थात संक्राति आती ही रहती है। मनुष्य के जीवन में जन्म, बचपन, किशोर अवस्था, युवा अवस्था, प्रौढ़ावस्था, वृद्धावस्था और मृत्यु ये सभी संक्रमण काल ही तो हैं। बालपन से किशोर अवस्था में प्रवेश करना तथा किशोर अवस्था से युवावस्था में प्रवेश करना अत्यन्त दुष्कर होता है। चिंतायुक्त जीवन प्रारम्भ होने पर अपने आप को एडजेस्ट करने में बहुत अधिक परेशानी होती ही है।

ठीक इसी प्रकार वर्ष में ऋतु परिवर्तन होने पर शरीर में अजीब सी हलचल होती है, गर्मी से वर्षा ऋतु के बीच का संक्रमण काल शरीर में नई प्रकार की व्याधि ला सकता है। और जब वर्षा ऋतु से शीत ऋतु प्रारम्भ होती है तो उस बीच की ऋतु में भी शारीरिक और मानसिक परिवर्तन होते हैं।

आकाश मंडल में स्थित ग्रह और उन ग्रहों में भी सर्वाधिक प्रभावशाली ग्रह सूर्य जब एक राशि से दूसरी राशि में परिवर्तन करता है तो विशेष स्थिति बनती है। चाहे आपकी राशि कोई भी हो प्रत्येक राशि ऊपर दिये गए विवरण के अनुसार शरीर के उस भाग पर प्रभाव डालती ही है। इसके अतिरिक्त आपकी स्वयं की जो राशि है उस राशि के स्वामी का सूर्य के साथ सम्बन्ध भी संक्राति के समय परिवर्तित होता ही है। इसीलिए व्यक्ति के जीवन में १२ महीने एक समान नहीं रहते हैं, जैसे ही सूर्य का संक्रमण काल आता है, कुछ अच्छा, कुछ बुरा, कुछ अलग प्रकार का घटित होता ही है। धीर, वीर पुरुष समय की गति के अनुसार कार्य करता है तथा विपरीत समय में अपने आप को और अधिक सजग एवं सावधान कर लेता है।

प्रत्येक माह सूर्य का संक्रमण काल १४ -१५ तारीख के आसपास होता है, उन दिनों में कुछ अलग प्रकार की स्थितियां बनती हैं। इसके लिए तीन बातें जाननी आवश्यक हैं।

१.सूर्य किस राशि में प्रवेश कर रहा है।

२. उस राशि का स्वामी कौन है।

३. आपकी स्वयं की राशि क्या है और उसका स्वामी कौन है।

इन स्थितियों पर विचार कर यदि सूर्य को अपने अनुकूल बना लिया जाए तो अन्य ग्रहों का प्रभाव हानिकारक नहीं रहता है क्योंकि सूर्य ही सबसे अधिक तेजस्वी ग्रह है। यदि सूर्य अनुकूल है तो अन्य सारे ग्रह अपने आप अनुकूल हो जाते हैं। सूर्य व्यक्तित्व का स्वामी है, इसके द्वारा ही व्यक्तित्व का निर्माण होता है। मनुष्य में पराक्रम, तेजस्विता, स्वभाव, कार्य करने की क्षमता इत्यादि का निर्धारण सूर्य से ही होता है। केवल सूर्य को ही क्यों विशेष अनुकूल किया जाए? क्योंकि यदि आपके घर में एक दो हजार वाट का बल्ब जल रहा है और उसके पास साठ वाट का बल्ब जल रहा है तो केवल दो हजार वाट वाले बल्ब की ही रोशनी दिखाई देगी, छोटा बल्ब तो उसके प्रकाश में दब ही जाएगा। यदि सूर्य है तो पराक्रम है, यदि सूर्य है तो कार्यक्षमता है, यदि सूर्य है तो तेज है, सामाजिक प्रभाव है। सूर्य पुष्ट व्यक्ति सूर्य के समान ही तेजस्वी होता है।

इस वर्ष में आने वाले समय में सूर्य की संक्राति कौन सी दिनांक को पड़ेगी यह स्पष्ट किया जा रहा है।

१४ जून २००० – मिथुन संक्रांति
१६ जुलाई २००० – कर्क संक्रांति
१६ अगस्त २०००– सिंह संक्राति
१६ सितम्बर २००० – कन्या संक्रांति
१७ अक्टूबर २००० – तुला संक्रांति
१६ नवम्बर २००० – वृश्चिक संक्रांति
१५ दिसम्बर २००० – धनु संक्रांति
१४ जनवरी २००१ – मकर संक्रांति

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

१२ फरवरी २००१ – कुंभ संक्रांति

१४ मार्च २००१ – मीन संक्रांति

ऊपर दी गई तिथियों से पृथ्वी और सूर्य की परिक्रमा भ्रमण का सम्बन्ध होता है। इनमें से कई तारीखों में एक दिन पहले सायं काल के पश्चात रात्रि में भी संक्रांति परिवर्तन हो रहा है, पर साधक के लिए सूर्योदय से ही संक्रांति से सम्बन्धित साधना करना उचित है।

उदाहरण स्वरूप दिनांक १४ जून को मिथुन संक्रांति आ रही है अर्थात १४ जून को सूर्य मिथुन राशि में प्रवेश करेगा। मिथुन राशि द्वारा शरीर के कंधों भुजाओं इत्यादि का अध्ययन किया जाता है। मिथुन राशि का स्वामी बुध है। अब साधक संक्रांति में क्या करे? क्या वह अपनी राशि के स्वामी ग्रह की साधना करे अथवा मिथुन राशि के स्वामी बुध की साधना करे अथवा केवल सूर्य की साधना करे? उसके लिए बड़ी ही विभ्रम की स्थिति आ जाती है, उसके लिए आवश्यक है कि वह संक्रांति काल के दौरान एक विशेष साधना सम्पन्न करे अर्थात १४ जून को मिथुन, उसके स्वामी बुध, अपने राशि के स्वामी तथा सूर्य की सम्न्वित एक विशेष साधना सम्पन्न करे जो उसके लिए पूरे महिने को अनुकूल कर सके।

इस बार १६ अगस्त बुधवार २००० को पड़ने वाली सिंह संक्रांति के सम्बन्ध में विशेष विवरण दिया जा रहा है।

सूर्य स्वयं सिंह राशि का स्वामी है और १६ अगस्त से सिंह संक्रांति प्रारम्भ हो रही है अर्थात सूर्य सिंह राशि में प्रवेश कर रहा है सूर्य अपनी ही राशि में भ्रमण करता हुआ अत्यन्त ही प्रभावशाली होता है इस दिन सिंह संक्रांति साधना सम्पन्न करने से सूर्य तत्व जाग्रत होता है साथ ही आप अपने जीवन में सूर्य जो कि उग्रता तेज, स्वाभिमान कार्यक्षमता का कारक ग्रह है उसकी साधना अवश्य सम्पन्न करें, सूर्य का प्रभाव अन्य सभी ग्रहों पर अवश्य पड़ता है और यदि कोई ग्रह प्रतिकूल भी है तो सूर्य के तेज से वह ग्रह शांत हो जाता है।

सिंह संक्रांति सूर्य साधना विधान

इस साधना १६ अगस्त को ही प्रारम्भ करना है और १५ सितम्बर को सम्पन्न करना है पूरे एक महीने साधना करना उचित है। इस साधना हेतु **'आदित्य संक्रांति यंत्र'**, **'तेजस गुटिका'** एवं **'सफेद हकीक माला'** आवश्यक है साधना काल सूर्योदय के समय ही रहेगा।

प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में उठकर स्नान कर शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण कर अपने सामने एक चौकी पर श्वेत वस्त्र बिछाकर उस पर चावलों से नवग्रह चक्र बनाकर प्रत्येक खाने में उस ग्रह के प्रतीक स्वरूप एक-एक सुपारी स्थापित करें सूर्य के खाने में सूर्य यंत्र, तेजस गुटिका स्थापित करे दोनों हाथ जोड़कर सूर्य का ध्यान करें –

बु	शु	चं
गु	र	मं
के	श	रा

पद्मासनः पद्मकरो द्विबाहुः पद्मद्युतिः सप्त तुरंगवाहनः
दिवाकरो लोकगुरुः किरीटी मयि प्रसादं विदधातु देवः।

विनियोग –

ॐ आकृष्णेति मंत्रस्य हिरण्यस्तूपाङ्गिरस ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

अब अपने हाथ में जल लेकर विशेष संकल्प करें गुरुपूजन सम्पन्न कर सूर्य साधना हेतु मंत्र जप प्रारम्भ करें सबसे पहले पूर्ण सबीज मंत्र ११ बार करे उसके पश्चात एक माला सूर्य गायत्री मंत्र और एक माला तांत्रोक्त सूर्य मंत्र सम्पन्न करें

सूर्य सबीज मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतंमर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवोयाति भुवनानि पश्यन् ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः ह्रौं ह्रीं ह्रां ॐ सूर्याय नमः॥

सूर्य गायत्री मंत्र –

॥ ॐ आदित्याय विद्महे दिवाकराय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्॥

तांत्रोक्त सूर्य मंत्र –

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः

इस प्रकार इस मंत्र जप के पश्चात एक तांबे के लोटे में जल लेकर यंत्र के साथ स्थापित **तेजस गुटिका** को उस जल में डाल दें और सूर्य की ओर मुंह कर सूर्य का दर्शन करते हुए वह जल का अर्घ्य सूर्य देव को अर्पित करें जल अर्पण करते समय लोटे के ऊपर इस प्रकार से हाथ रखे कि केवल जल ही अर्पण हो तेजस गुटिका लोटे के भीतर ही रहे अन्त में प्रार्थना करें –

ग्रहाणामादिरादित्यो लोककरलक्षणकारकः।
विषमस्थानसम्भूतां पीड़ांदहतु मे रविः॥

हे सूर्यदेव आप आदित्य देव है विजय देव है मेरे जीवन की पीड़ा समाप्त करें। यह प्रयोग पूरे ३० दिन करना है तीस दिन पश्चात यंत्र और गुटिका अपने परिवार के सभी सदस्यो के सिर पर स्पर्श कराकर पीपल वृक्ष में अर्पित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट – 290/-

प्रत्येक साधना निःशुल्क

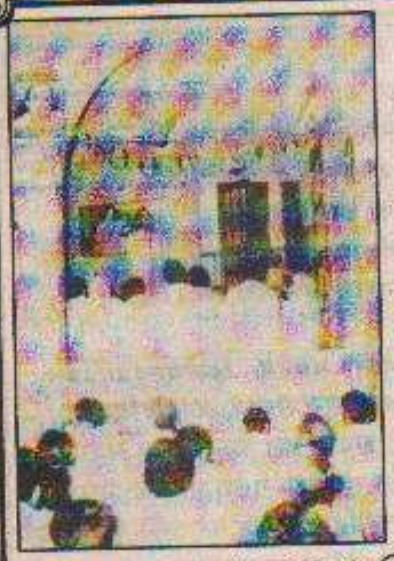

गुरुधाम दिल्ली

जिस भूमि पर सैकड़ों प्रयोग और असंख्य दीक्षाएं सम्पन्न हो चुकी हैं, उस सिद्ध चैतन्य दिव्य भूमि– पर ये दिव्य साधनात्मक प्रयोग

समस्त साधकों एवं शिष्यों के लिए यह योजना प्रारम्भ हुई है, इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों पर दिल्ली 'सिद्धाश्रम' में पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में ये साधनाएं पूर्ण विधि–विधान के साथ सम्पन्न कराई जाती हैं, जो कि उस दिन शाम 7 से 9 बजे के बीच सम्पन्न होती हैं और यदि श्रद्धा व विश्वास हो, तो उसी दिन से साधना सिद्धि का अनुभव भी होने लगता है।

साधना में भाग लेने वाले साधक को यंत्र, पूजन सामग्री आदि संस्था द्वारा निःशुल्क उपलब्ध होगी (धोती, दुपट्टा और पंचपात्र अपने साथ में लावें या न हो तो यहां से प्राप्त कर लें)।

21.7.2000 शुक्रवार — **आत्म सम्मोहन प्रयोग**

सम्मोहन एक ऐसा विज्ञान है, जिसके द्वारा किसी अन्य व्यक्ति को नहीं वरन स्वयं को भी सम्मोहित किया जा सकता है। आत्म सम्मोहन साधना का एक ऐसा पक्ष है, जिसके द्वारा अपने मन को वश में करके, सम्मोहित कर साधक उसे सही पथ पर गतिशील कर सकता है।

१. यदि साधना में आपका मन एकाग्र नहीं हो पाता,
२. यदि आपका किसी काम में मन नहीं लगता हो,
३. यदि आपका मन पढ़ाई में नहीं लगता हो,
४. यदि आप में आत्म विश्वास की कमी है,
५. यदि आपको क्रोध बहुत अधिक आता है,
६. यदि आप में किसी प्रकार की कोई हीन भावना है या किसी अन्य प्रकार का मनो रोग है,

तो इन सभी का उपाय है – आत्म सम्मोहन।

इन तीनों दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे

1. आप अपने किन्हीं दो मित्रों अथवा स्वजनों को (जो पत्रिका के सदस्य नहीं हैं) मंत्र–तंत्र–यंत्र विज्ञान पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर दिल्ली गुरुधाम में सम्पन्न होने वाले किसी एक प्रयोग में भाग ले सकते हैं। पत्रिका की सदस्यता का एक वर्षीय शुल्क रु. 225/– है, परन्तु आपको मात्र रु. 438/– ही जमा कराने हैं। प्रयोग से सम्बन्धित विशेष मंत्र सिद्ध, प्राण–प्रतिष्ठित सामग्री (यंत्र, गुटिका आदि) आपको निःशुल्क प्रदान की जाएगी।
2. यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं तथा अपने किसी एक मित्र के लिए पत्रिका वार्षिक सदस्यता प्राप्त कर उपरोक्त किसी साधना में भाग ले सकते हैं।
3. पत्रिका सदस्य बनाकर आप किसी एक परिवार को ऋषि परम्परा की इस पावन साधनात्मक ज्ञान धारा से जोड़कर एक पुनीत एवं पुण्यदायी कार्य करते हैं। यदि आपके प्रयास से एक परिवार में अथवा कुछ प्राणियों में ईश्वरीय चिन्तन, साधनात्मक चिन्तन आ जाता है, तो यह आपके जीवन की सफलता का ही प्रतीक है। उपरोक्त प्रयोग तो सर्वथा निःशुल्क हैं और गुरु कृपा द्वारा ही वरदान स्वरूप साधक को प्राप्त होते हैं। प्रयोगों की न्यौछावर राशि को अर्थ के तराजू में नहीं तौल सकते।

फोटो द्वारा 'बगलामुखी दीक्षा' केवल ९१ से ९३ जुलाई को ही

आप चाहें तो निर्धारित दिवसों से पूर्व ही अपना फोटो एवं न्यौछावर राशि का बैंक ड्राफ्ट ('मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' के नाम से) भेजकर भी इन दिवसों पर होने वाली दीक्षा को प्राप्त कर सकते हैं। आपका फोटो एवं पांच सदस्यों के पते दिल्ली कार्यालय को समय पर प्राप्त हो सकें, इस हेतु आप अपना पत्र स्पीड-पोस्ट द्वारा ही भेजें। पत्र विलम्ब से मिलने पर दीक्षा सम्पन्न न हो सकेगी।

22.7.2000 शनिवार पूर्व जन्म दोष शमन साधना

वर्तमान में जब व्यक्ति सुकर्म करने के उपरान्त भी अनेक प्रकार के कष्ट और दुःख आदि भोगता है, तब उसका विश्वास ईश्वर के प्रति और गुरु के प्रति हिलने लगता है। इसके विपरीत दूसरी आनन्द और मस्ती के साथ जीवन व्यतीत करता है। इन सबका कारण पूर्व जन्मों में ही छिपा होता है। इस साधना द्वारा न केवल पिछले कई जन्मों को साधक देखने में सफल होता है, अपितु उन कर्म दोषों का शमन भी इसी साधना द्वारा संयुक्त रूप से हो जाता है। इस साधना के बाद ही साधक को सिद्धि सम्भव हो पाती है।

23.7.2000 रविवार साबर धनदा प्रयोग

अन्य साधनाओं की अपेक्षा साबर साधनाओं के बारे में मान्यता है, कि वे शीघ्रता से सफल हो जाती हैं। इसका मूल कारण यह होता है, कि उनमें अधिक विधि विधान, कर्मकाण्ड की जटिलता न होकर मंत्र की तेजस्विता ही मूल तत्व है। व्याकरण की दृष्टि से देखा जाए, तो साबर मंत्र बड़े ही अजीब और बे सिर पैर के लगते हैं, परन्तु उन मंत्रों के एक-एक अक्षर में इतनी तीव्रता होती है, कि उनके प्रभाव को देखकर साधक स्वयं भी हैरान रह जाता है। साबर पद्धति से प्रयोग किए जाने के पश्चात साधक के दुर्भाग्य को पीछे हटना ही पड़ता है। नाथ सम्प्रदाय के योगियों की यह परम्परा रही है, कि वे किसी के आगे हाथ नहीं फैलाते हैं, वे अपनी आवश्यकताओं को अपने साधनात्मक बल से प्राप्त करने में विश्वास करते हैं। यह साबर धनदा प्रयोग ऐसे ही नाथ योगियों की एक पद्धति है, जिसके माध्यम से लक्ष्मी और अटूट लक्ष्मी साधक को उपलब्ध होती है। ऐसा नाथ योगियों का प्रत्यक्ष अनुभव है।

गुरुधाम में दीक्षा व साधना का महत्व

शास्त्रों में वर्णन आता है, कि मन्दिर में मंत्र जाप किया जाए तो अति उत्तम होता है, उससे भी अधिक पुण्यदायी होता है यदि नदी के किनारे करें, उससे भी अधिक समुद्र तट, और उससे भी अधिक पर्वत में करें तो, और पर्वत में भी यदि हिमालय में किया जाए, तो और भी कई गुना श्रेष्ठ होता है। इन सबसे भी श्रेष्ठ होता है यदि साधक गुरु चरणों में बैठकर साधना सम्पन्न करे। और यदि गुरुदेव अपने आश्रम अर्थात् गुरुधाम में ही यह साधना प्रदान करें, तो इससे बड़ा सौभाग्य और कुछ होता ही नहीं!

कुछ ऐसे स्थान होते हैं, जहां दिव्य शक्तियों का वास सदैव रहता ही है। जो सद्गुरु होते हैं, वे सूक्ष्म रूप से अथवा सशरीर प्रतिपल अपने धाम में अवस्थित रहते हुए प्रत्येक गतिविधि का सूक्ष्म रूप से संचालन करते ही रहते हैं। इसलिए यदि शिष्य गुरुधाम में पहुंच कर गुरु से साधना, मंत्र एवं दीक्षा प्राप्त करता है और गुरु चरणों का स्पर्श कर उनकी आज्ञा से साधना प्रारम्भ करता है, तो उसके सौभाग्य से देवगण भी ईर्ष्या करते हैं।

तीर्थ स्थल पुण्यप्रद हैं पर शिष्य अथवा साधक के लिए सभी तीर्थों से भी पावन तीर्थ गुरुधाम होता है। जिस धाम में सद्गुरुदेव का निवास स्थान रहा हो, ऐसे दिव्य स्थान पर गुरु चरणों में उपस्थित होकर गुरु मुख से मंत्र प्राप्त करने की इच्छा ही साधक में तब उत्पन्न होती है, जब उसके सत्कर्म जागृत होते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए साधकों के लाभार्थ गुरुदेव की व्यस्तता के बावजूद भी दिल्ली गुरुधाम में तीन दिवसों की साधनात्मक प्रयोगों की श्रृंखला निर्धारित की गई है।

- दीक्षा आज के युग में एक प्रामाणिक उपाय है सफलता की ऊंचाइयों को प्राप्त कर लेने का, जीवन के अभाव को, अधूरेपन को दूर कर देने का, जीवन में अतुलनीय बल, साहस, पौरुष एवं शौर्य प्राप्त कर लेने का, साधना में सिद्धि प्राप्त कर लेने का . . .
- गुरु प्रदत्त शक्तिपात द्वारा शिष्य जिस कार्य हेतु वह दीक्षा प्राप्त करता है, उसमें निपुणता प्राप्त कर लेता है, क्योंकि वह सफलता और श्रेष्ठता प्राप्त करने का एक लघु उपाय है . . .
- दीक्षा में भाग लेने वाले सभी साधकों का जल से अमृत अभिषेक करने के उपरान्त विशेष शक्तिपात प्रदान किया जाएगा। यह दीक्षा इन तीनों दिवसों को सायं ७ बजे प्रदान की जाएगी। दीक्षा के उपरान्त एक उपयोगी मंत्र प्रदान किया जाएगा।

योजना केवल इन ३ दिनों के लिये
किन्हीं पांच व्यक्तियों
को वार्षिक सदस्य बनाकर
उनके नाम पते लिखवा कर
उपहार स्वरूप ये दीक्षा आप
निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं

शक्तिपात युक्त दीक्षाएं

बगलामुखी दीक्षा

225x5
=Rs.1125/-

यदि जीवन है तो जीवन भी हजार-हजार बाधाओं से भरा हुआ है, न चाहते हुए भी हमारे जीवन में शत्रु हैं, बाधाएं हैं, अड़चनें हैं, कठिनाइयां हैं, समस्याएं हैं। हम भूख से लड़ रहे हैं, हम गरीबी से लड़ रहे हैं, हम व्यापार की न्यूनता से लड़ रहे हैं, और चाहें या न चाहें तो भी हमारे शत्रु मारने के लिए तत्पर हैं, उनसे हम भयतीत हैं, फिर आखिर कौन सा रास्ता है जिसके माध्यम से हम निर्भीक रह सकें? शत्रु मानसिक भी हो सकते हैं, जो मन में चिन्ता, तनाव, परेशानी, बाधा व अड़चनें पैदा करते हों। शत्रु ऐसे भी हो सकते हैं – रोग, दुःख, पीड़ा, दारिद्रय देते हों और शत्रु भौतिक भी हो सकते हैं, ऐसी प्रत्येक स्थिति में एक मात्र – केवल एक मात्र उपाय बगलामुखी दीक्षा साधना है।

सम्पर्क : सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली – 34, फोन : 011–7182248, टेली फैक्स : 011–7196700

राहुम् आराधयेत् बुधः

ग्रहराज राहु के प्रसन्न होने पर धन-धान्य यश और प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

राहु और आपका जीवन

सामान्य जन जीवन में व्यक्ति की स्थिति खराब होने पर कहावत रूप में कहा जाता है कि इसको तो राहु लग गया है। इस कहावत का कारण यह है कि राहु मूलतः छाया ग्रह है और जिस प्रकार कोई व्यक्ति अपनी छाया से मुक्त नहीं हो सकता उसी प्रकार राहु जिस स्थान पर होता है वहां अपना पूर्ण प्रभाव अवश्य छोड़ता है। अंग्रेजी में इसे ड्रेगन्स हेड कहा गया है। ड्रेगन का तात्पर्य है लपलपाता हुआ बड़ा सर्प। इस छाया ग्रह का प्रभाव प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में अवश्य पड़ता है, जिस प्रकार ग्रहों में चन्द्रमा, बुध, शुक्र, केतु, बृहस्पति क्रम अनुसार शुभ ग्रह माने गये हैं, उसी प्रकार सूर्य, मंगल, शनि और राहु अधिकाधिक पाप ग्रह माने गये हैं। अर्थात सूर्य से मंगल अधिक पाप ग्रह, मंगल से शनि और शनि से अधिक राहु पाप ग्रह है।

यह तो निश्चित तथ्य है कि ग्रहों का जीवन पर प्रभाव अवश्य ही पड़ता है, इसलिए योग्य ज्योतिषी कुण्डली में शुभ ग्रहों की अपेक्षा पाप ग्रहों का विवेचन पहले करते हैं। मनुष्य जीवन शुभ है, इसमें इन चार विशेष ग्रहों का कितना प्रभाव पड़ेगा और ये चार ग्रह जीवन में किस प्रकार की विपरीत स्थितियां उत्पन्न करेंगे उस सम्बन्ध में विशेष विवेचन आवश्यक है। जीवन की आकस्मिक घटनाओं और समय-समय पर आने वाली रुकावटों को जीवन यात्रा में पड़ाव कहा गया है जिनसे जीवन की गति बदल जाती है।

राहु को सर्वाधिक पाप ग्रह माना गया है तो इसका प्रभाव भी दूषित अवश्य ही होता है। मूलतः राहु ग्रह परिश्रम, शक्ति, हिम्मत, साहस, शौर्य, पापकर्म, व्यय, शत्रुता, विलासिता, चिन्ता, दुर्भाग्य, संकट के अलावा आकस्मिक धन, राजनीति, उच्च पद, विदेश यात्रा और तीक्ष्ण बुद्धि का भी कारक ग्रह है।

आकस्मिकता राहु का विशेष गुण है, किसी कार्य को अचानक गति प्राप्त होना और किसी कार्य का अचानक गतिहीन हो जाना राहु प्रभाव का सूचक है जिसके कारण व्यक्ति घबराहट तथा असमंजस का शिकार होता है। राहु ग्रह प्रचण्डता, उत्तेजना, आवेश को भी प्रगट करता है।

छाया ग्रह होने के कारण यह अपूर्ण इच्छाओं और भ्रमित बुद्धि का प्रतिनिधित्व करता है, इस कारण इसका प्रत्येक दृष्टि से विवेचन आवश्यक है। स्त्रीलिंग ग्रह होने के कारण इसके प्रभाव से व्यक्ति में निम्न विचार, अवसर वादिता, क्रूरता आती है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह जन्म कुण्डली में जिस भाव में होता है उस भाव की वृद्धि में अवरोध उत्पन्न अवश्य करता है। आगे राहु के प्रत्येक भाव में स्थितिगत प्रभाव का विवरण दिया जा रहा है। वैसे राहु ग्रह छठे, आठवें भाव में श्रेष्ठ फल देता है क्योंकि छठे भाव द्वारा शत्रु, चिंता, भय, रोग का अध्ययन किया जाता है और आठवें भाव द्वारा आयु, मानसिक व्यथा, मृत्यु, ऋण आदि का अध्ययन किया जाता है। इन भावों में स्थित होकर अथवा इन भावों पर राहु की दृष्टि होने पर भी वह इन भावों के प्रभाव को क्षीण कर देता है।

जिसके जन्म लग्न में राहु होता है वह शत्रुओं का नाश करने वाला तथा स्वार्थी स्वभाव का होता है। ऐसा व्यक्ति किसी के संरक्षण में स्वतंत्रतापूर्वक कार्य करने में असमर्थ होता है। ऐसा व्यक्ति अल्पसंतान वाला, मस्तिष्क रोगी, नीच कर्म में तत्पर, दुर्बल तथा संसार से विरक्ति रखने वाला होता है।

दूसरे स्थान पर यदि राहु हो तो कुटुम्ब का नाश करने वाला होता है। झूठ बोलने वाला, कुटुभाषी तथा निर्भय स्वभाव का ऐसा व्यक्ति धन की वृद्धि और रक्षा करने वाला होता है। इसकी मृत्यु शस्त्रादि से हो सकती है। यह जातक अल्प सम्पत्ति वाला, परदेशगमन प्रिय, संग्रहशील तथा शत्रुओं का विनाश करने वाला होता है।

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

जिसके तीसरे स्थान में राहु हो वह व्यक्ति अत्यन्त बलिष्ठ होता है। ऐसा व्यक्ति दृढ़, विवेकयुक्त, प्रवासी, दुःखों का विनाश करने वाला, विद्वान एवं व्यवसायी होता है।

चौथे स्थान में पड़ा हुआ राहु माता को हानि पहुंचाता है, पर यदि चतुर्थ भाव मेष, कर्क, कन्या और मिथुन राशि का हो और उसमें राहु पड़ा हो तो श्रेष्ठ फल देता है। ऐसा व्यक्ति क्रूर स्वभाव वाला, उदर-रोगी, अल्पभाषी तथा असन्तोषी होता है।

जिसके पांचवें स्थान में राहु होता है, उसे पुत्र-प्राप्ति होती रहती है। इसकी स्त्री हमेशा बीमार रहती है, अतः उस ओर से यह चिंतित ही रहता है। ऐसा व्यक्ति मतिमन्द, कुल-धन नाशक, भाग्यवान, कार्यकर्ता तथा शास्त्रप्रिय होता है।

छठे स्थान का राहु विधर्मियों द्वारा लाभ उठाता है। बलवान, धैर्यवान तथा वीर्यवान होता हुआ भी ऐसा व्यक्ति कमर दर्द से पीड़ित रहता है। यह जातक बड़े-बड़े कार्य करनेवाला, अरिष्टनाशक, पराक्रमी एवं शत्रुओं का विनाश करनेवाला होता है।

जिसके सातवें स्थान में राहु हो वह एक से अधिक विवाह करता है। उसका अन्तःकरण अग्नि के समान सदा प्रज्वलित रहता है। लोग उसकी निन्दा करते नहीं थकते, चाहे वह कितना ही अच्छा काम क्यों न करे। इसे व्यापार से हानि पहुंचती है। यह भ्रमणशील, वात रोगी, दुष्कर्म करनेवाला, चतुर, लोभी एवं बुरे आचार वाला होता है।

आठवें स्थान में राहु वाला व्यक्ति कठोर परिश्रमी होता है। उदर में वायुगोले तथा रक्तगुल्म आदि की बीमारियां उसे सदैव रहती है। इसे पिता की सम्पति प्राप्त नहीं होती तथा कुटुम्बियों से एकान्तवास करता है। विद्वानों तथा बुद्धिमानों में इसकी प्रशंसा होती है। ऐसा नर पुष्टदेही, गुप्तरोगी, बकवाद करने वाला, कामी स्वभाव का होता है।

जिसके नवें भाव में राहु होता है, वह अपने सद्गुणों से सबको प्रसन्न रखता है। तीर्थों आदि का प्रेमी तथा दयालु स्वभाव का यह जातक अपने कुटुम्ब का कुशलता से पालन-पोषण करता है। ऐसा व्यक्ति वात-रोगी, प्रवासी, परिश्रमी, दुष्ट बुद्धि तथा भाग्योदय से रहित होता है।

दसवें स्थान में पड़ा हुआ राहु मनुष्य को नीच कर्मरत बना देता है। वह व्यसनों का शौकीन तथा क्रूर कार्य करने में तत्पर रहता है। बुरे व्यक्तियों की मित्रता करने से जाति तथा समाज में इसको आदर नहीं मिलता। ऐसा व्यक्ति सुन्दर स्त्रियों का भोग करने वाला, वाचाल, अनियमित कार्यकर्ता, सन्तति क्लेशी तथा मितव्ययी होता है, परन्तु यदि इस भाव में राहु चन्द्रमा के साथ पड़ा हो तो राजयोग बनता है।

यदि राहु ग्यारहवें स्थान पर हो, तो उस पुरुष को सदैव नीच कार्य वाले लोगों से द्रव्य प्राप्ति होती है। नौकरी के साथ भ्रमण करने वाला यह व्यक्ति परिजनों का साथ छोड़कर धूर्तों से मित्रता रखता है। पुत्रों का सुख इसे प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति मन्दमति, लाभहीन, परिश्रम करने वाला, अरिष्टनाशक, तथा अपने कार्य में चौकन्ना रहने वाला होता है।

बारहवें स्थान में यदि राहु हो तो वह व्यक्ति पसलियों के दर्द से पीड़ित रहता है। उद्योग करने पर भी ऐसे व्यक्ति के कार्य सिद्ध नहीं होते। सज्जनों से विरोध रखता हुआ यह व्यक्ति दुष्टों से मित्रता रखता है। ऐसा जातक विवेकहीन, मतिमन्द, परिश्रमी, फ़िजूल खर्च करने वाला, चिन्ताशील एवं कामी होता है।

राहु का श्रेष्ठ प्रभाव होने पर व्यक्ति उच्च पद, शत्रुओं पर विजय, राजनीति में सफलता अवश्य ही प्राप्त करता है। इसके साथ ही राहु साधना, ध्यान का भी प्रभावी कारक ग्रह है। राहु की अनुकूलता से ही व्यक्ति इष्ट सिद्धि प्राप्त कर सकता है। राहु जब व्यक्ति को गति प्रदान करता है तो वह जीवन में किसी भी प्रकार से सफलता प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील हो जाता है। राहु व्यक्ति को निश्चय का पक्का बना देता है, उसका यही लक्ष्य रहता है कि जीवन में किसी भी प्रकार से सफलता प्राप्त कर ली जाए, चाहे उसके लिए कोई भी मार्ग क्यों न अपनाना पड़े। राजनीति में राहु के प्रभाव से ही विशेष सफलता प्राप्त होती है।

राहु और काल सर्प योग

जन्म कुण्डली में यदि राहु लग्न से छठे घर के बीच और केतु सातवें से बारहवें भाव के बीच हो और उनके मध्य सारे ग्रह स्थित हो तो यह काल सर्प योग कहलाता है। सामान्यतः कालसर्प योग को अत्यन्त खराब बताया गया है लेकिन वास्तव में स्थिति विपरीत है। कालसर्प योग वाला व्यक्ति जीवन में अचानक लाभ प्राप्त करता है। उसके जीवन में आकस्मिक स्थितियां बनती रहती हैं और वह धन लाभ, श्रेष्ठ अधिकार प्राप्त करता ही है। इसी कारण यह प्रभाव चालिस से अड़तालीस साल की उम्र में विशेष रूप से देखा जाता है। कालसर्प योग होने से आकस्मिकता की स्थिति विशेष रूप से अवश्य रहती है। विशेष घटनाएं घटित

होती रहती हैं, इसलिए अज्ञात भय बना रहता है।

मूलतः प्रभावी राहु ग्रह श्रेष्ठ योग अवश्य बनाता है, इस कारण राहु को अनुकूल बना लेना आवश्यक है। आगे राहु से सम्बन्धित दो विशेष साधनाएं दी जा रही हैं। राहु का प्रभाव रोग नाश के लिए और शत्रुनाश के लिए विशेष प्रभावकारी रहता है और ये दोनों साधनाएं इसी से सम्बन्धित हैं।

१. रोगनाशार्थ राहु प्रयोग

नौ ग्रहों में राहु एक मात्र ऐसा ग्रह है, जो मानव जीवन के समस्त रोगों को शांत एवं समाप्त करने में सक्षम है, चाहे वह रोग किसी भी वजह से हुआ हो, चाहे किसी भी प्रकार की ग्रह बाधा हो, और चाहे दैविक अथवा भौतिक किसी भी प्रकार का रोग हो, राहु प्रयोग से वह रोग समाप्त हो सकता है।

इस प्रयोग को रोगी स्वयं कर सकता है, या घर का कोई सदस्य किसी अन्य के लिए भी यह प्रयोग कर सकता है, दिखने में भले ही यह प्रयोग सामान्य प्रतीत हो, पर पत्रिका पाठकों के लिए यह प्रयोग वरदान स्वरूप है, और इस प्रयोग से वह किसी भी प्रकार के रोग का शमन कर सकता है।

बुखार, हार्ट अटैक, ब्लड प्रेशर, डायबिटीज, शरीर फूलना, मोटापा होना, आंखों की रोशनी का कमजोर होना, पेशाब से सम्बन्धित रोग, गर्भाशय से सम्बन्धित रोग आदि सभी प्रकार के रोगों का उपाय इस राहु प्रयोग से सम्पन्न किया जा सकता है।

और यह स्पष्ट है, कि इस प्रकार का प्रयोग सम्पन्न करने से आने वाली विपत्ति, बाधाएं, और बीमारियां पहले से ही समाप्त हो जाती हैं, एक प्रकार से देखा जाय तो यह आने वाले अशुभ समय को नियंत्रण में लेने का प्रयोग है। इससे बाल रक्षा तो होती ही है, यदि बालक बीमार हो या कमजोर हो, या किसी प्रकार की उसे तकलीफ हो, तो उसके लिए भी यह प्रयोग सम्पन्न किया जा सकता है।

साधना प्रयोग

इस साधना प्रयोग में **राहु महायंत्र** की आवश्यकता होती है, जो कि रोग शमनार्थ मृत्युंजयी मंत्रों से सिद्ध होना चाहिए, इसके अलावा **राहु माला** की आवश्यकता होती है।

प्रयोग करते समय यदि साधक स्वयं के लिए यह प्रयोग सम्पन्न करे, तो खुद का नाम उच्चारण करे या किसी अन्य के लिए या परिवार के किसी सदस्य के लिए यह प्रयोग सम्पन्न करे तो उसका नाम उच्चारण करे।

इस प्रयोग में मात्र एक माला मंत्र जप आवश्यक है, इसके अलावा यदि तेल का दीपक लगाया जाय तो उचित है, साधक सबसे पहले हाथ में जल लेकर संकल्प करे कि मैं अमुक गोत्र, अमुक नाम का साधक अमुक व्यक्ति के लिए अमुक प्रकार के रोग को समाप्त करने के लिए यह प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूं।

फिर हाथ में काले तिल और एक पीला पुष्प लेकर रोगी पर सात बार घुमायें और सामने वह सामग्री किसी पात्र में रख दें, इसके बाद निम्न मंत्र की एक माला अर्थात १०८ बार उच्चारण करें।

इसके बाद पुनः वह सामग्री रोगी पर सात बार घुमायें, और बाद में उसे जहां तीन रास्ते मिलते हो, वहां फिकवा दें, या गड़वा दें।

इस प्रकार यह प्रयोग समाप्त होता है, परन्तु जिस दिन यह प्रयोग समाप्त होता है, उसी दिन से रोगी को आराम मिलना प्रारम्भ हो जाता है, यदि साधक उचित समझे तो उसी रोगी पर यह प्रयोग तीन चार बार भी कर सकता है, पर एक दिन में एक बार ही प्रयोग करना चाहिए।

राहु महामंत्र

॥ ॐ क्लीं क्लीं रोग नाशाय राहवे क्लीं क्लीं फट् ॥

उपरोक्त मंत्र की एक माला ही जप पर्याप्त है, जब प्रयोग सम्पन्न हो जाय तब यह माला और महायंत्र घर में कहीं पर किसी भी स्थान पर रख सकते हैं और अगली बार फिर इस माला और इस महायंत्र का प्रयोग किया जा सकता है। वस्तुतः यह प्रयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण है और इस प्रयोग को पुरुष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकता है तथा दिन या रात्रि को कभी भी सम्पन्न किया जा सकता है, इसके लिए आसन, दिशा आदि की कोई व्यवस्था नहीं है, साधक किसी भी प्रकार के आसन पर किसी भी दिशा की ओर मुंह कर बैठ सकता है।

साधना सामग्री पैकेट – 230/-

२. शत्रुमर्दन राहु प्रयोग

जीवन को तिल-तिल करके जीना नरक के समान है एक भी शत्रु जीवन को विषाक्त बनाने के लिए काफी है इसलिए निरन्तर ऐसा प्रयास करना चाहिए कि हमारे सामने शत्रु आकर छाती तानकर खड़ा हो जाए उससे पहले हम सतर्क हो जाएं चाहे वह रोग रूपी शत्रु हो या और कोई शत्रु हो, क्योंकि आज समाज में अकारण ही स्वार्थ के वशीभूत होकर जीवन के किसी भी मोड़ पर आप पर शत्रु आघात कर सकता है। इसलिए

अपनी सुरक्षा के लिए प्रयास करते रहना चाहिए। यह राहु प्रयोग इसलिए आपके लिए दिया जा रहा है क्योंकि इस प्रयोग के बाद कितना भी दुर्दान्त शत्रु हो उसकी पराजय निश्चित है। इस प्रयोग को अर्जुन ने सम्पन्न किया था महाभारत शुरु होने से पहले। इसीलिए भगवान कृष्ण के संरक्षण में अजय योद्धा बना रहा। आप भी इस प्रयोग के माध्यम से सतर्क विजय हो सकते हैं।

प्रयोग सामग्री है प्राण प्रतिष्ठित **महाकाल राहु यंत्र, शत्रुमर्दिनी गुटिका** तथा **शत्रुहन्ता माला**। यह रात्रिकालीन ग्यारह दिवसीय प्रयोग है, रात्रि को स्नान आदि करके शुद्ध वस्त्र पहन लें पश्चिम की ओर मुख करके लाल आसन पर बैठें। सामने चौकी पर लाल आसन बिछा दें, एक सुन्दर सा आशीर्वाद युक्त गुरु चित्र स्थापित करें, अगरबती और तेल का दीपक जला लें, दीपक को अपनी बायें और रखें, पंचपात्र में जल लेकर पवीत्रीकरण और आचमन करें, दोनों हाथ जोड़कर भगवान विष्णु का पहले स्मरण करें।

नित्यं स्मरामि भवभीतिहरं प्रसन्नं
नारायणं जरुडवाहन मञ्जनाभम् / ग्राहाभिभूत वर
वारण मुक्ति हेतुं
चक्रायुधं तरुण वारिज पत्र नेत्रम।

इसके बाद पूज्य गुरुदेव का स्मरण करें तथा निम्न मंत्र का उच्चारण करें –

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः

इसके बाद सभी ग्रहों का हाथ जोड़कर स्मरण करें –

ब्रह्मा मुरारी त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमि सुतो बुधश्च गुरुश्च
शुक्रः शनिः राहु केतवः सर्वे ग्रहाः शांति करा भवन्तु।

सामने चौकी पर बिछे हुए वस्त्र पर साबुत काली उड़द से राहु ग्रह का चिन्ह बनाकर U सके ऊपर ग्रह राज राहु के प्राण प्रतिष्ठित यंत्र को स्थापित करें और उसके ऊपर गुटिका रखें, दाहिने हाथ में जल लेकर विनियोग करें।

ॐ अस्य श्री राहु मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः पंक्तिं छन्दः राहु देवता,
रां बीजं, वेशः शक्तिः श्री राहु प्रीतये जपे विनियोगः

जल को भूमि पर छोड़ दें।

ऋषि न्यास

ॐ ब्रह्म ऋषये नमः शिरसि – दाहिने हाथ से सिर को स्पर्श करें।

ॐ पंक्ति छन्दसे नमः मुखे – मुख का स्पर्श करें।

ॐ राहु देवतायै नमः हृदि – हृदय का स्पर्श करें

ॐ रां बीजायै नमः गुह्ये – गुप्त अंग का स्पर्श करें।

इसके बाद हाथ धो लें।

ॐ वेशः शक्तये नमः पादयोः – दोनों पैरों का स्पर्श करें।

करन्यास –

ॐ रां अनुष्ठाभ्यां नमः। ॐ रां तर्जनीभ्यां नमः
ॐ रां मध्याभ्यां नमः। ॐ रां अनामिकाभ्यां नमः
ॐ रां कनिष्ठिकायां नमः। ॐ रां करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः
ॐ रां नेत्र त्रयाय वौषट्। ॐ रां अस्त्राय फट्।

ध्यान

दोनों हाथ जोड़कर ग्रह राज राहु देव का ध्यान करें–

वन्दे राहुं धूम्र वर्णं अर्धकायं कृतांजलिं
विकृतास्यं रक्त नेत्रं धूम्रालंकार मन्वहम्।

इसके बाद यंत्र का कुंकुम, अक्षत, धूप, दीप और पुष्प से पंचोपचार पूजन करें, फिर निम्न मंत्र का **शत्रुहन्ता माला** से एक माला मंत्र जप करें –

मंत्र

॥ ॐ रां राहवे शत्रुमर्दनाय फट्॥

मंत्र जप के बाद निम्न **राहु** स्तोत्र का एक पाठ करें।

राहुर्दानवमंत्री च सिंहिकाचित्तनन्दनः।
अर्धकायः सदा क्रोधी चन्द्रादित्य विमर्दनः ॥१॥
रौद्रो रुद्रप्रियो दैत्यः स्वर्भानु र्भानुभीतिदः।
ग्रहराज सुधापायी राकातिथ्यभिलाषुकः ॥२॥
कालदृष्टिः कालरूपः श्री कण्ठहृदयाश्रयः।
विधुंतुद सैंहिकेयो घोररूपो महाबलः ॥३॥
ग्रहपीड़ाकरो दंष्ट्री रक्तनेत्रो महोदरः।
पञ्चविंशति नामानि स्मृत्वा राहुं सदानरः ॥४॥
यः पठेन्महती पीड़ा तस्य नश्यति केवलम्।
आरोग्यं पुत्रमतुलां श्रियं धान्यं पशूंस्तथा ॥५॥
ददाति राहुस्तस्मै यः पठेत स्तोत्र मुत्तमम्।
सततं पठते वस्तु जीवेद्वर्षशतं नरः ॥६॥

इसके बाद शत्रु विजय सिद्धि के लिए अंत में पूर्ण हाथ जोड़कर प्रार्थना करें। इस साधना को किसी भी दिन मंगलवार, शनिवार रात्रि को शुरु करें। यह प्रामाणिक साधना है, और इस साधना को ११ बार सम्पन्न करना है। साधना समाप्ति के बाद सभी सामग्री को काले वस्त्र में बाधकर किसी नदी, तालाब या समुद्र में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट – 300/-

एक दृष्टि में:

साधना शिविर एवं दीक्षा समारोह

14-15-16 जुलाई 2000 इलाहाबाद

गुरु पूर्णिमा साधना शिविर

स्थान: के. पी. इन्टर कालेज मैदान एम. जी. रोड़ इलाहाबाद

सम्पर्क: ✻ श्री एस. के. मिश्रा 0532-501551 ✻ वासुदेव पाण्डे 0511-220011 ✻ डा. प्रमोद कुमार यादव 0532-636029 ✻ ओम प्रकाश श्रीमाली 0532-407092 ✻ आर. पी. शर्मा 609596 ✻ ऐ. के. शर्मा 440792

22-23 जुलाई 2000 मुम्बई

दस महाविद्या साधना शिविर

स्थान: आजीवासन हॉल, एस. एन. डी. टी. वुमेन्स कालेज के पास जुहूतारा रोड, सान्ताकुज पश्चिम मुम्बई

सम्पर्क: ✻ सतीश मिश्रा 8050323 ✻ गनेश सिंह 4313992 ✻ चन्द्रकमलानी 4929090 ✻ हरिशंकर पाण्डे 8862409 ✻ भास्करन 911-604702 ✻ किर्ती भाई 912-412166 ✻ अशोक भाई 4963617 ✻ कल्पेश भाई 8189684

30 जुलाई 2000 अहमदाबाद

शिव गणेश लक्ष्मी साधना शिविर

स्थान: श्रीमाली ब्राह्मण जयंती हाल महालक्ष्मी चार रस्ता परिमल क्रोसिंग के पास पालड़ी अहमदाबाद – 7

सम्पर्क: ✻ सुन्दरेश अय्यर 079-6756106 ✻ परेश भाई सुथार 2831053 ✻ दिलीप भाई सुथार 5323069 ✻ जगदीश पटेल ✻ कनुभाई प्रजापति मेहसाणा

6 अगस्त 2000 लुधियाना (पंजाब)

शिव-शक्ति साधना शिविर

स्थान: दयानन्द मुन्जाल आंडीटोरियम नजदीक केम्पा कोला चौक स्कूटर मार्केट लुधियाना पंजाब

सम्पर्क: राजेश खन्ना 0161-538959, 497042 मोहिन्दर सिंह 0161-492177 धर्मपाल 0161-500312 केवल कृष्ण 0161-546143 हरजोत 0161- 477513 मदनसैनी

13 अगस्त 2000 भुसावल, (महाराष्ट्र)

बगलामुखी साधना शिविर

स्थान:

सम्पर्क: ✻ राजेन्द्र सिंह बुडवल 02582-24169 ✻ रामेश्वर जोशी 02582-25672 ✻ मकरन्द भावे 02582-25702 ✻ आर. आर. पाटील 62545 ✻ प्रमोद पाटील 02582-75306 ✻ जयंती भाई पटेल 0257-212073 ✻ दिलीप मोतीरमाणी 0257-227055 ✻ डॉ. प्रवीण रावली 02596-43265

22 अगस्त 2000 सहारनपुर

बगलामुखी अष्ट महालक्ष्मी साधना शिविर

स्थान: वैश्य अग्रवाल धर्मशाला गऊशाला रोड़ निकट कुल खुशरान सहारनपुर

सम्पर्क: अनिल कुमार गुप्ता 0132-612180, सीताराम अग्रवाल 0132-761187 आशुतोष वर्मा 0132-711271 आर. के. शर्मा, मांगेराम, रामपाल सिंह, ईश्वर सिंह, पवन सिंह, चेतराम, अनिल नन्दवानी देहरादून 0135-671245 डॉ. अरुणा चौबे 010360-50058

9-10 सितम्बर 2000 कोटा राजस्थान

दस महाविद्या विश्वशांति महायज्ञ शिविर

स्थान: श्रीराम मंदिर, रेलवे स्टेशन के पास कोटा राजस्थान

सम्पर्क: ✻ सुभाष शर्मा 0744-461739 ✻ विष्णु प्रसाद शर्मा 0744-441240 ✻ ओ. पी. श्रीवास्तव 0744-320447 ✻ अशोक कुमार अग्रवाल 0744-321210 ✻ किशोरी लाल माणिक 0744-451033 ✻ राजेन्द्र खण्डेलवाल 0744-432249 ✻ रामप्रसाद खण्डेलवाल 07453-31409 ✻ नाथू लाल नागर 07453-30140 ✻ धर्म सिंह मीणा 07469-32231 ✻ बी. के. अग्रवाल 0562-280032 ✻ जया शर्मा 0562-358381

साधक, पाठक कृपया ध्यान दें

आपकी यह प्रिय पत्रिका 'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' अत्यन्त गतिशील होती है अर्थात् यह अंक जून का है, तो इसमें जुलाई एवं अगस्त मास की साधना तथा प्रयोग दिये जाते हैं।

ऐसा क्यों? इसलिए, कि साधनाओं के लिए यंत्र, उपकरण आदि की आवश्यकता होती है, जो मंत्र सिद्ध हों प्राणचेतना युक्त हों। आपकी सुविधा के लिए पोस्टकार्ड पत्रिका में संलग्न होता है, जिस पर कोई डाक व्यय नहीं देना होता।

पर आप सोचते रहते हैं और विलम्ब होता रहता है, फिर हड़बड़ी में आप ऐन टाइम पर पोस्टकार्ड भेजते हैं, जो समय पर नहीं पहुंच पाता और आप उस साधना से वंचित रह जाते हैं।

क्योंकि आपका पोस्टकार्ड हम तक पहुंचने में 15–20 दिन का समय लग जाता है फिर सुरक्षित पैकिंग व भेजने में 7–8 दिन का समय लगता है तथा आप तक वी.पी.पी. पहुंचने में 20–25 दिन लग जाते हैं, इस सारी प्रक्रिया में 50–55 दिन, अर्थात् दो महीने लग जाते हैं, फलस्वरूप विलम्ब से पोस्टकार्ड भेजने से यह साधना मुहूर्त निकल जाता है और उस साधना से आप वंचित रह जाते हैं।

इसलिए यदि आपको केन्द्र से ही मंत्र सिद्ध सामग्री मंगानी है, तो बिना हीला-हवाला किये, तुरन्त पोस्टकार्ड भर कर भेज देना चाहिए, जिससे कि समय पर सामग्री प्राप्त हो सके।

सुविधा आप जोधपुर टेलीफोन नं – 0291–432209 अथवा टेलीफैक्स नं. 0291–432010 से भी सामग्री का आदेश दे सकते हैं। (मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नवीनतम अंक में प्रकाशित नियमों के अन्तर्गत)

ध्यान दें – आप सामग्री या दीक्षा से सम्बन्धित सभी ड्राफ्ट 'मंत्र शक्ति केन्द्र' के नाम से ही भेजें।

यदि आप 60 रु. से कम की सामग्री मंगवाते हैं तो आप सामग्री मूल्य तथा 20 रु. वी. पी. पी. शुल्क जोड़ कर सम्पूर्ण राशि भेज दें।

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES
FIND ALL AT HTTPS://DSC.GG/DHARMA
Made with
By
Avinash/Shashi
[creator of
hinduism
server]
KAPWING

रजिस्ट्रेशन नं० 35305/81
with Registrar Newspapers of India

A.H.W.

पोस्टल नं० RJ/WR/19/65/2000
Licence to Post without Pre payment
postal Licence No - RJ/WR/RP04/2000

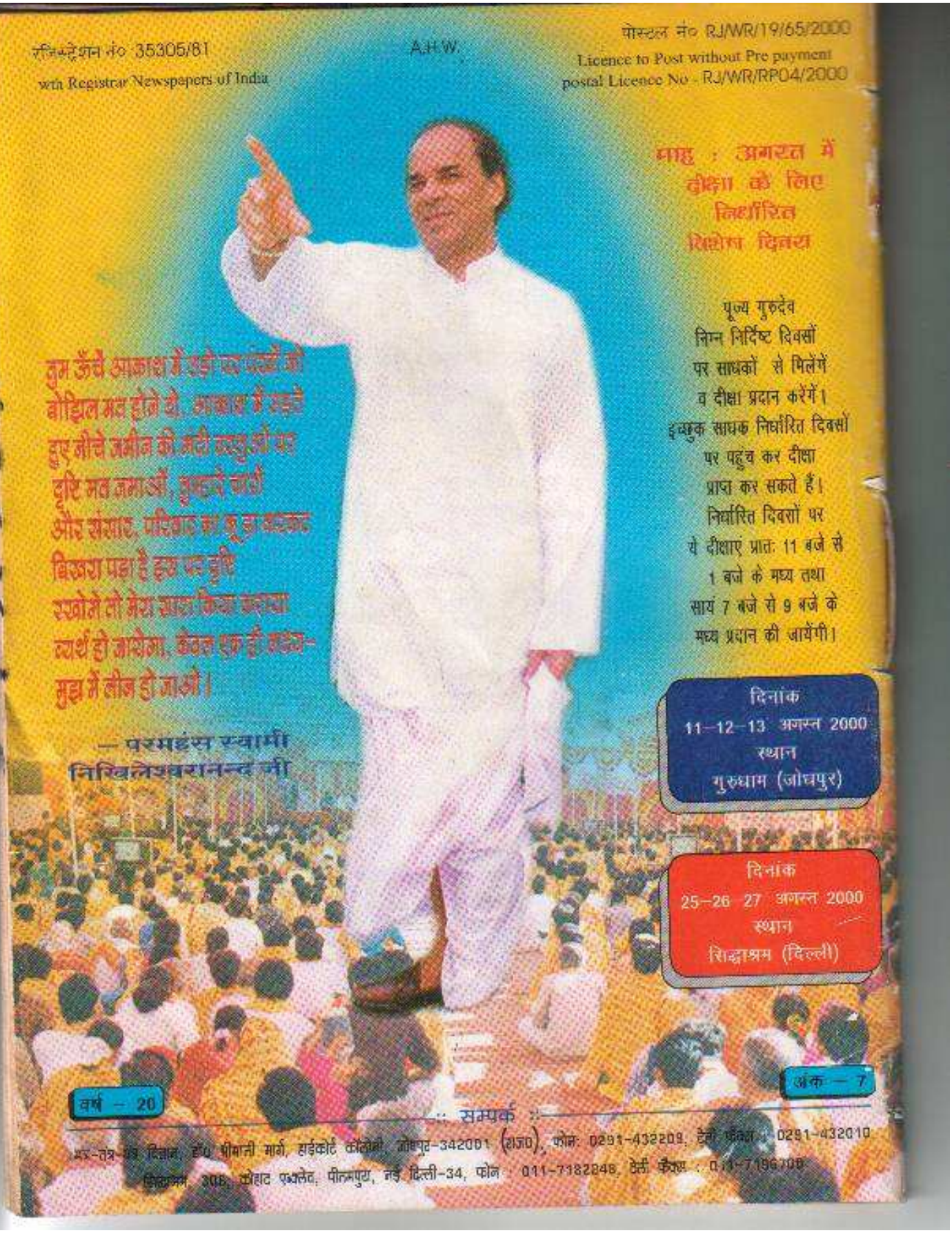

माह : अगस्त में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

पूज्य गुरुदेव निम्न निर्दिष्ट दिवसों पर साधकों से मिलेंगें व दीक्षा प्रदान करेंगें। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं। निर्धारित दिवसों पर ये दीक्षाएं प्रातः 11 बजे से 1 बजे के मध्य तथा सायं 7 बजे से 9 बजे के मध्य प्रदान की जायेंगी।

तुम ऊँचे आकाश में उड़ते पक्षियों को बोझिल मत होने दो, आकाश में रहते हुए नीचे जमीन की नदी वस्तुओं पर दृष्टि मत जमाओ, तुम्हारे पांव और संसार, परिवार का धूल-धक्कड़ बिखरा पड़ा है इस पर दृष्टि रखोगे तो मेरा आना किया कराया व्यर्थ हो जायेगा, केवल एक ही लक्ष्य-मुझ में लीन हो जाओ।

— परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी

दिनांक
11–12–13 अगस्त 2000
स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)

दिनांक
25–26–27 अगस्त 2000
स्थान
सिद्धाश्रम (दिल्ली)

वर्ष – 20

अंक – 7

:: सम्पर्क ::
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० भोगनी मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज०), फोन: 0291-432209, टेली फैक्स : 0291-432010
सिद्धाश्रम, 306, ओहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-7182248, टेली फैक्स : 011-7196700